VISHVA–JYOTI R. N. NO. 1/ 57 ISSN 0505-7523
REGD. NO. PB-HSP-01
CURRENCY PERIOD: (1.1.2018 TO 31.12.2020)

६७,१-२ Peered Reviewed: U.G.C. Approved Journal अप्रैल-मई २०१८

विश्वज्योति

पंजाब में रचित राम-साहित्य विशेषांक (भाग-१)

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होश्यारपुर

एक प्रति का मूल्य : २५ रुपये

पद्मभूषण आचार्य डा. विश्वबन्धु जी

(30-09-1897-01-08-1973)

आद्य सम्पादक

विश्वज्योति

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होश्यारपुर

संस्थापक–सम्पादक :

स्व. पद्मभूषण आचार्य (डॉ.) विश्वबन्धु

सम्पादक:

प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल
(सञ्चालक)

उप–सम्पादक :

डॉ. देवराज शर्मा

परामर्शक–मण्डल :

डॉ. दर्शनसिंह निर्वैर
होश्यारपुर

डॉ. (श्रीमती) कमल आनन्द
चण्डीगढ़

डॉ. जगदीशप्रसाद सेमवाल
होश्यारपुर

डॉ. (सुश्री) रेणू कपिला
पटियाला

शुल्क की दरें

आजीवन (भारत में)	:	१२०० रु.	आजीवन (विदेश में)	:	३०० डालर
वार्षिक (भारत में)	:	१०० रु.	वार्षिक (विदेश में)	:	३० डालर
सामान्य अङ्क (भारत में)	:	१० रु.	सामान्य अङ्क (विदेश में)	:	३ डालर
विशेषाङ्क (एक भाग भारत में)	:	२५ रु.	विशेषाङ्क (एक भाग विदेश में)	:	६ डालर

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, साधु आश्रम,
होश्यारपुर–146 021 (पंजाब, भारत)

दूरभाष : कार्यालय : 01882-223581, 223582, 223606
सञ्चालक (निवास) : 01882-244750, प्रैस : 231353

E-mail : vvr_institute@yahoo.co.in
Website : www.vvrinstitute.com

विषय-सूची

लेखक	विषय	विधा	पृष्ठांक
डॉ. मनमोहन सहगल	पंजाब में उपलब्ध राम-काव्य तथा कवि रत्नहरिकृत 'राम-रहस्य'	लेख	२
प्रो. (डॉ.) सुखदेव सिंह मिन्हास	पंजाब का राम-साहित्य	लेख	११
डॉ. देवराज शर्मा	श्री रामलुभाया आनंद 'दिलशाद' कृत पंजाबी रामायण में सीता-परित्याग	लेख	१९
डॉ. निर्मल कौशिक	पं. गुलाब सिंह निर्मला विरचित अध्यात्म रामायण	लेख	२४
डॉ. गीता शर्मा	पंजाबरचित राम-साहित्य का समाज पर प्रभाव	लेख	२९
डॉ. सविता सचदेवा	कवि कृष्णलाल कृत रामचरित: एक वैशिष्ट्य	लेख	३३
डॉ. विनोद कुमार	बृहत् पंजाब में रचित राम-साहित्य के प्रमुख स्वर	लेख	३६
डॉ. सलोनी	दशमगुरु श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी द्वारा रचित रामावतार में भ्रातृप्रेम	लेख	४१
डॉ. सुनीला शर्मा	पंजाबरचित राम-साहित्य में श्रीराम का मर्यादित चरित्र व उसका समाज पर प्रभाव	लेख	४६
सुश्री अमनप्रीत कौर	रामलुभाया आनंद 'दिलशाद' कृत पंजाबी रामायण में राम का चरित्र	लेख	४८
सुश्री आभा प्रभाकर	पंजाब में रचित रामकाव्य	लेख	५१
डॉ. बलराज शर्मा	नागरी तथा गुरुमुखी लिपियों में पंजाब में रचित रामकाव्य	लेख	५४
प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल	दशम गुरु गोविन्द सिंह रचित रामावतार काव्य	लेख	६४
	संस्थान-समाचार		६८
	विविध-समाचार		७१
	पुण्य-पृष्ठ		७३

विश्वज्योति

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥ (ऋ. १,११३,१)

वर्ष ६७ | होश्यारपुर, चैत्र-वैशाख २०७५; अप्रैल-मई २०१८ | संख्या १-२

यद्विद्वांसो यदविद्वांस
एनांसि चकृमा वयम्
यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत
विश्वे देवाः सजोषसः ।।

(अथर्व. ६.११५.१)

(यह सत्य है कि) हमने (विद्वांसः) जानते हुए (भी और) (अविद्वांसः) न जानते हुए (भी अनेक) (एनांसि) पाप कर्म (चकृमा) किए हैं। (सजोषसः विश्वेदेवाः) हे परस्पर मिले हुए सब देवताओ! (यूयं) तुम (नः) हमें उस अपराध से (मुञ्चत) मुक्त करो।

(वेदसार-विश्वबन्धुः)

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः।।

(कठोपनिषद्, २.२.११)

पंजाब में उपलब्ध राम-काव्य तथा कवि रत्नहरिकृत 'राम-रहस्य'

— डॉ. मनमोहन सहगल

मध्यकालीन पंजाब में उपलब्ध समूचा हिन्दी राम-काव्य गुरुमुखी लिपि में विरचित है। उस युग के कवि यद्यपि ब्रज को ही उपयुक्त काव्य-भाषा मानते थे, तथापि गुरु-परम्परा से प्रभावित होने के कारण लेखन-माध्यम के तौर पर गुरुमुखी लिपि को ही अपनाते थे। उक्त रचना के आज तक अस्पृष्ट एवं अज्ञात रहने का मुख्य कारण भी यही विरोधाभास है- गुरुमुखी जानने वाले बीसवीं-इक्कीसवीं सदियों के विद्वान् ब्रजभाषा से अभिज्ञ नहीं थे और हिन्दी-जगत् के लोग गुरुमुखी नहीं जानते थे। परिणामतः क्योंकि गुरुमुखी-लिपि के जानकारों के लिए उक्त रचना ब्रजभाषा या हिन्दी की थी और हिन्दी साहित्येतिहासकारों के लिए पंजाबी की, विपुल मात्रा की यह समृद्ध रचना अछूती ही रह गई।

अत्याचारियों और आक्रमणकारियों के भारतदेश में प्रवेश करने का सिंह-द्वार होने के नाते पंजाब के जन-मानस के सम्मुख अलग प्रकार के काव्य-सृजन की समस्या थी। यहां के कवि की वाणी बसन्त-मल्हार न होकर शंखनाद फूंकती थी। अत्याचारी के दमन की प्रेरणा राम-चरित्र का मूलाधार थी- यही कारण था कि पंजाब का कवि कृष्ण-चरित्र की अपेक्षा राम-चरित्र से अधिक प्रभावित था और श्री राम उदात्त जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं का काव्यात्मक प्रचार-प्रसार करने में सर्वाग्र था। पंजाब में सोलहवीं से बीसवीं शती विक्रमी तक राम-चरित की अजस्र धारा बहती रही। कवियों ने उसमें प्रादेशिक रंग भरे, भक्ति-श्रद्धा भी अर्पित की और अभिव्यंजना की विभिन्न शैलियों की सज्जा से उसे अलंकृत भी किया। आज जब हम मध्यकालीन पंजाब में रचित रामकाव्य पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें एक समृद्ध, उच्चस्तरीय भावाभिव्यंजना युक्त बृहत् साहित्य-सामग्री के दर्शन होते हैं। यह सामग्री पंजाब के पुराने पुस्तकालयों में दीमक और धूल में लिपटी है- १. सैंट्रल स्टेट लायब्रेरी, पटियाला, २. भाषा विभाग पुस्तकालय, पटियाला, ३. मोतीबाग पुस्तकालय, पटियाला, ४. सिक्ख रैफ्रेंस लायब्रेरी, अमृतसर, ५. गुरुनानक देव विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय, अमृतसर, ६. खालसा कॉलेज पुस्तकालय, अमृतसर, ७. पंजाब एवं पंजाबी विश्वविद्यालयों के चण्डीगढ़ और पटियाला के पुस्तकालयों एवं कुछ विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रहों में उक्त सामग्री उपेक्षा की चादर ओढ़े पड़ी है।

पंजाब में उपलब्ध राम-काव्य की पाण्डुलिपियां अधिकांशतः संस्कृत के श्रेण्य ग्रन्थों पर आधारित हैं। इसका मूल कारण अपनी संस्कृति के प्रति लगाव और धारा से अबाध ऐक्य की कामना है, फिर चाहे प्रबोधचन्द्रोदय हो या

हनुमन्नाटक, वाल्मीकि रामायण हो या अध्यात्म रामायण, पद्मपुराण हो या श्रीमद्भागवत, सबका स्तर, सबका लक्ष्य और सबकी उमंग एक समान ही है। कवि उदासीन सम्प्रदाय का हो, निर्मला सिक्ख या ब्राह्मण, सबका लक्ष्य रामकाव्य से स्फूर्ति पाना और जागरण का आह्वान करना ही है। यहां तक कि स्वयं गुरु गोबिंद सिंह ने 'रामावतार' में इसी लक्ष्य को अपनाया और सफलतापूर्वक निभाया है। अन्य सबने न्यूनाधिक उनका अनुसरण किया है।

पंजाब के राम-काव्य में श्रद्धा-भक्ति का स्वर भी उक्त संस्कारों की ही देन है। कवि हरि सिंह की रचना 'आत्म रामायण' तथा युगलानन्य की रचना 'राम-नाम प्रताप प्रकाश' इस तथ्य के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। पंजाब का जन-मानस राम से इसीलिए परिचित है कि रकार की रेफ में तीनों देवता शक्तियों सहित विराजते हैं। उसे संघर्ष करना है और संघर्ष के लिए शक्ति चाहिए' जो रकार में विद्यमान है। राम सब जगह रमण करता है, सर्व-व्यापक है, इसी लिए राम है- और पंजाब के लोक-मानस को अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए हर कदम पर प्रेरणा और जागृति अपेक्षित है- वह राम से ही प्राप्त है।

पंजाबी कवि राम के नाम से निर्गुणी धारा की दिशा से भी जुड़ा है। इसलिए राम-काव्य का प्रणयन करते हुए उसमें निर्गुण-सगुण समन्वय की भावना जागृत प्रतीत होती है। तात्पर्य यह कि पंजाब में रचित राम-काव्य में श्रद्धा-भक्ति, निर्गुण-सगुण-समन्वय, अन्याय-अत्याचार के विरोध का स्वर, अनीति के विरुद्ध संघर्ष और भारतीय संस्कृति के माध्यम से सूर्य-साक्षात्कार की दिशाएं विशेष स्थान रखती हैं। 'राम' व्यक्ति, संस्था, संस्कार और धर्म के रूप में आदर्श के प्रतीक हैं, पंजाबी लोक-मानस इसी का दावेदार है।

उपलब्ध पाण्डुलिपियां- पंजाब के विभिन्न पुस्तकालयों एवं व्यक्तिगत संकलनों की खोजबीन के उपरांत ब्रजभाषा एवं गुरुमुखी लिपि में लिखित जो पाण्डुलिपियां राम-काव्य सम्बन्धी हमें उपलब्ध हो सकी हैं उनकी सूची निम्नानुसार है। सीमित कलेवर के कारण उनका लघु-परिचय भी यहां दे सकना सम्भव नहीं है।

	कवि	रचना	उपलब्धि स्थान	रचनाकाल
१	हिरदे राम भल्ला	हनुमन्नाटक	सैं. स्टे. ला., पटियाला (५३७,२२१९)	१६८० वि
२	सोढी मिहिरबान	आदि रामायण	भाषा विभाग लायब्रेरी, पटियाला (२)	सत्रहवीं शती वि.
३	कपूर चन्द त्रिखा	रामायण	सैं. स्टे. ला., पटियाला (२७९३)	१७०३ वि.
४.	गुरु गोबिंद सिंह	रामावतार	दशम-ग्रन्थान्तर्गत	१७५५ वि.
५.	कृष्णलाल	राम-चरित्र	सैं. स्टे. ला., पटियाला (५४५)	कवि गुरुजी का समकालीन
६.	साहिबदास	लव-कुश कथा	भा. वि. ला., पटियाला (१०२)	
७.	साहिबराय	रामायण पुराण	व्यक्तिगत संकलन, प्रो. प्रीतम सिंह	१७८१ वि.
८.	साधु गुलाब सिंह निर्मला	अध्यात्म रामायण	सैं. स्टे. ला., पटियाला (२५८१)	१८३९ वि.

पंजाब में उपलब्ध राम-काव्य तथा कवि रत्नहरिकृत 'राम-रहस्य'

	कवि	रचना	उपलब्धि स्थान	रचनाकाल
९	कवि रामदास	सार रामायण	सैं. स्टे. ला., पटियाला (२७४५)	१८६५ वि.
१०	सन्तसिंह	रामाश्वमेध	सैं. स्टे. ला., पटियाला (१९०२)	१८७७ वि.
११	कवि चन्द	रामायण	भा. वि. ला., पटियाला (३३९)	१८८२ वि.
१२	कवि हरिनाम	रामाश्वमेध	सैं. स्टे. ला., पटियाला (१८९४)	१८९७ वि.
१३	कवि हरिनाम	वाल्मीकि रामायण भाषा	सैं. स्टे. ला., पटियाला (१९१०)	१८९४ वि.
१४.	भाई सन्तोख सिंह	वाल्मीकि रामायण भाषा	सैं. स्टे. ला., पटियाला (२१६८, २५८३)	१८९१ वि.
१५.	कवि रत्नहरि	रघुवर पद रत्नावली	भा. वि. ला., पटियाला (३५६)	१८८५-१८९५ वि.
१६		रघुवर लीला		
१७		विनय बारही		
१८		राम-रहस्य	पंजाब विश्वविद्यालय ला, चण्डीगढ़ (११८)	१८९९ वि.
१९	व्याख्याकार हरिनाम	केशव कृत रामचन्द्रिका	सैं. स्टे. ला., पटियाला (१९०३)	१८९४ वि.
२०	बग्गा सिंह	राम कथा	प्रो. प्रीतम सिंह, व्यक्तिगत संग्रह	१८९७ वि.
२१	कवि हरि सिंह	आत्मरामायण	सैं. स्टे. ला., पटियाला (६१९)	उन्नीसवीं शती वि.
२२	बसावा सिंह	रामचरित्र रामायण	सैं. स्टे. ला., पटियाला (५४३)	१९०० वि. आसपास
२३	कवि निहाल सिंह	रामचन्द्रोदय	मोती बाग पुस्तकालय, पटियाला (१७)	१९०१ वि.
२४	कवि मोहर सिंह	रामगीत	भाषा. वि. पुस्त. पटियाला (३६६)	१९०७ आसपास
२५	बीर सिंह बल	सुधा सिंधु रामायण	मोतीबाग पु. पटियाला (१८)	१९०८ वि.
२६	कीरत सिंह	अनूप रामायण	वही (के. ७५-ए)	१९१७ वि.
२७	'' ''	कीरत रामायण	वही (११७)	
२८	'' ''	सतसैया रामायण	वही (११५)	
२९	गोपाल सिंह	विनय पत्रिका	गुरु रामदास ला. अमृतसर (२७१३)	?
३०	युगलानन्य	रामनाम-प्रताप-प्रकाश	भा. वि. पु. पटियाला (२३८)	?
३१	कवि रामसिंह	लघु रामायण	प्रो. प्रीतम सिंह, व्यक्तिगत	१९२४ वि.
३२	कवि चन्द्रहरि	रामायण पापखण्डिनी	पंजाब यूनि. पु. चण्डीगढ़ (५०९)	१९३१ वि.
३३	श्रीनिवास उदासी	सुखदायक रामायण	सिक्ख रैफ्रेंस ला. अमृतसर	१९७४ वि.

अनेक फुटकर रचनाएं भी इधर-उधर देखने में आई हैं। तुलसी-कृत 'मानस' के अनेक पंजाबी अनुवाद उपलब्ध हैं। 'रामगीता' नामक अलग-अलग प्रतियां सैं. स्टे. ला. (२५८१) तथा भाषा वि. ला. (२१) में रखी मिली हैं। 'योगवासिष्ठ' के कई अनुवाद हैं। अनेक रचनाएं विनष्ट अथवा गुम हो चुकी हैं। उपर्युक्त समस्त रचनाओं में काव्य-रुढ़ियों एवं अनेकधा कथात्मक समानताएं देखी जा सकती हैं।

अब हम राम-काव्य सम्बन्धी एक विशिष्ट पाण्डुलिपि का अध्ययन करेंगे। उपर्युक्त पाण्डुलिपियों की सूची में क्रमसंख्या अठारह पर हम कवि रत्नहरि कृत 'राम-रहस्य' की चर्चा कर चुके हैं। यहां हम उसी पाण्डुलिपि का सर्वांगीण

परिचय आपसे करवाएँगे।

राम-रहस्य/रत्नहरि कृत संवत् १८९९-

कवि-परिचय- महराजा रणजीत सिंह काल में पंजाब के प्रसिद्ध कवि रत्नहरि (रत्न सिंह) परम रामभक्त हुए हैं। प्रसिद्ध आचार्यकवि अमीरदास के छोटे भाई तथा उदासीन सम्प्रदाय में दीक्षित साधुस्वभाव रत्नहरि लाहौर के कपूर खत्री थे। पहले इनका नाम रत्न सिंह था, उदासीन दीक्षा पाने के बाद रत्नहरि लिखने लगे। बड़े भाई अमीर सिंह ज्ञानी कहलाते थे, वे भी दीक्षोपरांत अमीरदास लिखने लगे थे। श्री रत्नहरि का जन्म लाहौर में ही संवत् १८४८ वि. (सन् १७९१ ई.) में हुआ था, इनकी बाल्यावस्था में ही इनके माता-पिता काशी चले गए थे। वहीं दोनों भाइओं ने हिन्दी-संस्कृत, उर्दू-फारसी की उच्चशिक्षा प्राप्त की। अमीरदास अमृतसर चले आए थे, रत्नहरि शिक्षा पूर्ण करके उन्हीं के पास लौटे और वहां स्वामी ब्रह्मअचल से उदासीन दीक्षा ली। तदुपरांत साहित्य-केन्द्र, अमृतसर में रहते हुए अनेक सुन्दर ग्रंथों की रचना की। दोनों भाइयों ने मिलकर रणजीत सिंह युगीन पंजाब में हिन्दी-साहित्य रचना का नेतृत्व किया।

रत्नहरि अधिकांश समय अमृतसर में ही रहे। वहीं वे आदिग्रंथ, श्रीमद्भागवत, रामायण आदि का कथा-कीर्तन करते थे। महाराजा इनकी कीर्ति से प्रभावित होकर इन्हें लाहौर ले जाना चाहते थे, किन्तु निर्मोह-भाव से इन्होंने महाराजा का प्रस्ताव ठुकरा दिया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस तथ्य का उल्लेख अपनी 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्रिका में समाचार के तौर पर किया था-

नृपति रणजीत बहुत कह्यो तदपि नहिं दर्शन दियो।
भक्त रत्नहरि दास जी पावन अमृतसर कियो।।

रत्नहरि कुछ समय नाभा में भी आकर रहे। मथुरा-वृन्दावन, अयोध्या की यात्राएं भी इन्होंने कीं। कहते हैं, इनकी कुल ३५ रचनाएँ हैं, जिनमें पौराणिक, सिक्ख धर्म सम्बन्धी तथा फुटकर काव्य की रचनाएं शामिल हैं। रामकाव्य सम्बन्धी इनकी चार पुस्तकें पाण्डुलिपियों के रूप में उपलब्ध हो पाई हैं, जिनमें 'रघुवर पद रत्नावली', 'रघुवर लीला' 'विनय बारही' तथा 'राम-रहस्य' के नाम लिए जा सकते हैं। इनमें प्रथम तीन रचनाएं छोटी हैं और भाषा-विभाग पंजाब के पुस्तकालय की पाण्डुलिपि संख्या ३५६ पर मौजूद हैं, जबकि 'राम-रहस्य' एक विशाल प्रबन्ध रचना है और उसकी पाण्डुलिपि पंजाब विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय, चण्डीगढ़ की पाण्डुलिपि संख्या ११८ पर प्राप्त हुई है।

पाण्डुलिपि परिचय -

'राम-रहस्य' की रचना संवत् १८९९ वि. (सन् १८४२ ई.) में हुई। इसकी हस्तलिखित प्रति, जो संवत् १९०२ वि. में बनाई गई है, पंजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय, चण्डीगढ़ की हस्तलिखित संख्या ११८ पर मौजूद है। इसमें कुल ४७७ पत्रे हैं, जिन पर प्रति पृष्ठ १२ पंक्तियां हैं और लिखित परिमाण ५.५ × ३.५ का है। कवि ने स्कंदपुराण के राम-कथा वाले अंश को आधार बनाकर एक सुन्दर राम-काव्य का प्रणयन किया

है। यह एक बृहत् काव्य-ग्रंथ है, जिसमें कवि ने रामकथा के अतिरिक्त रामावतार के पौराणिक रहस्यों का भी उद्घाटन किया है। इसे पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध, दो खण्डों में विभक्त किया गया है। अन्त में प्रतिलिपि बनाए जाने की तिथि लिखी है। मूल रचना के मात्र तीन वर्ष बाद की प्रतिलिपि निश्चय ही अधिक प्रामाणिक कही जाएगी।

मूल रचना-काल - १८९९

संवत नव नव बस ससि सर सुभ दिवेस दिनेस।
फागुन वदि पूरन करयो राम-रहस्य रमेस।।२८।।

प्रतिलिपि काल -

संवत् दृग नभ नाथ ससि मघर वदि तिथ भान।
लवपुर दुग ढिग हेम को राजत सिव असथान।
तहां लिखयो अति प्रेम सों राम-रहस्य सुधार।
लिखवायो अति भाव धरि श्रीराम हरि सुखसार।।

यह पाण्डुलिपि मूल की प्रतिलिपि के तौर पर संवत् १९०२ में किसी श्रीराम ने लाहौर-दुर्ग के निकट रहते हुए तैयार करवाई। अन्तःसाक्ष्य से यह सिद्ध है। प्रस्तुत रचना में कवि ने अनेक नवोद्भावनाओं का उद्घाटन भी किया है। पौराणिक उद्भावनाओं के साथ-साथ कल्पित नवीनताएं भी कवि ने जोड़ी हैं। उदासीन सम्प्रदाय में दीक्षित होते हुए भी कहीं-कहीं अत्यन्त रसिक बनकर वह शृंगारिक छेड़छाड़ की ओर भी बढ़ता है। माधुर्यभाव का भक्त भी उसे कहा जा सकता है। काव्य में अभिव्यंजना रीति-युगानुकूल है, किन्तु म. तुलसीदास द्वारा स्थापित मर्यादा का उल्लंघन भी कर जाता है। कवि रसखान का प्रभाव भी काव्य में देखा जा सकता है। कवि श्रीराम के जल-विहार, हिंडोला-विहार, वन-विहार आदि के चित्र भी करता है। रसखान के श्रीकृष्ण की नाईं सखियों में श्रीराम का विचरण आकर्षक और मधुर बन पड़ा है।

मुनि जन गन जो ध्यान न पावा।
सो जुवितिनि इहिं भांति नचावा।
सिव विरंचि ध्यावत धर मौना।
कियो सखिन सो खेल खिलौना।१२/४०।

कवि ने श्रीराम-सीता के दाम्पत्य का भी बड़ा सलोना चित्र प्रस्तुत किया है। होली, तीज और झूला-विहार में श्रीराम-सीता की रोमानी चर्चा, दीपावली (राम-राज्यासीन होने के बाद) पर दोनों की द्यूत-क्रीड़ा तथा श्रीराम द्वारा वन में सिंह के शिकारादि की बातें भी कही गई हैं।

कथानक-

'राम-रहस्य' का कथानक दो भागों में विभाजित है-पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। कवि ने परम्परित राम-कथा को नहीं दोहराया। मुख्यतः इसमें श्रीराम की बाल-लीलाएं और उसके पश्चात् सीता और श्रीराम की विलास-लीलाएं चित्रित हैं। पूर्वार्द्ध में चारों बालकों में राम को विष्णु, लक्ष्मण को शेषनाग, भरत को चक्र एवं शत्रुघ्न को शंख का अवतार बताया गया है। पहले केकेयी विवाह-कथा को कवि ने सविस्तार बताया है और आगे चलकर रामाभिषेक में बाधा बनने वाली मंथरा के पूर्व जन्म का रहस्योद्घाटन भी किया है। राम की बाल-लीलाओं में वन-विहार, शिकार तथा अन्य क्रीड़ाओं में काग-भुसुंडी की कथा पर सविशेष बल दिया है। रत्नालिका और वीर सिंह की कथा कहते हुए कवि ने

संकेत किया है कि वे द्वापर में नन्द और यशोदा बनकर विष्णु अवतार श्रीकृष्ण को गोद खिलाने की कामना पूरी कर पाए।

कथानक के उत्तरार्द्ध के आरम्भ में कवि ने आचार्यत्व का परिचय दिया है। रसराज शृंगार की सांगोपांग व्याख्या के साथ-साथ कवि ने राग-रागिणियों और नृत्य के भेदोपभेदों का भी गहन परिचय प्रस्तुत किया है। मिथिला में जनक द्वारा हल चलाने और सीता-प्रकटीकरण की रहस्य-कथा कवि ने सविस्तार कही है। विश्वामित्र के द्वारा श्रीराम को लिवाने, सीता-स्वयंवर और राम-विवाह की घटनाएं कही गई हैं। विश्वामित्र की संगति में श्रीराम ने राक्षसवध किए, इसको महत्त्व न देते हुए कवि ने राम-विवाह में अधिक रुचि ली है। श्रीराम का गार्हस्थ्य चित्रण कवि रत्नहरि ने शायद पहली बार प्रस्तुत किया है। विवाह से लेकर वन-प्रस्थान तक के काल में राम-सीता का प्रेमल जीवन केवल इसी ग्रंथ में देखा गया है। हिंडोला-विहार, द्यूत-क्रीड़ा, जल-विहार, फाग आदि के उत्सवी माहौल को कवि ने बड़े रोचक ढंग से चित्रित किया है। श्रीराम और श्रीकृष्ण की अभेदता स्थापित करने में भी कवि ने सविशेष प्रयत्न किए हैं, नवीन उद्भावनाओं की मदद से कवि ने त्रेता और द्वापर में अवतरित उक्त दोनों महापुरुषों में ऐक्य दर्शाया है। परमात्मा के अस्तित्व, जीव, माया और भक्ति श्रद्धा पर भी कवि ने उत्तरार्द्ध में चर्चा की है। कवि ने उदासीन सम्प्रदाय में दीक्षा ली थी, उसी मत का दार्शनिक चिन्तन कवि ने यहां अंकित किया है।

'राम-रहस्य' नामक पाण्डुलिपि का नामकरण 'रामचरितमानस' के ढर्रे पर किया गया है। राम का रहस्य खोला गया है, इस ग्रंथ में। राम से सम्बद्ध और कथा में प्रासंगिक पात्रों के पूर्वजन्म तक के रहस्य भी कवि ने उद्घाटित किए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि राम-कथा न कहकर राम-सम्बन्धी रहस्यों का अनावरण कर रहा है। जैसे तुलसी-काव्य में राम-चरित्र रूपी मानसरोवर में पाठकों को पुण्य-प्रताप का स्नान करवाकर कौए से हंस बनाने की अभिलाषा निहित थी, वैसे ही रत्नहरि श्रीराम की मानव-कथा न कहकर युग-युगान्तर में विष्णु के रहस्यों को उद्घाटित करने को लक्ष्य कर रहे हैं।

भाषा- पाण्डुलिपि की भाषा शुद्ध व्रज है। निश्चय ही उदासीन सम्प्रदाय एवं गुरु-परम्परा में लेखन-साधन की दृष्टि से कवि ने गुरुमुखी लिपि का प्रयोग किया है। गुरुमुखी लिपि में निजी गुण-दोष तो हैं ही, अर्द्धाक्षर प्रयोग एवं उच्चारण-भेद की दिक्कत भी देखी जाती है।

ऐसे में कवि रत्नहरि ने तत्कालीन साहित्यिक भाषा-माध्यम ब्रज को विशुद्धतर रखने का प्रयास किया है। यथा-

इकटक चितवति रघुपति रूपा।
जिम चकोरि चय चंद अनूप।
कहति परसपरि कोकिल बैनी।
रामरूप मोहित म्रिग नैनी।।६.२७।।

इन पंक्तियों में व्रजभाषा के चमत्कार के साथ-साथ अलंकारयुत अभिव्यंजना दर्शनीय है। कवि की भाषा में सूक्तियों और लोकोक्तियों की विशेष छटा है। अलंकार तो भाषा-प्रयोग में सहज ही प्रकट हो जाते हैं। यथा, सूक्तियां-

१. रमै जु. परकन्या परनारि। सहै सुघोर नरक जम भारि।
२. जा घरि साधु न जाहि परम भागवत बिप्रवर।

ते मानहुँ मन मांहि ब्रिक स्रिगाल आलय सरिस।

३. तन धन जीवन जोवन जोई।
ब्रिथा जु पर उपकार न होई।
बिप्र संत सेवन नहिं कीना।
तिहिं नर जनम पाइ कहि लीना।।

लोकोक्ति -

१. जरै गात पै नोन दै करत मसखरी मोहिं।

काव्याभिव्यंजना - प्रस्तुत पंक्तियों में सूक्तियों-लोकोक्तियों का आकार तो उभरता ही है, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, उपमा और रूपक सरीखे अलंकार भी देखे जा सकते हैं। भाषा प्रसादगुण प्रधान तो है, तथापि कहीं कवि का ओज भी प्रकट हो जाता है। जैसे- **खंड्यो अखंड प्रचंड हरि कोदण्ड राम महाबली।**
धुनिं चंड अंड कटाह मंडित खंड खंड हलाचली।

काव्याभिव्यंजना की दृष्टि से 'राम-रहस्य' पंजाब में रचित अन्य रामकाव्य रचनाओं की तुलना में अनुपम है। शब्द-चयन, भावोद्रेक, चित्रात्मकता और भावशबलता एक साथ रत्नहरि की पंक्तियों में ही उभरता है। सलज्ज नायिका का सुरति-समय दिया बुझाने को कहने की सहजता जब अकस्मात् दीवारों और स्तम्भों में जड़ी मणियों की चमक और लश्क उसकी लज्जा को शतगुणित करती है, तो नायिका का बिदकना दूर की कौडी नहीं, सहजानुभव का सत्य कहा जाएगा-

सुरत समै लज्जित म्रिग नैनी।
दिया बढाइ देत बर बैनी।
खंभ खचित मनि निकरि निहारी।
बहुरि होत लज्जित अति भारी ।।२.२०।।

कवि स्त्री और पुरुष का सौंदर्य-चित्रण करने में भी सिद्धहस्त हैं। श्रीराम के पुरुष-सौंदर्य के अनेक शब्द-चित्र काव्य में देखे जा सकते हैं। सीता एवं अन्य स्त्रियों के हास-विलास एवं क्रीड़ा-विहार के शब्द चित्र बड़े ही हृदयस्पर्शी बने हैं-

लसी उरोजनि जल कनि राजी।
मानहु मुकतामाल विराजी।.......
रूप नीर नीरज नव नैना।
नाभि गंभीर भंवर छबि ऐना।
चक्रवाक जुग उरज उतंगा।
छिन छिन नव छवि तरल तरंगा।
तटिनि तीर तब सुखी सुनैनी।
गावतिं मिलि कोकिल कल बैनी।।

९/७६/२८।।

सामाजिक धरातल- 'राम-रहस्य' में काव्यात्मक सौंदर्य रचना को उत्तमकोटि की सिद्ध करता है,किन्तु रचना का वैचारिक स्तर भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कवि ने कविता कहने के साथ-साथ यथास्थान सामाजिक और दार्शनिक उद्भावनाओं को भी चिन्तन के स्तर पर देखा और परखा है। श्री राम और सीता के विवाह की चर्चा करते हुए ब्राह्म-विवाह की समस्त औपचारिकताओं का शब्द-चित्र प्रस्तुत करता है। पंजाब में विवाह का माहौल अन्य स्थानों से सांस्कृतिक दृष्टि से निश्चय ही भिन्न होता है। कवि ने यहां पंजाबी समाज और रीति-रिवाजों का आकर्षक चित्र रेखांकित किया है। फेरे, सिठ्टणियां, भोजन-व्यंजनादि और मनोरंजक रीति-रिवाजों के द्वारा कवि ने सामाजिक परिदृश्य में पंजाबी संस्कृति को

उजागर किया है-

बच्चे गेंद से खेलते हैं-

गगन उछारि गेंद गुन खानी।
आवत गहत हरख मन मानी।।

कथा-प्रसंग में पुत्र-कामना, पुत्रेष्टि यज्ञ, बालक के लिए रक्षा-कवच (तावीज़), पितृ-ऋण से उऋण होने की दशरथ की आशंसा आदि के चित्र तत्कालीन समाज की रीतियों का अंकन हो तो है। अनेक पर्वोत्सवों के वर्णन कवि ने किए हैं, जो पंजाब की सांस्कृतिक रिक्थ को उजागर करते हैं। गंगा दशहरा, गंगा-स्नान, नवमी, एकादशी आदि के उत्सवों में पति-पत्नी का हर्षोल्लास चित्रण करने में रत्नहरि को विशेष आनन्द मिलता है। फागु-क्रीड़ा सबसे प्यारा और स्त्री-पुरुष के लपट-झपट का पर्व है। कवि पुलक उठता है-

तब रघुबीर बिंहसि बर जोरी।
सीय सहिचरी सगल रंग बोरी।
सिय कर कमल कनिक पिचकारी।
गहि भिजये रघुबंस बिहारी।
तब दुति दौर रसिक रघुराई।
बरबस गही जनक निपजाई।
रंग कुंड गहिरे गहि बोरी।
बिहसे कहि हो हो हो होरी।।

चिन्तन-पक्ष-

अनेक दार्शनिक तत्त्वों पर भी कवि रत्नहरि ने 'राम रहस्य' में विचार किया है। सृष्टि-रचना की कथा कही है; माया, ईश्वरतत्त्व, देवता और गुरु की महिमा का गान भी हुआ है। कवि का दावा है कि गुरु के पथ-प्रदर्शन के अभाव में उद्धार सम्भव नहीं। जीवात्मा को सच्चे गुरु की शरण ग्रहण करनी ही चाहिए। कवि उदासीन मतावलम्बी है, इसलिए उसने ब्रह्म का स्वरूप निर्गुण-निराकार ही अंकित किया है। श्रीराम निर्गुण का ही स्वरूप है किन्तु भक्तों की पुकार सुनकर अपने को प्रकट करते हैं। ब्रह्म का स्वरूप कवि ने यों प्रकट किया है-

समुझि सनातन तत्त्वश्री, कोसलपाल कृपाल।।

तथा

तहि आपि निखिल निगम अवसाना।
परम पुरख श्रीराम प्रमाना।
सेवनीय स्रवनीय सदा ही।
माननीय मननीय महां ही।
परमानंद कंद गुन रासी।
धेय गेय सियबर अबिनासी।।

श्रीराम और श्रीकृष्ण के अवतारों के अलग युगों में प्रकट होने पर भी कवि उनमें अभेदता के दर्शन करता है और यथावसर अपने दावे को शब्दों में प्रकट भी करता है-

जो रघुनंदन सोई नंदनंदा।
उभै भेद भाखत मतिमंदा।
ज्यों रघुनंदन चरित अनंता।
तैसेई तासु सराहत संता।।

कवि राम-भक्त है। वह जानता है कि राम-नाम के जाप की अनुपस्थिति में कोई जीव प्रभु-

नैकट्य प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकता। तुलसीदास ने इस दिशा में दावा किया था-

राम-नाम रति, राम गति, राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल दुहुँ दिसि तुलसीदास।।

कवि रत्नहरि का अनुभव भी तुलसी से भिन्न नहीं है। राम-नाम में भक्ति अर्पण ही एक-मात्र उद्धार का साधन है, ऐसा सन्तों ने स्वीकार किया है। उन्हीं के कथनों को सम्मानित करते एवं उन्हीं के चरण-चिह्नों पर चलते हुए रत्नहरि का सन्देश भी यही है-

जो श्रीराम नाम नित कहहिं।
ते नर भुक्ति मुक्ति दोऊ लहही।
राम जपत उधरे नर नीचा।
गड़े बड़े जे कलिमल कीचा।
रामनाम सम जप जग नाही।
आगम निगम पुरान कहीही।

तात्पर्य यह कि रत्नहरि कृत 'राम-रहस्य' हिन्दी साहित्य के समस्त राम-काव्य से अलग है। उसने अलग से अपनी पहचान बनाई है। कथानक, लेखन-शैली, कथ्य, विवरण एवं राम-कथा के गोपनीय रहस्यों का उद्घाटन करने में 'राम-रहस्य' सबसे अलग है। कवि कथा न कहकर भी कथा कहता है, चिन्तनीय प्रस्तुति कहता है, सामाजिक सांस्कृतिक धरातल एवं दार्शनिक तात्विक स्तर पर रत्नहरि राम-काव्यकारों में अलग स्थान रखता है। कवि और उसकी रचना का गहन अध्ययन किसी भी शोध-ग्रंथ का विषय हो सकता है।

-२६३, अजीत नगर, पटियाला-१४७००१। मोबा: ९८१५६-५६१७१

सुहृदामर्थकृच्छ्रेषु युक्तं बुद्धिमता सदा।
समर्थो नोपसंदेष्टुं शाश्वतीं भूतिमिच्छता।

वा. रामा. युद्ध. १५.३३

लोक में रहते हुए जो व्यक्ति सचमुच अपने मित्र का भला चाहता है या सचमुच किसी को मित्र मानता है तो उसका सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह मित्र के ऊपर संकट आने पर यथाशक्ति उसकी सहायता करे या उस संकट से मुक्त होने का सही उपाय बतावे।

पंजाब का राम-साहित्य

– प्रो. (डॉ.) सुखदेव सिंह मिन्हास

आर्यधर्म के रक्षक, मानवता के सिन्धु, प्रजाप्राण लोकनायक श्रीराम भारत-भूमि के कण-कण में रमे हुए हैं। समय की विषम एवं दुराक्रांत स्थितियों ने श्रीराम को उत्पन्न किया, तब से लेकर हर युग के संक्रांति काल में उनका आदर्श और प्रेरक जीवन कवि-प्रतिभा के गर्भ से पुनः-पुनः अवतीर्ण होकर जनमानस को सत्पथ दिखलाता आ रहा है। यह माना जाता है कि आदिकवि महर्षि वाल्मीकि से अनेक शताब्दियों पूर्व ही रामकथा को लेकर आख्यान-काव्य की रचना होने लगी थी किन्तु रामायण को ही प्राचीनतम उपलब्ध रामकाव्य माना जाता है। अधिक समय तक मौखिक रूप में प्रचलित रहने के कारण इसका रूप स्थिर नहीं रह सका और रामकथा के प्रारम्भिक विकास के साथ-साथ इसमें परिवर्तन व परिवर्धन होता रहा।

रामकथा और रामकाव्य के नायक श्री राम के व्यक्तित्व में कितनी ऐतिहासिकता और कितनी कविकल्पना है, यह कहना अत्यंत कठिन है। परन्तु इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि वाल्मीकि के महाकाव्य 'रामायण' ने ही सर्वप्रथम महामानव राम को लोकनायकत्व प्रदान किया। श्री राम का जो गौरवपूर्ण चरित्र आज जग-विख्यात है, उसका श्रेय वाल्मीकि को ही जाता है। उनके रामकाव्य की परम्परा को जयदेव, कालिदास और तुलसीदास आदि महान् कवियों ने आगे बढ़ाने का कार्य किया। उन्होंने वाल्मीकि रामायण की ही कथावस्तु का अपनी-अपनी शैली में उपयोग कर रामोपख्यान प्रस्तुत किए। रामकथा ने प्रत्येक साहित्यकार को प्रभावित किया है। इसलिए आज विश्व की लगभग प्रत्येक भाषा में रामकथा उपलब्ध है। विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं का प्रथम महाकाव्य या सर्वाधिक महाकाव्य ग्रन्थ प्रायः रामायण ही है। भारत के प्रत्येक प्रान्त में रामकथा किसी न किसी रूप में प्रचलित है। भारत की प्रत्येक भाषा में रामकथा से सम्बंधित साहित्य किसी न किसी रूप में उपलब्ध है। प्रत्येक प्रदेश के साहित्यकारों ने अपनी संस्कृति और सोच के अनुरूप रामकथा को नवीन उद्भावनाओं से सुसज्जित किया है। अहिन्दी भाषी प्रान्त पंजाब भी इस दिशा में किसी से पीछे नहीं है। हिंदी और गुरुमुखी लिपि में रामकथा से सम्बंधित अनेक रचनाएँ पंजाब में उपलब्ध हैं और उन्हीं का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास प्रस्तुत आलेख का मंतव्य है।

पंजाब की स्थिति देश के शेष भागों से अलग थी। अत्याचारियों के राष्ट्र-प्रवेश का सिंहद्वार होने के नाते पंजाब के जनमानस के सम्मुख समस्या अधिक विकट थी। इसलिए यहां के कवि की वाणी वसंत-मल्हार न होकर शंखनाद फूंकती थी। अत्याचारी के दमन की प्रेरणा राम-चरित्र का मूल थी। यही कारण था कि पंजाब का कवि कृष्ण-चरित की अपेक्षा राम-चरित से अधिक प्रभावित था और राम के

उदात्त-जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का काव्यात्मक प्रचार-प्रसार करने में सर्वज्ञ था। पंजाब में पंद्रहवीं-सोलहवीं शतियों से ही राम-काव्य की चर्चा होने लगी थी, जो धीरे-धीरे प्रचारित होती हुई बीसवीं शती विक्रमी तक अनेक राम-काव्यों में ढलती चली गई। कवियों ने उनमें प्रादेशिक रंग भरे, भक्ति श्रद्धा अर्पित की और अभिव्यंजना की विविध शैलियों से उन्हें अलंकृत भी किया। आज मध्यकालीन पंजाब में रचित हिंदी राम-काव्य पर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो हमें एक समृद्ध, उच्चस्तरीय भावाभिव्यञ्जना युक्त बृहत् साहित्य-सामग्री के दर्शन होते हैं। यह सामग्री पंजाब के, विशेषकर पटियाला के पुराने पुस्तकालयों में धूल चाट रही हैं। सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी पटियाला, भाषा-विभाग पुस्तकालय पटियाला, मोतीबाग पुस्तकालय, पटियाला, सिक्ख रिफरेन्स लाइब्रेरी, अमृतसर तथा कुछ विद्वानों के व्यक्तिगत पुस्तकालयों में उक्त सामग्री पड़ी हुई है। राम-भक्ति-शाखा के इतिहास लिखने वाले हिंदी-जगत् के विद्वानों ने गुरुमुखी लिपि से अपरिचित होने के कारण पंजाब के समृद्ध रामकाव्य की उपेक्षा कर दी। परिणामतः कथित साहित्य उपेक्षित दशा में अनचीह्ना ही पड़ा रह गया।

पंजाब में रचित राम-काव्य अधिकांशतः संस्कृत श्रेय ग्रंथो पर आधारित है। इसका मूल कारण अपनी संस्कृत के प्रति लगाव और धारा से अबाध ऐक्य की कामना है। फिर चाहे प्रबोध-चंद्रोदय हो या हनुमान्नाटक, वाल्मीकि रामायण हो या अध्यात्म रामायण, पद्मपुराण हो या श्रीमद्भागवत, सब का स्तर, सब का लक्ष्य और सब की उमंग एक समान ही है। कवि उदासीन हो, निर्मला सिक्ख या ब्राह्मण, सबका लक्ष्य राम-काव्य से स्फूर्ति पाना और जागरण का आह्वान करना ही है। तात्पर्य यह है कि पंजाब में रचित राम-काव्य में श्रद्धा-भक्ति, निर्गुण-सगुण समन्वय, अन्याय के विरोध का स्वर, अनीति के प्रति संघर्ष और भारतीय संस्कृति के माध्यम से सूर्य-साक्षात्कार की दिशाएं विशेष स्थान रखती हैं। 'राम' व्यक्ति, संस्था, संस्कार और धैर्य के रूप में आदर्श के प्रतीक हैं, पंजाबी लोकमानस इसी का दावेदार है। पंजाब में हिन्दी राम-काव्य की परम्परा का श्रीगणेश सन् १६०४ ई. में सम्पादित गुरुवाणी संग्रह 'गुरुग्रंथ साहिब' से होता है। यदपि गुरुग्रंथ साहिब की ईश्वरीय चेतना निर्गुणोपासक प्रधान है परन्तु राम-कथा से संबंधित अनेक प्रसंगों का वर्णन हमें गुरुओं की वाणी में प्राप्त होता है। एक स्थान पर गुरु नानक लिखते हैं -

गुरुमुखि बांधित सेतु विधाते।
लंका लूटी दैती संतापै।
रामचंद्र भारिऊ अहिरावणु।
भेद बभीखण गुरुमुखि परचाइणु।
गुरुमुखि सादर पाइण तारे।
गुरुमुखि कोटि तेतीस उधारे।।

गुरुग्रंथ साहिब (पृ. ९४२)

तत्पश्चात् कवि हिरदेराम भल्ला द्वारा विरचित 'हनुमान्नाटक' साहित्यदृष्टि से एक प्रौढ़ काव्य ग्रन्थ है। लेखक ने संस्कृत 'हनुमान्नाटक' को रचना का स्रोत बनाया है। इसे कवि की मौलिक कृति कहना समीचीन नहीं होगा। इसमें सीता-विवाह से लेकर रावण-वध तक की कथा कही गई है। इसकी भाषा सुन्दर ब्रज है। कविक्रम एवं अभिव्यंजना कौशल दोनों दृष्टियों से इसे एक

परिपक्व रचना माना जा सकता है। रचना का मूल नाम 'रामगीत' है परन्तु 'हनुमान्नाटक' प्रचलित नाम है। इसकी दो हस्तलिखित प्रतियाँ 'सेंट्रल पब्लिक लाईब्रेरी, पटियाला में उपलब्ध हैं। हनुमान्नाटक में १४ अंक हैं और प्रत्येक का नामकरण किया गया है यथा सीता-विवाह अंक, रामचंद्र वियोग अंक, बन को आइबो अंक, सीता-हरण अंक आदि। 'हनुमान्नाटक' में वीर रस का सुंदर परिपाक मिलता है। मेघनाद, इन्द्रजीत एवं रावणवध के प्रसंगों में रामसेना के पराक्रम के शब्द-चित्र लुभावने बन पड़े हैं। रचना में दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, चौपाई आदि छंदों और उपमा, आलोचना, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों की छटा दर्शनीय है। ग्रन्थ की भाषा ब्रज है।

सोढ़ी मेंहिरबान की रचना 'आदि रामायण' में रामजीवन से संबंधित अठारह महत्वपूर्ण संदर्भों को उठाया गया है। सब कथाएं सत्रहवीं शती के हिन्दीगद्य का स्वरूप निश्चित करती हैं। प्रत्येक कथा के आरम्भ में केवल एक श्लोक दिया गया है। अठारहवीं कथा के अंत में एक अष्ट पद देकर आगे 'उत्तरकाण्ड' सरीखी व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सन् १६४६ में रचित कपूरचंद त्रिखा की रचना 'रामायण' उपलब्ध होती है जिसमे दोहे, कवित्त छप्पय आदि छंदों का प्रयोग किया गया है। जिनकी संख्या १४२ है। रामजन्म से लेकर सीता सहित अयोध्या लौटने की कथा इतने संक्षेप में कही गई है कि विस्तार का अवकाश ही नहीं रहा। रचना का कथा-प्रवाह अत्यंत तीव्र है और दीर्घ प्रसंगों को भी संकेत मात्र से ही चलता कर किया गया है। उदाहरणार्थ दशरथ को मिले श्रवण के माता-पिता के अभिशाप और उसके परिणाम स्वरूप पुत्र बिछोह में दशरथ की मृत्यु की बात कवि ने दो पंक्तियों में पूरी कर दी है-

पूत के बिछोहे राजा दशरथ पछार खाई।
अंध की स्राव लागो सरवन के सर की।।

कपूरचंद त्रिखा की 'रामायण' यद्यपि एक लघु रामकाव्य है तथापि इसमें कवि की राम के प्रति श्रद्धा-भक्ति, उत्कृष्ट भावव्यंजना तथा उक्ति-कौशल के गुण इसे एक अनूठी रचना बना देते हैं।

आदु जुगादु है जपै ताहि सम कोई।
राम चरित्र अद्‌भुत कथा सुने पुनंफल होई।

रामायण की भाषा सरल ब्रज है, जिसमें कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्दों की भरमार-सी प्रतीत होती है। 'रामावतार' गुरु गोबिंद सिंह द्वारा रचित एक प्रबंध काव्य है जिसमे ८६४ छंद हैं। आरम्भ में रामजन्म से लेकर अंत में सीता-वनवास, लव-कुश से युद्ध, पुनर्मिलन और सर्वांत तक कथा कही गई है। 'रामावतार' का गुरुमुखी में प्रकाशित रूप उपलब्ध था। हिंदी देवनागरी में अभी इसका लिप्यन्तर हुआ है। सन् १६९८ के आस-पास यह रचना पूर्ण हुई प्रतीत होती है। गुरु कवि के 'रामावतार' में रीतिकाल-बोध होते हुए भी समृद्धि और सामंती वातावरण की अपेक्षा परिवेशानुसार वीरभावना एवं चरित-नायक श्री राम का वीररूप चित्रित हुआ है। गुरु गोबिंद सिंह की दृष्टि तुलसी और केशव से भिन्न रही है। वे श्री राम को राजा, उदार, सुशील, भक्त-वत्सल आदि देखते हुए भी पुरातन धारणा के अनुरूप एक ऐसा अवतार मानते हैं जो 'परित्राणाय साधुनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्' कि

के लिए धरती पर अवतरित होते हैं-

राम परम पवित्र हैं रघुवंश के अवतार।
दुष्ट दैतन के संघारक संत प्राण अधार।।

'रामावतार' के कथानक का अधिकांश आधार वाल्मीकि एवं अध्यात्म रामायणों से लिया गया है। 'उत्तरकाण्ड' इसका सजग प्रमाण है। कवि ने कथा में नवीन उद्भावनाएँ प्रस्तुत की हैं- यथा मन्थरा का गन्धर्वी होना, स्वयं द्वारा भेजी जाना, लक्ष्मण का रावण द्वारा फेंकी शक्ति से मूर्छित होना, मेघनाद द्वारा नागफांस से श्री राम और लक्ष्मण को बांध लेने पर सीता को युद्धभूमि में लाकर मृत राम, लक्ष्मण को दिखाना और सीता द्वारा क्रुद्ध होकर नागमन्त्र पढ़ना और राम-लक्ष्मण के बंधन काट देना आदि।

कवि को युद्धचित्रण अधिक प्रिय है। ८६४ छंदों में से ४०० से भी अधिक छंद इसी उद्देश्य की पूर्तिहेतु लिखे गए हैं। कवि को राम का वही रूप ग्राह्य है जिसमे श्री राम के बाण अत्याचार और अन्याय की टक्कर में निरंतर विजयी होते हैं-

श्री रघुनन्दन की भुज तें जब छोर सरासन बाण उड़ाने।
भूमि अकास पतार चहूँ चक पूर रहे नाहि जात पछाने।
तोर सनाह सुनाहन क तन आह करी नांहि पार पराने।
छेड़ करोरन ओटन कोट अटान मों जानकी बान पछाने।।

यदपि वात्सल्य, श्रृंगार और करुण भावों का चित्रण भी 'रामावतार' में दृष्टव्य है मगर कवि का मन वीररस में अधिक रमा है। ग्रन्थ की भाषा ब्रज है। पंजाबी, अरबी और फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

कवि कृष्णलाल ने 'रामचरित्र' नामक ग्रन्थ की रचना की है। 'रामचरित्र' के अंतर्गत 'वन-पर्व' के भाषानुवाद का एक अंश है। 'रामचरित्र' की कथा राम तथा रावण के जन्म के परिचय से आरंभ होती है। इसके अनुसार विश्रवा ऋषि की तीन राक्षसी दासियाँ थीं- उन्हीं से रावण, कुम्भकर्ण आदि का जन्म होता है। रावण कुबेर से ईर्ष्यावश दस हज़ार वर्ष तक ब्रह्मा की प्रसन्नता के लिए तप करता है। रावण ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करता है। वरप्राप्ति के बाद रावण कुबेर से लंका का राज्य छीन लेता है। आगे की कथा अधिकतर पारम्परिक है, कहीं-कहीं कवि महाभारत के 'रामोपाख्यान' से अलग तो पड़ा है, परन्तु प्रस्तुत घटनाएँ अन्य राम-कथाओं में कहीं न कहीं मिल ही जाती हैं। 'रामचरित्र' को लेखक ने कांडों में विभाजित न करके सात सामान्य खंडों में विभक्त किया है। प्रथम खंड में १०६ छंद हैं, द्वितीय में ३५१, तृतीय में २४०, चतुर्थ में ६३, पंचम में १५९, छठे तथा सातवें में केवल ७६-७६ छंद हैं। अंतिम पुष्पिका इस प्रकार है : इति स्री महाभारते पुराने, बन परबने राम-चरित्र कृष्ण लाल कृत भाखायं समापतं श्री रामायण संपूरणमसतु सुभमसतु।।७।। श्री राम-राम।।

गुरु गोबिंदसिंह जी के संपर्क में आने के कारण ही शायद कवि ने रचना में तीसरे, चौथे और पांचवे खण्डों में युद्ध-चित्रण किए हैं। तीनों खण्डों का मुख्य स्वर वीर, रौद्र तथा वीभत्स रसों का है यथा-

अंगद तन जिउ फूले पलासा।
असुर सूरहिरण मांहि प्रकासा।
रसिक बरि दौरिऔ बलवाना।
इन्द्रजीत के सीस भइ आना ।।१२३.३।।
एक लात सों तां रथ तोरिओ।
गिरओ धरणी राखस मुख मोरिओ।

इन्द्रजीत कवि बल निरखाही।
हो भिआन नभ चढिओ तहां ही।।२३.३।।

रामकथा से सम्बंधित कवि साहिबदास की रचना 'लव-कुश' कथा प्राप्त होती है। 'लव-कुश कथा' साहिबदास की रामकाव्य से सम्बंधित एक प्रौढ़ रचना है। लव-कुश के चरित्र पर आधारित इस रचना में कुल छ: खंड हैं। आरंभ में कवि ने ब्रह्मा, गुरुदेव, गणपति, विष्णु की स्तुति की है। श्री राम का यशोगान करते हुए कवि कथा कह सकने के सामर्थ्य की प्रार्थना करता है। कथा का आरंभ सीता की अग्निपरीक्षा से होता है। उसके बाद राम का अयोध्या आगमन, सीता का त्याग, सीता द्वारा वाल्मीकि आश्रम में शरण-ग्रहण, लव-कुश का जन्म, ब्रह्महत्या के पाप से छुटकारा पाने के लिए राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन, लव-कुश द्वारा घोड़े का पकड़ा जाना, युद्ध और परिणामत: श्री राम तथा तीनों भाइयों का मारा जाना तथा अमृत द्वारा पुन: जिलाया जाना, श्री राम का पत्नी-पुत्रों सहित अयोध्या आगमन तथा सीता सहित अश्वमेध यज्ञ को पूर्ण करना आदि घटनाएँ क्रम से दी गई हैं। रचना का अधिकांश युद्धचित्र है। 'लव-कुश' कथा में श्री राम और सीता के चरित्रों के अति उदात्त रूप प्रस्तुत किये हैं। कथा में छप्पय, सवैया, कवित्त, सोरठा, अड़िल, कुंडलियों आदि छंदों का प्रयोग हुआ है। भाषा सरल ब्रज है।

कवि साहिबराय द्वारा विरचित रामायण पुराण है। प्रस्तुत रचना रामायण का संक्षिप्त अनुवाद है जो कि फारसी लिपि में लिखा हुआ प्रो. प्रीतम सिंह के व्यक्तिगत पुस्तकालय में उपलब्ध है। इसका रचनाकाल १७२४ ई. है। इसकी भाषा ब्रज और खड़ी बोली का मिश्रण है। साधु गुलाब सिंह निर्मला द्वारा रचित, 'अध्यात्म रामायण' मिलती है, जो कि व्यासकृत संस्कृत से रचना का मौलिक उद्भावनाओं युक्त स्वतन्त्र भाषा-अनुवाद है। यह एक पौराणिक कृति है एवं भाषा, भाव और कला की दृष्टि से कवि की काव्य-कुशलता की प्रतिष्ठा को सार्थक करती है। यह रचना कांडों में विभाजित है और उमा-महेश्वर संवाद रूप में लिखी गई है। इसमें मर्यादा पुरुषोतम श्री राम के चरित्र की सामाजिक उज्ज्वलता पर प्रकाश डाला गया है। ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। श्री राम का रूप चित्रण हो, लक्ष्मण की क्रुद्ध वाणी हो अथवा युद्धभूमि का दृश्य हो, लेखक तीनों स्थितियों की मार्मिकता तथा रसात्मक धर्मों की उदात्तता को पहचानता है। 'अध्यात्म रामायण' के दो गद्यानुवाद भी उपलब्ध हैं।

कवि रामदास की रामकथा से सम्बंधित कृति 'सार-रामायण' प्राप्त होती है। यह रचना लगभग १८०८ रची गयी है। 'सार-रामायण' भाषा, भाव कला और अभिव्यंजना की दृष्टि से अत्यंत मधुर और उच्चस्तरीय रचना है। समूची रामकथा 'रामचरितमानस' की तरह सात कांडों में विभक्त है और कांडों के नाम भी वही हैं। रचना दोहा-चौपाई शैली में संपन्न की गयी है किन्तु तुलसी की तरह चौपाइयों एवं दोहों की कोई विशेष व्यवस्था नहीं है।

कवि ने शृंगार, वीर तथा भक्तिरसों का सुन्दर परिपाक रचना में किया है। कवि के भावलोक में कहीं सामंतीय दरबारी समर्पण अथवा अस्वस्थ जूठन नहीं दीख पड़ती। इससे

कवि रामदास के एक स्वतन्त्र काव्य-साधक एवं रामभक्त होने का स्पष्ट अनुमान होता है। वह दरबारी कवि नहीं हो सकता। पंजाब में रचे गए रामकाव्य में 'सार-रामायण' का स्थान महत्वपूर्ण है।

कवि संत सिंह अमृतसर निवासी ज्ञानी सूरत सिंह के सुपुत्र थे। इन्होंने पद्मपुराण के 'रामाश्वमेध' अंश का भाषानुवाद सन् १८२० में अमृतसर में ही किया। रामचरित का गान करने की उत्कट इच्छा से ही इन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया। कवि संत सिंह ने ग्रंथ के आरंभ में अन्य विघ्नहर देवों की स्तुति करने के बाद श्री राम का यशोगान किया है। कवि प्रभु श्री राम के प्रति विभोर मन से आसक्त है। आत्मदैन्य, विनय और प्रभु प्रेम का साक्षात्कार रचना में बराबर होता है-

दुराचार में अति खल मंदा।
करुणाकर मोहि देहु अनंदा।
हे अजान बहु रघुराई।
करुणानिधि मुहि होहु सहाई।।३२।।

कवि चन्द ने भी 'रामायण' की रचना की है जिसकी साहित्यिक भाषा ब्रज है। कथा अत्यंत संक्षेप में कही गयी है इसलिए राम-चरित्र में सभी घटनाओं की गति बहुत तीव्र है। राम-रावण युद्ध एवं लंका-पतन, जो कि राम-कथा का विस्तृत प्रसंग माना जाता है, प्रस्तुत ग्रन्थ में कुछ ही छंदों में दिया गया है फिर भी भावोद्रेक की स्थिति संतोषजनक है। भाई संतोख सिंह की रचना 'बाल्मीकि रामायण' अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। भाव, भाषा, कला और कौशल में महाकवि तुलसीदास और महाकवि संतोख सिंह को एक ही श्रेणी में रखा जा सकता है। इस ग्रन्थ में कुल मिलाकर ६५१ सर्ग हैं और ३ खण्ड हैं। कवि ने आरंभ में गुरुओं का स्तुतिपरक मंगलाचरण किया है और रामकथा को बाल्मीकि की देन माना है और गुरुवन्दना के उपरांत इस प्रकार लिखा है -

मुनि बाल्मीकि गिरवर रमणीक हूं ते,
निकसी है नीक कथा धार गंग की।
मोह आदिक पंच को प्रपंच पाप, वंसस है,
नवोरस छवि है उतंग नित रंग की।
तीन लोक पावन करति, उज्जल बरन अपार,
अस रामाइनि गंग की बंदन बारम्बार।।

(बाल कांड सर्ग १)

कवि की यह रचना बाल्मीकि रामायण का अनुवाद है और उनकी अनुवादकला भी निर्दोष है। बाल्मीकि रामायण मूलत: करुणाप्रधान है। राम-बनवास, सीता-विरह, लक्ष्मण-मूर्छा आदि प्रसंगों में कवि की करुणाधारा बह निकली है। पंडित रत्न हरी की रघुवर पदरत्नावली, रघुवर लीला, विनय बारही, राम रहस्य, बग्गा सिंह की राम कथा भी उल्लेखनीय रामचरित सम्बन्धी रचनाएँ हैं। कवि हरी सिंह ने आत्मरामायण की रचना की। इन्होंने राम-कथा तथा राम-कथा के पात्रों को प्रतीक बनाकर यह रचना प्रस्तुत की है जिसका रचनाकाल उन्नीसवीं शती का मध्य दशाब्द माना जाता है। इसमें कवि ने श्री राम को आत्मा और रावण को अहंकार माना है। रामकथा के सभी प्रसंगों को आत्म-रामायण में चित्रित किया गया है। रामजन्म को कवि आत्मा का शरीर में आगमन मानते हुए लिखता है-

निज माइआ के आसरे जी के आतम के रूप।

प्रवेस कीन तब देह में वास्तव ब्रह्म स्वरुप।।१५।।

कौशल्या माता के लिए प्रारब्ध, अयोध्या के लिए काया, राम के लिए आत्मा, लक्ष्मण के लिए यतीत्व, भरत के लिए संयम, शत्रुघ्न के लिए नियम आदि रूप अपनाए हैं। कवि ने राम-जीवन की घटनाओं को भी इसी प्रकार रूपकों और प्रतीकों से व्याख्यायित किया है। रचना की भाषा परिमार्जित और शुद्ध है, धीरे-धीरे खड़ी बोली की ओर बढ़ रही है। समूचा वृतांत दोहा, सोरठा, चौपाई में गढ़ा है। कहीं-कहीं सवैया भी मिलता है। समूची कथा ही समासोक्ति है, जिसमे रूपकों की छटा तो है ही, बिम्बों-प्रतीकों का भी एक रेला बह रहा है।

कवि बसावा सिंह ने 'रामचरित रामायण' में रामकथा को सात कांडों में कहा है। कवि निहाल की रचना रामचन्द्रोदय में रामजन्म से लेकर अश्वमेध यज्ञ तक की कथा प्राप्त होती है जिसमें बाल्मीकीय रामायण का अधिक प्रभाव मिलता है। रामकथा के साथ-साथ कवि ने स्थान-स्थान पर दर्शन, राजनीति, शरीर विज्ञान, ज्योतिष एवं पुरातन सन्दर्भ कथाओं पर भी खुलकर लेखनी चलाई है। यह एक अनूठी तथा सर्वगुणसम्पन्न रचना है।

कवि मनोहर सिंह ने, जो एक दरबारी कवि थे, ने 'रामगीत' नामक ग्रन्थ की रचना की। यह रचना बाल्मीकि रामायण पर आधारित है। आरंभ में कवि ने राम-भक्ति का महत्व तथा राम-नाम-महिमा का सविस्तार वर्णन किया है। प्रत्येक अध्याय के आरंभ में कवि ने राम-महिमा की चर्चा की है जिससे कवि के राम-भक्त होने का दृढ निश्चय होता है। राम-रावण की विस्तृत कहानी के साथ-साथ विष्णु के अन्य अवतारों की भी विशद कथाएं कही हैं। जनक की चार पुत्रियों की बात कही है, उर्मिला, मांडवी, श्रति, कीर्ति को सीता को सगी बहनें कहा है। दशरथ के तीनों ससुरालों में पुत्र-जन्म की सूचना भेजना और ननिहाल वालों का उपहारादि लेकर अयोध्या आने की बात 'रामगीत' की ही उद्भावना है। 'रामगीत' में राम-कथा कहने की एक प्राचीन परम्परा का सुन्दर पालन किया गया है। राम-कथा सविस्तार कहने से पूर्व एक छंद में कथा के मुख्य सन्दर्भों की बात कहकर संक्षेप में राम-कथा कहने की यह परम्परा संस्कृत-ग्रंथों से ही प्रचलित है। रचना की भाषा सरल और बोधगम्य है। कथन में पौराणिकता को विशिष्ट स्थान दिया गया है।

कवि बीर सिंह बल ने अपनी कृति 'सुधासिंधु रामायण' में कुछ नवीन उद्भावनाएँ दी हैं यथा-

१. नागपाश के बाद स्वयं सीता द्वारा चंडिका का रूप धारण कर इन्द्रजीत से युद्ध में उतरना और सरस्वती के समझाने पर शांत हो जाना।
२. सुलोचना ने श्री राम से विनती की कि युद्ध-विराम कर दिया जाये।
३. लक्ष्मण मूर्छा प्रसंग में सुखैण वैद्य की चर्चा नहीं। राम को द्रोणाचल की उक्त संजीविनी का पहले से ज्ञान है।

कवि कीरत सिंह ने अनूप रामायण, कीरत रामायण तथा सतसैया रामायण रचकर रामकथा-साहित्य को समृद्ध किया। कीरत सिंह भी एक

दरबारी कवि था। इन तीनों रामायणों का घटनाक्रम तुलसीविरचित 'रामचरितमानस' पर आधारित है और कवि ने तीनों में भिन्न छंद प्रयोग के अभिनव प्रयास किये हैं। तत्पश्चात् गोपाल सिंह ने अपनी कृति 'विनयपत्रिका' तुलसी की विनय-पत्रिका के अनुकरण पर लिखी। इसमें दोहा, कवित्त, सवैया एवं पद मिलकर केवल ४८ छंद हैं जबकि तुलसी की रचना में २७९ पद हैं।

इन रचनाओं के अतिरिक्त युगलानंद कृत 'रामनाम प्रकाश', कवि राम सिंह कृत 'लघु रामायण', कवि चन्द सिंह कृत 'रामायण पापखंडनी', श्री निवास उदासी की 'सुखदायक रामायण' आदि रामकथा से सम्बंधित कृतियाँ भी उपलब्ध होती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि एक मात्र रामकाव्य ही ऐसा विषय है जो भारत के हरेक प्रान्त में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से कालातीत सीमाओं में साहित्यिक आकार लेता रहा है, आज भी ले रहा है। श्री राम को अपनी लेखनी का विषय बनाना प्रत्येक साहित्यकार का उद्देश्य रहा है। श्री राम के चरित्र का वर्णन कर साहित्यकार अपने कृतित्व को एक नई गरिमा देने का प्रयत्न करते हैं। तभी तो श्री मैथिलीशरण गुप्त को कहना पड़ा था-

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाये सहज संभाव्य है।।

पंजाब के कवि और लेखक भी इस दिशा में किसी से पीछे नहीं हैं। पंजाब प्रान्त के कवियों ने रामचरित्र की महिमा का गुणगान अपने-अपने ढंग से किया और रामकथा से सम्बंधित उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है। अनेक ऐसी कृतियाँ और भी हैं जो अभी प्रकाश में नहीं आई हैं। इस दिशा में और अधिक खोजकार्य की आवश्यकता है ताकि रामचरित्र से सम्बंधित अमूल्य कृतियों को प्रकाश में लाया जा सके।

-अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय, सेक्टर-४६, चंडीगढ़।

न परेणाहतं भक्ष्यं व्याघ्रः खादितुं मिच्छति।
एवमेव नरव्याघ्रः परलीढं न मंस्यते।।

वा.रा.अयोध्या. ६१.१६

परम्परा है कि शेर दूसरे के द्वारा मारे हुए शिकार को नहीं खाता। अत: जैसे शेर दूसरे के जूठे शिकार को नहीं खाता उसी प्रकार वीर पुरुष अपने जीवन में दूसरे की कमाई पर निर्भर न रहकर उद्यम करके ही जीवन-यापन करते हैं।

श्री रामलुभाया आनंद 'दिलशाद' कृत पंजाबी रामायण में सीता-परित्याग

– डॉ. देवराज शर्मा

भारतीय संस्कृति का आदिकाव्य रामायण महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखा माना जाता है। जिसकी महर्षि ने एक क्रौञ्च-पक्षी की करुणाजनक मृत्यु के दृश्य को आधार बनाकर रचना की। कुछ साहित्यकार करुणरस को ही सभी रसों का आधार मानते हैं।[1] इसी करुणारस को महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में श्री राम की कारुणिक गाथा को अपनी विषय-वस्तु बनाया। इसीलिए रामायण में अधिकतर प्रसंगों में हमें करुणारस का ही अनुभव होता है, जिसके अन्तर्गत हम सर्वप्रथम संतान के न होने से किसी भी व्यक्ति के मानसिक दु:ख को समझ सकते हैं। रामायण में भी राजा दशरथ का नि:संतान होना सर्वप्रथम कारुणिक प्रसंग कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त चौदह साल के लिए श्री राम का वनवास, जिसके कारण सारा परिवार ही अस्थिर हो जाता है। महान् विद्वान् दार्शनिक चक्रवर्ती सम्राट् राजा जनक की अत्यन्त सुकोमल पुत्री सीता का पति के साथ वन जाना भी करुणा की पराकाष्ठा है। वन का नाम सुनते ही व्यक्ति का शरीर रोमांचित हो जाता है, क्योंकि वन में भयंकर हिंसक जीव-जन्तुओं का भय प्रतिपल बना रहता है। वन में चौदह वर्ष निवास के समय न तो खाने का प्रबन्ध, न रहने का प्रबन्ध, न ही कोई राजकुमारों के योग्य व्यवस्था, इस स्थिति को करुणा ही कहा जा सकता है। अन्य प्रसंगों में सीता-हरण, भरत की राम से वापसी की प्रार्थना, जटायुवध, अशोक वाटिका में सीता-निवास, लक्ष्मण-मूर्छा, मन्दोदरी विलाप, दशरथ की मृत्यु, माताओं का रुदन, मृत्युशय्या पर पड़े हुए रावण का दिया उपदेश, सीता का भूमिप्रवेश आदि करुणरस के मुख्य स्रोत कहे जा सकते हैं।

जनमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र को हृदयंगम करते हुए देशविदेश में भारतीय संस्कृति और श्रीराम का गुणगान करते हुए विभिन्न भाषाओं में रामकथा लिखी गई। भारत में विभिन्न प्रदेशों के विभिन्न भाषाई-विद्वानों द्वारा अपनी-अपनी भाषा में रामायण को लिखा गया है। रामायण की प्रतिष्ठा जनमानस में इतनी है कि (२६-३-२०१८) दोपहर को एक टेलीविजन प्रोग्राम में बताया और दिखाया गया कि एक वाल्मीकि रामायण गुजरात के सूरत शहर में है जो पूरी की पूरी सोने-चांदी और हीरे-जवाहरात से युक्त है। इस रामायण का वजन १९ किलो है। इसका कागज अत्यन्त सफेद है और जर्मनी से मंगवाया गया था, जिस पर सोने के अक्षर चिपक सकें। यह साढे पांच सौ पृष्ठों पर लिखी गई है। इसे सोने को पिघलाकर विशेष कलम से सोने के अक्षरों में लिखा गया है। इसे एक किलो चांदी के कबरपेज से बांधा गया है।

१. उत्तरामचरितम्, ३.४७.

इसके मुख्य-पृष्ठ पर श्रीराम की मूर्ति है जो १० तोले सोने की बनी हुई है। मुख्य पृष्ठ के ऊपर ही शिव की मूर्ति पांच तोले सोने की बनी हुई है। शिव जी के अगल-बगल एक-एक तोले सोने की हनुमान् और श्री गणेश जी की मूर्ति बनी हुई है। मुख्यपृष्ठ की दीवारों पर स्वर्ण और विभिन्न रत्न जड़े हुए हैं। इस रामायण के वर्ष में तीन बार ही लोगों को दर्शन कराये जाते हैं- दीपावली, रामनवमी, गुरुपूर्णिमा। यही भगवान् श्री राम और रामायण की भारतीय महिमा है।

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के जीवनवृत्त से प्रभावित अनेकों विभिन्न भाषाओं के कवियों द्वारा रचित रामायण की परम्परा में ही अविभाजित पंजाब के भेरा नामक स्थान (वर्तमान में पाकिस्तान के अन्तर्गत) के कवि श्रीराम लुभाया आनन्द, 'दिलशाद' का नाम भी उल्लेखनीय है।[२] आपने पंजाबी भाषा में पंजाबी रामायण की रचना की, जो वाल्मीकि रामायण पर ही आधारित है। कवि ने पंजाबी रामायण को भी आदिकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, आरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड- सात काण्डों में विभाजित किया है। प्रस्तुत लेख में उत्तरकाण्ड में वर्णित सीता-परित्याग को आधार बनाया गया है। इस उत्तरकाण्ड को कवि ने बारह उपशीर्षकों में बांटा है।

उत्तरकाण्ड का प्रारम्भ कवि ने रावणवध के बाद लंका से लौटने पर राज्यसिंहासन पर बैठने और सुचारु रूप से राज्य का प्रबन्ध कर लेने पर श्री राम द्वारा सभासदों से राज्य की स्थिति पर चर्चा करते हुए प्रारम्भ किया है। जिसमें वर्णित है कि रामराज्य में सब लोग शान्ति से रहते हैं, कोई अत्याचार की संभावना नहीं है। सभी लोग सुखी और प्रभु-भजन करते हैं। रामराज्य में कोई व्यभिचार नहीं, शराबी नहीं, झूठा नहीं, चोर-बदमाश नहीं, न कोई रोगी है न कोई वृद्धावस्था से पूर्व मरता है, वे-मौसमी बारिश नहीं होती, अनाज के भण्डार भरे रहते हैं, सभी भगवान् का नामस्मरण करते हैं। रामराज्य की ऐसी प्रशंसा सुनकर भी श्रीराम सभासदों के मुख से राज्य की अवस्था को जानने के लिए पूछते हैं कि हे सभासदो! मुझे सत्य बताइए कि रामराज्य का क्या समाचार है, कोई अत्याचार तो नहीं, सब खुश हैं, किसी को कोई दु:ख तो नहीं है। इस पर सभासदों ने हाथ जोड़ कर श्रीराम से कहा कि आपकी छत्रछाया में कोई दु:खी नहीं, किसी पर कोई अत्याचार नहीं, सब आपकी प्रशंसा करते हैं, सभी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आपके लिए प्रार्थना करते हैं। किसी को कोई भी कमी नहीं, कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं। सभी प्रजाजन आपके दर्शन को लालायित रहते हैं-

न कोई झगड़ा न फसाद किधरे,
सिद्धी साफ एह गल्ल सफा है जी।
राह आपदा तकदे रैह न सारे,
हर इक नूं दरस दी चाह है जी।।

रामराज्य में चारों ओर सम्पन्नता और प्रसन्नता होने पर भी समाज में सीता के रावण के

२. आप संस्थान के आद्य-संचालक पद्मभूषण आचार्य (डॉ.) विश्वबन्धु जी के पिता थे।

पास रहने की घटना की चर्चा अवश्य थी, जिसे श्री राम पर आक्षेप समझा जा रहा था। इसी ओर संकेत करते हुए एक मंत्री श्रीराम से कहता है कि रामराज्य की प्रशंसा होते हुए भी लोगों में यह चर्चा है कि सीता रावण के पास एक वर्ष रही और रावण को मारकर श्री राम सीता को अपने पास ले आए, इस बारे राम ने कोई सोच-विचार नहीं किया। यदि हमारी स्त्री भी कल को कहीं भाग जाएगी तो हमें भी उसे अपने पास रखना पड़ेगा, यह बात तो हमारे लिए एक मिसाल बन गई, हम भी ऐसी औरत को घर से निकाल नहीं सकते-

साडी रन्न भी नस्सेगी जो किधरे
देना उसनूं नहीं निकाल है जी।
खुशी नाल रख लबांगे कोल उसनूं
साढे वासते खूब मसाल है जी।।

मंत्री के उक्त वचन सुनकर श्री राम का मन उदास हो गया और सिर नीचा हो गया। वे सोचने लगे कि प्रजा का लांछन ठीक ही है। ऐसा लांछन किसी को भी विचलित कर सकता है। साधारण व्यक्ति किसी अच्छी-बुरी बात पर अपने परिवार से सलाह-मसविरा करता है। उसी प्रकार श्रीराम भी सीता पर लगे इस लांछन को सुन कर अपने भाइयों से सलाह करते हैं और कहते हैं कि हे लक्ष्मण! जो मैं कहता हूं उसमें कोई त्रुटि नहीं निकालनी, मन दृढ कर मेरा आदेश सुनो, क्योंकि लोगों ने सीता पर रावण के यहां वर्ष भर रहने का लांछन लगाया है कि रावण के पास रही अपनी स्त्री को श्री राम घर ले आए, यदि राजा ही ऐसा करेगा फिर प्रजा को कौन रोक सकता है-

बादशाह जद करनगे कम्म ऐसे,
रैअत करेगी किऊं न एह कही ए।।

इस लिए तुम सीता को रथ में बिठाकर वन में छोड़ कर वापिस आ जाओ। यदि मेरी इस बात को नहीं मानेगा तो तेरा-मेरा संबंध टूट जाएगा-

मेरे हुकम नू जे हुण मोड़ सें तूं,
रिस्ता नाल मेरे समझ तरोड़ सें तूं।।

लक्ष्मण श्री राम के वचन सुनकर रोने लगे और अपने बाल नोचने तथा सोचने लगे कि अब मैं क्या करूं, बड़े भाई के आदेश को नकार नहीं सकता, कहां मुख छुपाऊं या फिर नदी में डूब मरूं-

सुन के गल्ल इतनी लक्ष्मण रोण लगा,
पट पट बाल सिर दे बैह के खोण लगा।
रामचन्दर महाराज थीं मैं डरां,
नहीं तां विच नदी जा के डुब मरां।।

लक्ष्मण की अस्थिर अवस्था को देखकर श्रीराम फिर कहने लगे कि भैय्या लक्ष्मण! तुम व्यर्थ की चिन्ता करते हो, यह साधारण बात है। तुम सीता को कहना कि मैं आपके साथ चलता हूँ, आपको जंगल की सैर करा लाऊं और वहां आप पूजनीय ऋषि-मुनियों के दर्शन कर सकेगीं। अन्य कोई बात न कहकर सीता को वन में छोड़ चुपचाप वापिस आ जाना-

सैर जंगल दी तैनूं कराउसां मैं,
लै के नाल तैनूं आप जाउसां मैं।
रिशि मुनि तपसी दिखलाउसां मैं।।

इस प्रकार लक्ष्मण ने न चाहते हुए भी श्री राम की आज्ञानुसार सीता को वन में भ्रमण कराने के लिए कहा और लक्ष्मण द्वारा श्रीराम की आज्ञा को सुनकर सीता जी वन जाने को तुरन्त तैयार हो जाती हैं। जब वह रथ पर आरूढ़ हुईं तभी उसकी दाहिनी आंख

फड़कने लगती है, सगुण शास्त्र के अनुसार स्त्री की दाहिनी आंख फड़कना अपशकुन कहा गया है। जिसने सीता को भयभीत हो गई-

लगी फड़कने सज्जी फिर अक्खं उसदी उत्ते रथ दे जदों स्वार होई।
गई डर विच दिल दिलशाद भावें, घरों निकल रवां आखिरकार होई।।

जब लक्ष्मण सीता जी को वन में छोड़कर वापिस आने लगे तो वे सोचने लगे कि मैं सीता को इस जीव-जन्तुओं से भयंकर वन में अकेला कैसे छोड़ जाऊं। इतना सोचने पर ही लक्ष्मण जोर-जोर से रोने लगे। लक्ष्मण की ऐसी आतुर अवस्था और जोर-जोर से रोने का कारण सीता पूछने लगीं कि भैय्या लक्ष्मण तुझे क्या दु:ख है, क्यों रो रहे हो। उत्तर में लक्ष्मण बड़े संकोच से सीता को लोगों के अपवाद को बताता है कि सीता रावण के पास एक वर्ष तक रही है और श्री राम उन्हें फिर भी साथ ले आए। इसी के कारण भाई श्री राम ने आपको वन में छोड़ आने का आदेश दिया है। लक्ष्मण के ऐसे वचन सुनकर सीता साधारण स्त्री की तरह रोने लगी और विचारने लगी कि इस वन में मैं अकेली स्त्री कैसे रहूंगी। यहां मेरा कोई सगा-संबंधी नहीं है। अब तो केवल भगवान् का स्मरण ही सहारा है-

नहीं भैन भिरा कोई कोल मेरे अगे किस दुख करां इझहार वैह के।
तुझ बाज दिलशाद नहिं होर कोई अगेरव दे करे पुकार बैह के।।

इस विकट स्थिति में रोती हुई सीता अपने गर्भवती होने की ओर संकेत करते हुए लक्ष्मण से कहती है कि मैं आठ महीने की गर्भवती हूं, इसलिए मैं मरना भी नहीं चाहती, नहीं तो मैं इस कलंक के कारण कहीं नदी में डूबकर मर जाती, क्योंकि पति की जुदाई से तो मरना अच्छा है-

इस जीउने थां हैसी मरण चंगा, कदी दुख जुदाई दे न जरदी।
महीने अठां दा बच्चा गर्भ मैरे, इसे वासते पई हां मैं डरदी।।

लक्ष्मण को वापिस भेजते हुए सीता नीति और शास्त्रसम्मत संदेश मर्यादा के रक्षक, चकवर्ती सम्राट्, सूर्यवंशी और रघुकुल के श्रेष्ठ राजा राम को देने के लिए कहती है कि श्री राम से कहना कि यह किस शास्त्र में लिखा है कि किसी निरपराध महिला को बिना किसी कारण सजा दी जाय। लोगों के कहने पर और धर्म से विमुख होकर किसी गर्भवती स्त्री को घर से निकाल देना महापाप है। श्री राम को सोच-विचार कर काम करना चाहिए था। मेरी सास से कहना कि मुझे राजा श्री राम ने घर से निकाल दिया है। मेरा प्रणाम स्वीकार करें, भूल को माफ करें, मुझे सदा याद रखें। मैं निर्दोष हूँ फिर भी मुझे जंगलों में छोड़ दिया गया है-

औरत हमला नूं देना कड्ढ घरों,
भारा पाप है एह सुणा देना।
आखे लग के लोकां मूरखां दे,
मुंह धरम थीं नहि भनवा देना।।
केहड़े शास्त्र दे विच है इह लिख्या,
बेगुनाह नूं दस्सो सझा देना।।

सीता को वन में छोड़ जब लक्ष्मण श्री राम के

पास पहुंचे तो उन्होंने श्री राम से कहा कि मैं आपकी आज्ञा से रोती-विलखती माता सीता को वन में छोड़ आया हूं। जिस प्रकार कोई साधारण व्यक्ति भूले-भटके वन में पहुंच जाए और उसे विपत्ति से पार पाने का कोई मार्ग न सूझे, उसी प्रकार भगवती सीता भयभीत होकर साधारण स्त्री की भांति वन में अपने को अकेला पाती है। वन में उसके साथ बातचीत करने वाला कोई नहीं है जो उसे ढाढस बंधा सके और उसके आंसु पोंछ सके। वह अकेली जंगल में कैसे रहेगीं। उसके पास उसका कोई संबंधी, संगी-साथी, सहेली नहीं। इस प्रकार सीता रुदन करने लगी-

ढाई मार के वन दे विच सीता,
पई रोवंदी बैठ इकल्लड़ी ए।
कैंहदी कोल नहिं भैन भिरा कोई,
न कोई संग साथी न सलेहड़ी ए।
नहिं जाह कोई रैहण बैहण कारण,
न कोई मैहल माड़ी न हवेलड़ी ए।
नहिं खबर किस जनम दा पाप लगा,
किसमत खेल अपुठड़ी खेलड़ी ए।
इस जीउने थीं मर जाना चंगा,
गई छप किऊं मौत मरेलड़ी ए।।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जिस प्रकार पक्षी के जोड़े के कारुणिक दृश्य को देखकर महर्षि वाल्मीकि जी ने विशाल ग्रन्थ रामायण की रचना की थी। उसी परम्परा में रामायण को आधार बनाकर स्व. राम लुभाया आनन्द दिलशाद जी की कविता में लिखी पंजाबी रामायण है। कवि ने बड़ी ही सुन्दर और तत्कालीन प्रचलित भाषा में कवितारूप में पंजाबी रामायण की रचना की। इस प्रकार कवि ने वाल्मीकिरामायण में वर्णित सीता-परित्याग का कारुणिक दृश्य अपनी भाषा में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। भारतीय संस्कृति में विधि-रेखा और काल को बड़ा बलवान् बतलाया गया है। समय के आगे छोटा-बड़ा राजा-रंक यहां तक कि अवतारी पुरुष भी असमर्थ होता है।

– (उपसम्पादक विश्वज्योति)

विक्लवो वीर्यहीनो यः स दैवमनुवर्तते।
वीराः सम्भावितात्मानो न दैवं पर्युपासते।

वा. रामा. अयो. २३.१६

जो व्यक्ति दुःखी या उत्साह से रहित होते हैं वे ही भाग्य के बल पर कार्य करते हैं। किन्तु उत्साहसम्पन्न (हिम्मती) व्यक्ति भाग्य के भरोसे न रहकर सतत परिश्रम करते हैं। अर्थात् व्यक्ति को भाग्य के भरोसे न रहते हुए जीवन में सतत आगे बढने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

पं. गुलाब सिंह निर्मला विरचित अध्यात्म रामायण

– डॉ. निर्मल कौशिक

पं. गुलाब सिंह निर्मला पंजाब के मध्यकालीन साहित्य-रचना करने वाले ऐसे प्रथम महाकवि हैं, जिन्होंने भारतीय संस्कृति को मुखरित करने वाले पुराणों तथा वेद-वेदांगों की पृष्टभूमि पर आधारित काव्य को ब्रजभाषा में रचा। इनके काव्य के प्रमुख विषय भक्ति, शृंगार, ज्ञान और प्रेम रहे हैं। इन्होंने लगभग २० वर्ष तक काशी में रहकर शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। इनकी रचनाओं पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। आप अपने समय के प्रतिष्ठित प्रकाण्ड विद्वानों में गिने जाते थे और एक सफल कवि के रूप में प्रतिष्ठित थे। आपने गुरुवाणी की व्याख्या और वेदों-पुराणों की परम्पराओं का निर्वाह अपने ग्रन्थों में बाखूबी किया है। आपके द्वारा रचित भावरसामृत और मोक्ष-पन्थ-प्रकाश जैसे अमूल्य ग्रन्थ गुरुवाणी के गूढ़-दार्शनिक रहस्यों को खोलते हैं और भारतीय चिन्तनधारा का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करते हैं। पं. गुलाब सिंह द्वारा रचित रचनाओं का विवरण इस प्रकार है।

१. भावरसामृत (१७७७ ई.) संवत् १८३४
२. मोक्ष पन्थ प्रकाश (१७७८ ई.) संवत् १८३५
३. अध्यात्म रामायण (१७८२ ई.) संवत् १८३९
४. प्रबोध चन्द्रोदय नाटक (१७९२ ई.) संवत् १८४९
(भाई कान्ह सिंह नाभा के महान् कोश के अनुसार कृतियों का विवरण)

इनके अतिरिक्त महन्त गणेशा सिंह जी ने इनकी दो अन्य कृतियों का उल्लेख भी किया है। 'स्वप्नाध्यायी और कर्मविपाक' परन्तु ये दोनों रचनाएँ अनुपलब्ध हैं। इस आलेक्ष में हम केवल विवेच्य कृति अध्यात्म रामायण पर ही चर्चा करेंगे।

कविवर व्यासकृत संस्कृतरचना अध्यात्म रामायण का मौलिक उद्भावनाओं से युक्त काव्यानुवाद तथा स्वतन्त्र भाषानुवाद करने का श्रेय पं. गुलाब सिंह निर्मला को ही जाता है। यह पौराणिक पृष्ठभूमि को आत्मसात् किए हुए कवि की भाषा, भाव और कलात्मक प्रतिभा को मुखरित करने एवं उनके काव्यकौशल को स्थापित करने में सक्षम और सशक्त रचना कही जा सकती है। यह रचना सात काण्डों में विभक्त है तथा उमा-महेश्वर के संवाद रूप में प्रस्तुत की गई है। इसमें भगवान् राम के सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। भगवान् श्री राम के जीवन का नैतिक-पक्ष प्रस्तुत करने में कवि अत्यन्त सफल रहा है। कवि गुलाब सिंह निर्मला ने काव्यमयी संवादात्मक शैली प्रस्तुत करने में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करके भाषा पर अधिकार होने का परिचय बाखूबी दिया है। श्री राम का सौम्य रूप हो, चाहे लक्ष्मण का क्रुद्ध रूप हो अथवा युद्धभूमि का दृश्य हो लेखक की मार्मिकता और रसात्मकता देखते ही बनती है। प्रस्तुत रचना अनेक पुस्तकालयों में हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में उपलब्ध है। कवि ने काव्य-कला का प्रदर्शन करने हेतु अनेक प्रकार के अलंकारों विशेषत: रूपक और उपमा का प्रयोग किया है। इसी प्रकार छन्द-ज्ञान हेतु दोहा चौपाई, छप्पय, कवित्त सवैया, सोरठा, झूलना

आदि छन्दों का प्रयोग किया है।

अध्यात्म रामायण के दो गद्यानुवाद भी उपलब्ध होते हैं। 'रामगीता' और शिव-पार्वती संवाद। कुछ विद्वानों ने इन्हें स्वतन्त्र रचनाएं मानने से इन्कार किया है और अध्यात्म-रामायण का ही अंग माना है।

रामगीता के विषय में प्राय: यह कहा जाता है कि यह कोई स्वतन्त्र रचना नहीं है। ऐसा लगता है कि अध्यात्म रामायण के उत्तरकाण्ड के पांच अध्यायों को अलग करके 'रामगीता' का नाम दे दिया गया है।

अध्यात्म रामायण- पं. गुलाब सिंह निर्मला विरचित एक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय रचना है। पंजाब में रचित राम-भक्ति काव्य-परम्परा में इस रचना को एक विशिष्ट उपलब्धि कहा जा सकता है। अन्य रामकाव्यों की तरह ही अध्यात्म रामायण काण्डों और अध्यायों में विभक्त है। भाषा सरस ब्रज है। मौलिकता की दृष्टि से पात्रों की सृजनकला और कथानक की गतिशीलता और संवादशैली में प्रवाहात्मकता है। पात्रों की तार्किक शक्ति और ज्ञान-प्रज्ञान पूर्ण विचार सुनकर पाठक आत्म-विभोर हो जाता है। अध्यात्म रामायण में कवि गुलाब सिंह निर्मला ने कथा का आरम्भ सीधे और सपाट रूप से किया है। कोई मंगलाचरण-स्तुति अथवा किसी पृष्ठभूमि की रचना न करके कथा के आरम्भ में वे लिखते हैं-

पूरक गिरजा जोर कर कीनों प्रश्न सनेह
श्री राम तंतूरु त्रिपुरार जु कहयो वांछा ऐह
निज पतनी प्रति गूढ़ जो कीनो शिवहि बखान
अध्यात्म रामायण नाम तिह पुराणोतम पहिचान

पार्वती जी शिव शंकर जी से प्रश्न करती हुई कहती हैं-

जो परमात्म जानत आप, सीता हित किउं कीन विलाप
जो नहि जाने तत सु सोई, सम सभ जीवन भजे न कोई
या मैं को उत्तर प्रभु कहो, मेरो उर के संसे दहो
और समरथ न को जग आहि, विश्व हितार्थ पूछो ठाहि।

उत्तर में शिवजी ने कहा-

राम तत्त जानन की चाह, धन्न धन्न तू या जग महि
परम गोप यह आहि भवानी, किनै न पूछि नाहि बखानी
तैं अब पूछी करौं बखान, श्री राम पद वन्दन ठान,
राम एक आनन्द स्वरूप, प्रकृत परे पुनि पुरख अनूप
निज माया कि जग उपजाई, बाहर भीतर रह्यो समाई
है सब अन्दर आतम गूढ़, नाहि पिखै ताको नर मूढ़।

रामावतार का उद्देश्य और श्री राम की मानव-लीलाओं का चित्रण बहुत ही सरल और सरस शब्दावली में शिव-पार्वती संवाद के रूप में चित्रित किया गया है। बौद्धिक एवं तार्किक शैली में भगवान् शिव पार्वती के प्रश्नों के उत्तर देते हैं। इससे कथा में प्रवाह निरन्तर बना रहता है।

रामावतार की सार्थकता सिद्ध करने हेतु धरती पर पाप-कर्मों की वृद्धि और दुष्टों के विनाश को हेतु मान कर भगवान् विष्णु के अवतार की कथा को पार्वती की जिज्ञासा शान्त करने हेतु भगवान् शिव इस की पृष्ठभूमि के रूप में एक कथा का बखान करते हैं। वे कहते हैं पृथिवी पर पापियों का नाश करने हेतु एक बार देवतालोग स्रष्टा ब्रह्मा जी के पास निवेदन करने पहुंचे उन्होंने दुष्टों का संहार करने हेतु प्रार्थना की। ब्रह्मा जी उनकी पुकार लेकर विष्णु जी के पास गए। विष्णु जी ने ब्रह्मा जी को बताया कि वे शीघ्र ही राजा दशरथ के घर पुत्र रूप में जन्म लेकर दुष्टों का संहार करेंगे। इसके साथ ही ब्रह्मा जी ने कुछ देवताओं को वानर आदि के रूप में उनकी सहायतार्थ भगवान् राम के अवतार के समय पृथ्वी लोक पर अवतरित होने का आदेश दिया।

ब्रह्मा देवन बैन उचारे, रघु कुल में हरि नर तनुधारे
तुम सब अंसन के जग माहि, बानर तन धारे बन माहि
बिसन सहाइ करउ जग तौलौ, बिसन रह्योगो भूतल जौलौ

पं. गुलाब सिंह निर्मला कृत अध्यात्म रामायण में अनेक मौलिक कथासूत्रों के दर्शन होते हैं। रामकथा में लक्ष्मण-परशुराम संवाद अत्यन्त चर्चित एक रोचक प्रंसग माना जाता है। सीता-स्वयंवर के समय धनुषभंग के अवसर पर भगवान् परशुराम का प्रवेश और आवेश-पूर्ण मुद्रा का वर्णन प्राय: सभी रामायण ग्रन्थों में मिलता है। श्री राम के विनम्र स्वभाव को देखकर ही भगवान् परशुराम लक्ष्मण को क्षमादान देते हैं। लेकिन अध्यात्म रामायण में स्वयंवर में नहीं अपितु मिथिला से बारात के लौटते समय रास्ते में भगवान् परशुराम से श्री राम और लक्ष्मण की भेंट होती है। वही पर धनुष-भंग की चर्चा भी होती है। रास्ते में राजा दशरथ को कुछ अशुभ लक्षण दिखाई देते हैं, धूल-भरी आंधी को देखकर वे मुनि वशिष्ठ जी से कहते हैं- मेरी शंका निवारण कीजिए मुझे कुछ अशुभ संकेत मिल रहे हैं। वशिष्ठ जी भविष्यफल देखकर बताते हैं कि कुछ रुकावट के बाद सब ठीक हो जाएगा। इतने में सामने भगवान् परशुराम क्रोधित मुद्रा में खडे होकर उनका रास्ता रोक लेते हैं। अध्यात्म रामायण में उनका स्वरूप इस प्रकार वर्णित है।

सुदेह नील मेघ सी, जटा कपाल सीस मै
कुठार और कमान पान कोप दाहिने गही।
मनो सु प्रेतशत कोप कूर दिष्ट दंड लै,
हनै समस्त लोक को क्रिपा सु रंचहु नहीं।।

भगवान् परशुराम राम से कहते हैं कि तुमने शिवजी के उस जीर्ण-शीर्ण धनुष को भंग कर कोई वीरतापूर्ण कार्य नहीं किया है। अपितु मेरे गुरु का अपमान किया है। वीर हो तो मेरे समक्ष इस धनुष पर चिल्ला चढ़ा कर दिखाओ।

ज्योंही भगवान् राम ने धनुष बाण हाथ में लिया परशुराम जी को विष्णु स्वरूप दिखाई दिया। बस फिर लगे स्तुति करने और कहा-

सुन राम बसु बिसाल नैना जानयो तव भेव
हरि पुरुख पूरन, बिसन तू जग कारणो सुनि देव।।

चौपाई :-

सोई बिसन राम तुम हरी, अवतार लयो विध विनती करी
मो मे तेजहुतो तव जोई, तोह लयो पुन तेज सु सोई
आज सफल भयो जनम हमारा, प्रभु पूरन हरि नैन निहारा।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उग्र और विनम्र स्वभाव वाले दो महापुरुषों का समन्वय प्रदर्शित कर पं. गुलाब सिंह ने युगों-२ तक रहने वाले इस अमर सन्देश को अध्यात्म रामायण में इस राम-परशुराम संवाद द्वारा सहज ही संजो दिया है। मौलिक संरचना की दृष्टि से भी अध्यात्म रामायण में पारम्परिक रामकथा से भिन्न प्रसंगों का निरूपण किया गया है। श्री राम परशुराम संवाद में देखने पर पता चलता है कि समूचा प्रसंग मिथिला के दरबार में घटित न होकर मार्ग में अयोध्या लौटते समय बारात के रास्ता रोकने और धूल उडने के अशुभ संकेत और राजा दशरथ की शंका के साथ आरम्भ होता है। ऋषि वशिष्ठ जी की शंका निवृत्ति और शुभ-अशुभ मुहूर्त एवं ज्योतिष-गणना में विश्वास, परशुराम जी का क्षत्रियों के प्रति विद्वेष और समन्वय की भावना को परिलक्षित करना, वीर-भावना का सम्मान तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण समाज का पारस्परिक समन्वय उस समय की शान्ति-प्रक्रिया का द्योतक है।

अध्यात्म रामायण में पं. गुलाब सिंह जी ने कथा का मौलिक प्रारूप तो वही रखा है जो

संस्कृत अध्यात्म रामायण का है लेकिन अपनी मौलिक तार्किक शक्ति और कथाप्रवाह को शिथिल नहीं होने दिया। एक अन्य प्रसंग में बाली-सुग्रीव युद्ध के पश्चात् बाली की पत्नी तारा वियोग सन्तप्त होते हुए भी अपनी तार्किकता से भगवान् राम से उनके द्वारा दी गई सान्त्वना के बाद प्रश्न करती है।

देह काठवत् जे जड़ राम, जीव सनातन चेतन धाम।
सुख दुख तब किन को होई, राम विचार कहो मम सोई।

ऐसा प्रश्न सुनकर श्री राम अचम्भित भी होते हैं और प्रसन्न भी उन्हें लगता है किसी दार्शनिक विदुषी ने प्रश्न किया है। श्री राम भी उसी स्तर पर वेदान्तिक दृष्टि से उत्तर देते हैं। उनके उत्तर में आत्मा-परमात्मा, शरीर और मन, बन्धन और मोक्ष, तत्त्व ज्ञान और अज्ञान का पूरा विवेचन समाहित है। उत्तर का एक अंश द्रष्टव्य है।

जियोंस्फटिक अति उजल अहै, लाल कुसुम की संगत गहै
लाल वरन तिन भीतर होई, वस्त विचारै वरन न कोई
बुद्धिद्यो की संगति धारी, आत्म भयो सु तिउ संसारी

सीता जी के अपहरण के पश्चात् राम को वैराग्यमयी अवस्था में देखकर लक्ष्मण उनसे भक्तिभाव और सांसारिक निस्सारता की बातें ही करते हैं। लक्ष्मण श्री राम से ईश्वरप्राप्ति का मार्ग पूछते हैं तो राम उन्हें बताते हैं-

गुरु तो लै मन्त्र विधि जैसे, मो को भजै कहै गुरु जैसे

* * * * * *

होई निरालम पूजन करे, मेरे नाम सदा मुख रहे।
मे वपु जान करे गुर पूजा, ता मे भाव न आवे दूजा।

सुन्दर, सरल और सरस ब्रजभाषा में रचित, संवादात्मक शैली में सम्पन्न यह ग्रन्थ रामचरित का बखान नैतिक मानदण्डों और तर्कशक्ति पर आश्रित है। कवि ने पात्रों की भाषानुकूलता एवं ज्ञानशक्ति को चरम सीमा तक पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

मूल कृति के भावात्मक और भावनात्मक स्वरूप को अपनी काव्यकला के माध्यम से सुरक्षित रखने में पं. गुलाब सिंह निर्मला सिद्धहस्त हैं। अध्यात्म रामायण में कवि ने संस्कृत भाषा में रचित मूल कृति की आध्यात्मिकता को बनाए रखने में पूर्णत: भावसाम्य बनाए रखा है। युद्धकाण्ड के अन्तर्गत तृतीय अध्याय में विभीषण की श्री राम के प्रति निष्ठा विभीषण द्वारा की गई भगवान् राम की स्तुति से स्पष्ट परिलक्षित होती है।

अब राम राजेन्द्र ताहे नमो वर सीय मनोरम तूं सुखदाए।
जग दण्ड कुदण्ड तभी तुमको भगताजन पेखन से बिगसाए
सात अनन्त महाप्रभु कन्त अनन्त सुतेज नमो पदधारे
मीत कपीस नमो रघु नायक तू जग को उपजाइ निवारे
तीनहूँ लौकन को गुर तूं सु अनाद ग्रही अभिवन्द हमारे
तूं जगे आद अनाद सदा रघुनाथ करे जग को प्रतिपारे

पं. गुलाब सिंह निर्मला संस्कृत के विद्वान् होने के साथ-साथ लोकभाषा के प्रति भी पूर्णत: सचेत और आस्थावान् थे। संस्कृत के ग्रन्थों का अनुवाद भी उनकी जनभाषाओं के प्रति दृढ़ पकड़ को प्रमाणित करता है। यही कारण है कि ब्रजभाषा में रचित उनकी रचनाएं उनकी मौलिक कृतियां होने का भ्रम पैदा करती हैं। श्री राम के प्रति उनकी आस्था और श्रद्धा ने उन्हें इसके लिए अनुकूल प्रतिभा भी प्रदान की थी। यही कारण है कि उनकी यह भावना उनकी इस रामायण में भी प्रकट हुई है। उन्होंने भगवान् राम को अवतार के रूप में जानते हुए भी परब्रह्म माना है और उसी रूप में उनकी स्तुति की है। अन्य पात्रों की रचना में भी उनकी आस्था और श्रद्धा के साथ-२ उनकी विद्वत्ता के भी दर्शन होते हैं। जनभाषा के प्रचलित शब्दों के साथ-२ सरसता, सरलता और सौन्दर्य का भी ध्यान रखा गया है। उदाहरण के लिए

भगवान् राम के स्वरूप का वर्णन देखते ही बनता है। भगवान् राम के विषय में कवि का कथन है–

सूरय बसे बिखे तनु मानुख जाह लियो हरि जी अबिनासी
अवनी बहुभार निवारण को सुर बृन्द सभै बिखे सुख रासी
सब रखस मण्डल को हन के जिह पावन की रति भूम प्रकासी
वे जनकात भजापति को उर माह भजो पर ब्रह्म विनासी।

कुरुक्षेत्र में रहते हुए सन्त गुलाब सिंह निर्मला ने अनेक मौलिक और अनूदित ग्रन्थों का सृजन किया। कहते हैं कि ईर्ष्यावश कुछ लोगों ने उनकी कुछ अमूल्य पाण्डुलिपियों को नष्ट कर दिया था मगर गुलाब सिंह निर्मला ने उन्हें क्षमा कर दिया।

'अध्यात्म रामायण' की रचना करके उन्होंने पंजाब की रामकाव्यधारा में एक नया अध्याय जोड दिया। ब्रजभाषा में रचित कृष्ण–काव्यधारा के समान ही राम–काव्य से सम्बन्धित अन्य अनेक कवियों ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यह रचना पूर्णतः अनूदित नहीं है। कवि की विलक्षण प्रतिभा ने अनेक स्थलों पर मौलिक कथासूत्रों के माध्यम से इसे मौलिक–कृति के समान ही नया स्वरूप प्रदान करने की सफल चेष्टा की है। इस रचना की अनेक हस्तलिखित प्रतियां विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं। पंजाब में लगभग १५वीं शती से लेकर बीसवीं शती तक राम काव्यधारा अक्षुण्ण रूप से बहती रही है। इस अवधि में ब्रजभाषा का ही आधिपत्य रहा। यही कारण है कि पंजाब में भी ब्रजभाषा में साहित्य रचना की एक समृद्ध परिपाटी मिलती है। पं. गुलाब सिंह निर्मला सरीखे अनेक विद्वान् कवियों ने संस्कृत–ग्रन्थों का ब्रजभाषा में अनुवाद कार्य करने के साथ–२ ब्रजभाषा में मौलिक ग्रन्थों की भी रचना की। पं. गुलाब सिंह निर्मला कृत अध्यात्म रामायण पंजाब की राम–काव्यधारा के अन्तर्गत एक विशेष उपलब्धि कही जा सकती है।

पं. गुलाब सिंह की समस्त रचनाओं में अध्यात्म रामायण अत्यन्त प्रौढ़ एवं सशक्त रचना है। मूल–रचना के केन्द्रीयभाव को दृष्टिगत करते हुए उन्होंने कुछ मौलिकता का भी परिचय दिया है। भगवान् राम का चरित्रांकन करते हुए नैतिक मूल्यों को विशेष रूप से चित्रित किया गया है। अद्वैतवादी चिन्तन की छाप भी उनकी कृति में स्पष्ट परिलक्षित होती है। कुछ विद्वानों ने इसे मूल अध्यात्म रामायण का भावानुवाद अथवा छायानुवाद भी कहा है। लेकिन मौलिक–सन्दर्भों को देखकर ऐसा नहीं लगता। पं. गुलाब सिंह निर्मला ने संस्कृत की जटिलता को ब्रज की सरसता में परिवर्तित करके वैदिक विचारधारा के अनुरूप ढाल कर अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है। यह रचना सात काण्डों में और प्रत्येक काण्ड विभिन्न अध्यायों में विभक्त है स्थान–२ पर उपमाओं और रूपकों की छटा देखने को मिलती है। अनेकों उपमान काव्य की शोभा को अलंकृत करते दिखाई देते हैं। अध्यात्म रामायण में अधिकांशतः दोहा चौपाई छन्दों का प्रयोग किया गया है। कहीं–२ छप्पय, कबित्त, सोरठा, झूलना, आदि छन्द भी कवि की काव्यात्मक–प्रतिभा का परिचय देते हैं। अनेक स्थलों पर प्रचलित तत्कालीन प्रसिद्ध छन्दों कबित्त और सवैया का प्रयोग भी मिलता है। इससे कवि की काव्यशास्त्रीय और संगीतात्मक अभिरुचि की भी पुष्टि होती है।

पं. गुलाब सिंह निर्मला कृत अध्यात्म रामायण हिन्दी–साहित्य जगत् में रामकाव्य परम्परा की एक अमर कृति है। नई मौलिक कथाओं एवं भाव–बोधों के कारण तथा तार्किक एवं बौद्धिक संवादात्मक भाषाशैली के कारण यह विलक्षण ग्रन्थ पंजाब की रामभक्ति–काव्यधारा का ही नहीं, विश्व–विरचित राम–काव्यधारा से सम्बद्ध साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है।

–१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट। मोबा.: ९९१५७-०२८४३

पंजाबरचित राम-साहित्य का समाज पर प्रभाव

– डॉ. गीता शर्मा

भारत सदा से ही महापुरुषों की लीलाभूमि रहा है। साहित्य, धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान सभी क्षेत्रों में एक से बढ़कर एक महान् विभूति ने यहाँ जन्म लिया। अपने गुणों का विकास कर, अपने को ऊँचा उठा लेना एक बात है और समस्त जीवन देकर लोक व समाज की कल्पना करना अन्य बात है। ऐसा काम करना जिससे लोक व समाज को युग-युग तक प्रेरणा मिलती रहे, किसी साधु- चरित का कार्य है। ऐसा ही साधुचरित भगवान् बाल्मीकि जी का है जिन्होंने रामकथा लिखकर भारतीय समाज में उच्चतम आदर्श को स्थापित किया।[1]

वास्तव में "रामकथा का मूल" बाल्मीकि रामायण है। भगवान् बाल्मीकि जी ने जिस आदर्श समाज की, आदर्श धर्म की, प्रतिष्ठा की और पात्रों के आदर्श चित्रण द्वारा लोकहित एवं लोक मंगल की शिक्षा दी वह सम्पूर्ण विश्व में मानव के सम्मुख आदर्श-जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। बाल्मीकि जी ने 'रामायण' में 'राम' को एक आदर्श धीर-वीर मानव के रूप में उपस्थित किया। जो सदा धर्म की रक्षा में तत्पर रहे और जिन्होंने राक्षसों के राजा रावण का विनाश कर धर्म की स्थापना की। यद्यपि उन्होंने श्री राम को विष्णु का अवतार भी कहा फिर भी उन्होंने 'रामायण' में 'राम' के दैवीपक्ष पर जोर न देकर मानवीय गुणों को विशेष रूप से उजागर किया है। भगवान् बाल्मीकि जी का भारत की भूमि पर अवतरण उस समय हुआ जब समाज में मानवीय मूल्यों का विघटन हो रहा था। समाज सभ्य और असभ्य दो रूपों में विभाजित हो रहा था। "समाज में एक गहरी खाई थी, जिसे पाट पाना कठिन था। क्योंकि भगवान् बाल्मीकि समाज की उस बिखरी हुई सँस्कृतियों को मर्यादा के एकसूत्र में बाँधना चाहते थे जिससे सम्पूर्ण प्राणी वर्ग का हित था। बिखरे हुए समाज को बाँधने के लिये उनके पास दो ही आधार थें पहला सत्य दूसरा प्रेम" सत्य ईश्वर है, सत्य ही धर्म है, सत्य ही परमगीत है, सत्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है।[2]

बाल्मीकि जी ने इन दो सूत्रों द्वारा समाज के प्रत्येक पक्ष को लिया। उन्होंने उसको शबरी के माध्यम से या वानरराज सुग्रीव अथवा विभीषण के माध्यम से प्रेमरूपी बन्धन के नियमों में बद्ध कर समाज को एक नई दिशा दी जिसकी तुलना नहीं की जा सकती और समय की तीक्ष्ण धारायें जिसे आज तक नही हिला सकी। उन्होंने जीवन के अनिवार्य पक्ष को

१. विश्वम्भर मानव, प्राचीन कवि, पृ. १४१

२. डॉ. मंजुला सहदेव, वाल्मीकि समाज की संस्कार विधि, पृ. १७.

जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचा दिया अर्थात् ''धर्म का अर्थ है धारण करना अथवा पालन करना, मनुष्य अपने जीवन में जिन नियमों एवं कर्त्तव्यों को धारण करता है व पालन करता है वह ही उसका धर्म है'"[३] अत: श्रीराम ने इस धरती पर अवतार लेकर मनुष्यों की भाँति कार्य करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन लोक उपकार के लिये समर्पित किया। उन्होंने 'रामायण' में यही सन्देश दिया कि जब तक जियो समाज की भलाई के लिए जियो और अपने अन्तिम उद्‌देश्य से मत भटको' भगवान् बाल्मीकि ने समाज को एक स्तर पर लाने तथा मनुष्य को उसके अन्तिम लक्ष्य (मोक्ष) तक पहुँचाने के लिए अपने समय की लोकभाषा संस्कृत को माध्यम बनाया क्योंकि वह जानते थे कि यदि समाज का तनिक मात्र भाग भी नैतिक मान्यताओं तथा जीवन के तथ्यों से अशिक्षित रहा तो समूचा समाज पंगु हो जायेगा। इस लिए 'रामायण' में उन्होंने आदर्श परिवार, आदर्श भाई, आदर्श पत्नी, आदर्श माता-पिता, आदर्श सखा, आदर्श सेवक का चित्रण किया। क्योंकि आदर्श व्यक्ति, आदर्श परिवार, समाज एवं राष्ट्र की आधारशिला है जिस देश के नागरिक जैसे होंगे उनका स्वरूप भी वैसा होगा।

बाल्मीकि 'रामायण' की राम कथा को आधार मानते हुए साहित्य में और भी बहुत से लेखकों ने राम के व्यक्तित्व को अनेक प्रकार से सँवारने, सिंगारने और रोचक बनाने में अपनी बुद्धि और कल्पना का पूरा प्रयोग किया। पंजाब में १५वीं शताब्दी से लेकर १९वीं शताब्दी तक प्रचुर मात्रा में हिन्दी-साहित्य रचा गया। मध्यकाल में यह अधिकतर ब्रजभाषा और गुरुमुखी लिपि में रचा गया। इस समय असंख्य काव्यग्रन्थ अनुदित और लिप्यन्तर हुए। पंजाब प्रान्तीय गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी भक्ति साहित्य के अन्तर्गत रामकाव्य की एक लम्बी परम्परा मिलती है, वास्तव में 'रामचरित' का यशोगान करने का मूल उद्‌देश्य आदर्श जीवन का प्रदर्शन सही जीवन मूल्यों तथा स्वस्थ परम्पराओं का प्रचार प्रसार करना था।[४]

पंजाब के कवियों ने जब-जब राम के चरित्र को काव्य का विषय बनाया उनकी दृष्टि भगवान् की लोकमंगलकारी रक्षक-शक्तियों की ओर ही रही। इसके अतिरिक्त पंजाब के 'रामकाव्य' में श्रद्धा-भक्ति का स्वर सुरक्षित तो है साथ ही राम के चरित्र का उद्‌घाटन उन्होंने वीर रस में भी किया है'"[५]

'आदिग्रन्थ' में राम के निर्गुण स्वरूप का चित्रण तो है ही साथ ही 'रामनाम' की महिमा का गायन है। तदनन्तर राम के अवतारी रूप, राम के योद्धा रूप, राम के दुष्ट संहारक रूप, सन्त उद्धारक और लोकरंजक रूप का वर्णन

३. डॉ. मंजुला सहदेव, वाल्मीकि समाज की संस्कार विधि, पृ. १७.

४. डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल, तुलसीदास का रामचरितमानस, पृ. ८३.

५. डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, पृ. ४९

और चित्रण पंजाब के कवियों की काव्यशोभा है। गुरु गोबिंदसिंह जी तो रामकथा का सूत्र लेकर राम के योद्धारूप तक पहुँचने में अधिक व्यग्र दीखते हैं।

राम के भव्य रूप के माध्यम से पंजाब के कवियों ने जन-मानस को समग्रत: प्रेरित एवं प्रभावित किया, जिनमें मुख्य थे-

हिरदेराम भल्ला :- हिरदेराम भल्ला प्रथम प्रणेता के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने 'हनुमन्नाटक' की रामकाव्य के अन्तर्गत रचना लिखी जिसमें उन्होंने सीता-विवाह से लेकर रावणवध तक की रामकथा कही है।

हरि जी, सोढ़ी मिहिरबान :- इनकी रचना, 'आदि रामायण' है। 'आदि रामायण' में इन्होंने १८ महत्त्वपूर्ण संदर्भों को उठाया है।

कपूरचंद त्रिखा :- इन्होंने लघुरचना 'रामायण' का प्रणयन किया है, इसमें इन्होंने दोहे, कवित्त, छप्पय, आदि छन्दों का प्रयोग किया है, जिनकी कुल संख्या १४५ है। इसमें रामजन्म से लेकर सीता सहित अयोध्या लौटने तक की कथा कही गई है।

गुरु गोबिंदसिंह जी :- गुरुजी की 'रामकाव्य' पर सबसे प्रसिद्ध रचना 'रामावतार' है। इसमें उन्होंने 'रामावतार' से लेकर सीता वनवास लवकुश से युद्ध, पुनर्मिलन और सर्वान्त तक कथा कही है। यह काव्य पंजाबी में प्रकाशित है। इसमें अनेक युद्धों का वर्णन है। इसमें राम की वीरभावना को चित्रित किया गया है।

साधु गुलाब सिंह निर्मला :- इन्होंने 'अध्यात्म रामायण' की रचना की। इसमें श्री राम के रूप का चित्रण, लक्ष्मण की क्रुद्ध वाणी तथा युद्धभूमि के दृश्य का वर्णन किया है।

कवि रामदास :- 'साररामायण' इनकी मूल कृति थी। इसमें कवि ने शृंगार, वीर तथा भक्ति रसों का सुन्दर प्रयोग किया है। पंजाब मे रचे गए रामकाव्य में 'साररामायण' का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

कविचन्द :- इनकी रामकथा से सम्बन्धित ३६ पन्नों में 'रामायण' कथा मिलती है। इसमें राम- चरित्र की सभी घटनाओं का वर्णन मिलता है।

कवि हरिनाम :- इनकी रचना 'बाल्मीकि. रामायण भाषा' है जो वस्तुत: बाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद है।

भाई संतोख सिंह :- इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें सिक्ख गुरुओं के जीवन, इतिहास का पौराणिक इतिहास के साथ-साथ 'गुरु प्रताप सूरज' इनकी रचना भी है। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'आत्मपुराण' का भाषानुवाद किया। 'बाल्मीकि रामायण' का भाषानुवाद किया। कवि ने इसमें लंकाकाण्ड का संकेत दिया। 'बाल्मीकि रामायण' मूलत: करुणा प्रधान है।

प. रत्न हरि :- इनकी 'रघुवर पदरत्नावली' रघुवरलीला और विनयलीला, एक ही जिल्द में

बंधी हुई रचनाएँ हैं। 'रघुवर पदरत्नावली' में समूचा राम जीवन संकेतित है।

कवि हरिनाम :- इन्होंने केशवदास द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' को पुनः तैयार किया।

हरि सिंह :- इन्होंने 'रामकथा' के पात्रों को प्रतीक बनाकर अपनी रचना प्रस्तुत की। जिसमें इन्होंने श्री राम को आत्म और रावण को अहंकार माना है। रामकथा के सभी प्रसंगों को इन्होंने 'आत्म रामायण' में चित्रित किया है।

कवि बसावासिंह :- इन्होंने 'रामचरित रामायण' की रचना की। इसकी भाषा सरल ब्रज है। कहीं-कहीं पंजाबी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है।

कविनिहाल :- इनकी रचना 'रामायण रामचन्द्रोदय' है।

कवि कीर्ति सिंह :- इन्होंने तीन रामायणों की रचना की । (१) कीरत रामायण (२) अनूप रामायण (३) सतसैया रामायण। कीरत रामायण 'रामचरित मानस' पर आधारित है। 'अनूप रामायण' में घटनात्मकता की अपेक्षा श्रद्धाभक्ति को विशेष महत्त्व दिया गया है और 'सतसैया रामायण' में समूची रामकथा है।

श्रीनिवास उदासी :- इन्होंने 'सुखदायक रामायण' की रचना की। जो पंजाब में रचित रामकाव्य की अन्तिम कड़ी कही जा सकती है।

इस प्रकार बाल्मीकि रचित 'रामायण' के सामाजिक आदर्शों, संस्कारों आदि का प्रभाव पंजाब के जनमानस पर भी पड़ा। जिससे लोगों के संस्कारों और व्यवहारों में काफी लोच आ गई। अतः "पंजाब के कवियों का 'राम' अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है। इस तरह पंजाब में रचित रामसाहित्य में श्रद्धाभक्ति, निर्गुण-सगुण समन्वय, अन्याय-अत्याचार के विरोध का स्वर, अनीति के प्रति संघर्ष और भारतीय संस्कृति के माध्यम से सूर्य साक्षात्कार की दिशाएँ विशेष स्थान रखती हैं। अतः श्री राम व्यक्ति, सँस्था संस्कार और धर्म के रूप में आदर्श के प्रतीक हैं। पंजाबी लोकमानस इसी का दावेदार है"[६]

-०४ गोविन्द विहार आर. बी.दूनी चन्द रोड़, अमृतसर।

६. डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, पृ. १९९.

कवि कृष्णलाल कृत रामचरित : एक वैशिष्ट्य

– डॉ. सविता सचदेवा

हिन्दी रामकाव्य परम्परा में पंजाब के लेखकों का विशेषरूप से योगदान रहा है, और रामकाव्य परम्परा का आरम्भ वाल्मीकि-रामायण से माना जाता है। इससे पूर्व राम-कथा का कोई प्रौढ़ रूप हमें उपलब्ध नहीं होता। वाल्मीकि रामायण के अनन्तर रामकथा का व्यवस्थित रूप महाभारत के वनपर्व के अन्तर्गत रामोपाख्यान में मिलता है। संस्कृत साहित्य में रामकथा को विषयवस्तु बना कर महाकाव्य, नाटक इत्यादि कितनी ही कृतियाँ लिखी गईं। कालिदास कृत रघुवंश, कुमारदास कृत जानकीहरण, अभिनन्दन का रामचरित, भासकृत प्रतिमा नाटक, अभिषेक नाटक, भवभूति का महावीरचरित एवं उत्तररामचरित, दिङ्नाग कृत कुन्दमाला इत्यादि नाटक राम को केन्द्रित करके लिखे गये। ये ग्रन्थ संस्कृत साहित्य की शोभा बढ़ाते हैं। हिन्दी में रामकाव्य परम्परा का सूत्रपात स्वामी रामानन्द जी ने किया और इसका विशदतम रूप तुलसी की रचना रामचरितमानस में मिलता है। कवि केशवदास का नाम भी रामकाव्य के लिये विशेषरूप से उल्लेखनीय है। सत्रहवीं, अठारहवीं, उन्नीसवीं शताब्दी में पंजाब का भी रामकाव्य लिखने में विशेषरूप से योगदान है परन्तु वह अधिक देवनागरी लिपि में नहीं रचा गया। क्योंकि उस समय पँजाब में गुरुमुखी एवं फारसी लिपियों का प्रयोग होता था और तब मुस्लिम कवियों का प्रभाव था। हिन्दी विद्वान् गुरुमुखी से अनभिज्ञ थे और पंजाबी विद्वान् व्रजभाषा से। उस समय श्री कृष्णलाल ऐसे कवि थे जिन्हे दोनों भाषाओं का ज्ञान था। उन्होंने १८वीं शती के उत्तरार्ध में रामचरित्र की रचना की। यह मूलतः अमृतसर निवासी थे। इनके काव्य की भाषा सरल ब्रजभाषा है जो गुरुमुखी से प्रभावित है। रामचरित्र रचना कलेवर में संक्षिप्त है जो महाभारत के वनपर्व के रामोपाख्यान पर आधारित है। परन्तु कवि ने वाल्मीकि एवं तुलसी रामायणों में आये प्रंसगों का भी अधिकतम उल्लेख कर कुछ परिवर्तन करके उन्हें मौलिकता का पुट दे दिया है। श्री कृष्णलाल ने रामचरित्र की कथा को अन्य रामायणों की तरह काण्डों में न बांट कर कथा-प्रवाह के सात सामान्य भाग कर दिये। प्रथम भाग में राम-रावण की उत्पत्ति, ताडका-सुबाहु-वध, सीता-स्वयंवर एवं राम के अयोध्या लौटने तक की कथा है। यह भाग १०६ छन्दों में लिखी गई है। कथा के द्वितीय भाग में ३५१ छन्द हैं उसमें राम वनवास से लेकर लंका पर चढ़ाई तक की कथा का वर्णन है। इसमें लेखक ने बड़ी तीव्रता से राम-वनवास का प्रसंग उपस्थित कर के वन में भटकते राम-लक्ष्मण सीता का बड़े मनोयोग से चित्रण किया है। इसमें मायामृग का पीछा किये जाने पर सीता द्वारा डांट कर लक्ष्मण का राम के पीछे भेजना तथा रावण द्वारा सीताहरण आदि मार्मिक प्रसंग है। इसी भाग में श्री राम द्वारा लंका जाने का मार्ग न मिल सकने के कारण क्रोध के कारण अग्निबाण द्वारा सागर को सुखाने की धमकी है और भय से युक्त सागर प्रकट

हो कर श्री राम की स्तुति करता है। इसमें सागर का श्री राम के प्रति समर्पणभाव दिखाया है।[1] सागर प्रभु राम से प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मेरा अपराध क्षमा करो। मुझपर अपना सेवक जान कर कृपा करो।[2]

कथा का तीसरा सर्ग २४० छन्दों में लिखा गया है इसमें समुद्र पर सेतु-निर्माण की कथा से लेकर कुम्भकर्ण की मृत्यु तक की कथा का वर्णन है। जिसमें नल-नील द्वारा सागर पर पुल बनाना और पत्थर पर राम-नाम लिख कर तैरते दिखाना कवि का श्रीराम के प्रति भक्ति और समर्पण भाव दिखाई देता है। वे कहते हैं कि श्री राम की कथा लिख कर मैं जन्म-मरण के आवागमन से छूट जाऊंगा।[3] यम के पाशबन्धनों से मुक्त हो जाऊंगा। तीसरे सर्ग में रामसेना द्वारा लंका पहुँचना, विभीषण द्वारा सीता को लौटाने का परामर्श, श्रीराम द्वारा अंगद को रावण दरबार में दूत बना कर भेजना, कुम्भकर्ण से युद्ध और उसका मरना इत्यादि घटनाओं का वर्णन है। चौथे सर्ग में ६३ छन्दों में कथा का वर्णन है इसमें कुम्भकर्ण की मृत्यु पर रावण का दुःखी होना इन्द्रजीत द्वारा युद्ध में जाना और मेघनाद का लक्ष्मण द्वारा युद्ध में मरना इत्यादि घटनाओं का वर्णन है।

पाँचवे सर्ग में १५९ छन्द हैं जिसमें रावण-वध तक की कथा का वर्णन है। इसी सर्ग में लक्ष्मण का मूर्च्छित होना, हनुमान जी का गंधमादन पर्वत से संजीवनी लेकर आना आदि घटनाओं का वर्णन है। छठे सर्ग में ७६ छन्द हैं जिसमें कवि ने विभीषण को लंका का राज्य सौंपना, सीता को प्राप्त करना, सीता की अग्निपरीक्षा लेना, ब्रह्मा द्वारा श्रीराम की स्तुति का वर्णन उपलब्ध होता है। सातवें और अन्तिम सर्ग में उत्तरकथा चित्रित की गई जिसमें भी ७६ छन्द हैं। इसमें पुष्पक विमान द्वारा राम, लक्ष्मण और सीता का अयोध्या लौटना, हनुमान् जी द्वारा भरत को रामागमन की सूचना देना और राम, लक्ष्मण और सीता द्वारा परिवार तथा सभी माताओं को मिलना और उनका आशीर्वाद ग्रहण करना और सुग्रीव अंगद एवं हनुमान को बहुमूल्य उपहार दे कर विदा करना आदि घटनाओं का वर्णन है।

इस प्रकार रामचरित्र की कथावस्तु महाभारत के रामोपाख्यान एवं रामायण तथा रामचरितमानस से प्रभावित है। रामचरित्र की कथा भी कवि ने ऋषि मार्कण्डेय के मुख[4] से सुनवाई जिसमें श्री राम तथा रावण के जन्म की कथा है। रामोपाख्यान में भी ऋषि मार्कण्डेय महाभारत में युधिष्ठिर की मनोऽवस्था को सम्बल देने के लिये कथा कहते हैं। जयद्रथ से द्रोपदी को छुड़वाने के पश्चात् युधिष्ठिर के मन में परपुरुष द्वारा द्रोपदी के स्पर्श का दुःख है उसी को दूर करने के लिये मार्कण्डेय कथा सुनाते हैं। कहते हैं कि श्री राम ने भी युधिष्ठिर की भान्ति अपने राज्य एवं पत्नी को खोया था तथा १४ वर्ष वनवास भोगा था।[5] श्री राम जन्म, विश्वामित्र का दशरथ की राजसभा में पधारना, यज्ञरक्षा हेतु राम और लक्ष्मण को लेकर जाना, मार्ग में ताडकावध और अहिल्या का उद्धार, सीता स्वयंवर का निमंत्रण, धनुषभंग, राम-सीता विवाह और परशुराम से भेंट यह सभी प्रसंग कवि कृष्णलाल जी ने रामायण और

---

१. जगदीस जगदपति जगनाइक। विस्वुंभर सुख विध सुख दाइक।
नर हर निरवरं निरंकारं। अचुत सुख रूप धरण धारं।। २/३४४-३४९

२. हे प्रभो मोहि पाप खिमा धरियो। अपना पहिचान क्रिपा करो।। २/३५०

३. छूट परहि जम के स्त्रमै जनम मरण मुकताहि।
क्रिसनलाल भजि विसन को विसनपुरी महि जांहि। ।७./७६

४. अथ रामचरित्र बरननं, मारकण्डे मुखाति। मूलपाठ। पृ. २८ कृष्णलाल: रामचरित्र

५. महाभारत ३/२५८, १-३

रामचरित से लिये हैं जिसमें कुछ परिवर्तन करके उन्हें परम्परित ढंग से पाठकों के समक्ष पेश किया है। रामचरित्र का तीसरा चौथा तथा पाँचवा सर्ग शेष सर्गों की अपेक्षाकृत दीर्घ है और युद्धों से भरा पड़ा है। सम्भवतः कवि की रुचि युद्ध-चित्रण एवं अस्त्र-शस्त्र चालन में रही हो। इन तीनों सर्गों में वीर, रौद्र एवं बीभत्स रसों का कवि ने प्रयोग किया है। यथा-

अंगद तन जिउ फूले पलासा।
असुर सूर हि रणमांहि प्रकासा।[6]
रितक वीर दौरिओ बलवाना।।
एक लात सो ता रथ तोरिओ।।[7]

इसमें रौद्र और बीभत्स रस के दर्शन होते हैं। कवि ने राम-रावण युद्ध में अन्य कवियों की तरह बलप्रयोग के साथ छल प्रयोग और मायावी आचरण का भी आश्रय लिया है। यथा मेघनाद राम और लक्ष्मण के प्रहारों से बचने के लिये मेघ में छिप कर वर्षा करता है।[8] जिसमें केवल बाण चलते दिखते हैं चलाने वाला अदृश्य है। इस प्रकार रावण मायावी राम-लक्ष्मण बना कर पद्मावत राक्षस से उनके सिर कटवा कर सीता के सम्मुख फैंकवाता है।[9] माया की वह रचना केवल सीता को भय से आक्रान्त करने के लिये तो थी। कवि का सम्बन्ध पंजाब से होने के कारण रामचरित्र में पंजाबी संस्कृति की झलक कुछ स्थलों पर दृष्टिगोचर होती है। जैसे रथ घोड़े चडि मंगते,[10] मंगन टहल,[11] इकली[12] इत्यादि पंजाबी शब्दों की झलक इनके काव्य में दिखाई देती है। पंजाब की परम्परा है कि अधीनता स्वीकार करने वाला मुख में तृण तथा गर्दन में पट डाल कर शरण में आता है। जब रामचरित्र के पांचवे सर्ग में रावण का वध होता है तो सब राक्षसगण अपने शस्त्र त्याग कर मुख में तृण डाले[13] राम की शरण में आ जाते हैं। कवि ने पंजाबी युक्त ब्रज भाषा में मुहावरे और लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है। जैसे श्री राम सीता से फेरे के समय भीड़ का दृश्य चित्रित करते हुये 'पग परि पग परही' मुहावरे का प्रयोग एवं सीता को रावण के चुंगल से छुड़ाने के लिए[14] 'गाई छडावो सिंघ ते' आदि मुहावरों का सुन्दर प्रयोग कृष्णलाल कवि की कल्पना के परिचायक है। उपमाओं की भी कवि ने रामचरित्र में झड़ी लगा दी है। जैसे जिउ पंकज बिन जल मुरझाई। तिउ मुख राम विनु सीआ दिखाई।।[15] जल बिनु मीना[16] अवधि पुरी सुरलोक सम। चन्द्रमुखी, म्रिगनैना, चतुरानन आदि समासों का भी प्रयोग कवि ने रामचरित्र में करके अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

छन्दों में दोहा चौपाई, मोदक, भुजंग नराज छंद[17] आदि का प्रयोग किया गया है। 'जीवन झूठ मरण सच मानो आदि सूक्तियों का भी कवि ने रामचरित्र में प्रयोग किया है। इस प्रकार कवि कृष्णलाल ने अपने ग्रन्थ में श्रीराम को पूर्ण अवतार और पूर्ण ब्रह्म रघुवर कह कर अपनी पूरी भक्ति और श्रद्धा प्रकट की है और राम के अवतारत्व को उजागर किया है।

-सरूप रानी सरकारी कॉलेज, (महिला) अमृतसर। दूरभाष: ९५०१५-००४८८

६. रामचरित्र, ३/१२२ ७. वही, ३/१२३-१२४ ८. वही, ३/१४०, १४२
९. माया के दो सीस करि लखमण राम सरुप।
पद्मावत बड़ि माया धारै। सीस बनाये नीक प्रकारै। ३/१५४-१५५
१०. रामचरित्र पृ. ३८ ११. वही, टहल पृ. ४४ १२. वही, पृ. ५१
१३. केते डार ससत्रि सरणाए भये। अधीन मुख में तृण पाये।। रामचरित्र ५/१५८
१४. वही, १/८४ १५. वही, २/११५ १६. वही, १/१६५ १७. वही, पृ. ७९-८०

बृहत् पंजाब में रचित राम-साहित्य के प्रमुख स्वर

– डॉ. विनोद कुमार

पंजाब की इस पवित्र धरा को ऋषियों-मुनियों, पीरों-फकीरों और गुरुओं के साथ-साथ राष्ट्र-रक्षकों, योद्धाओं की कर्मस्थली होने का भी गौरव प्राप्त है। विश्व के सर्वप्रथम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' की ऋचाएं भी यहीं से सम्पूर्ण संसार को सम्प्रेषित हुई हैं। इसी प्रकार सदियों से सत्य, सेवा, संस्कार और परोपकार की भावना से परिपूर्ण अनन्य सद्ग्रन्थों की एक दीर्घ परम्परा देने का श्रेय पंजाब की इस मिट्टी को है। कभी नाथों-सिद्धों और योगियों की वाणी ने जन-जन को उपकृत किया है तो कभी सूफियों, सन्त एवं कभी गुरुओं की पवित्र वाणी ने उत्कृष्ट आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक ज्ञान से सिक्त रसपान कराया है।

पंजाब में पन्द्रहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक प्रचुर मात्रा में हिन्दी-साहित्य रचा गया। मध्यकाल में यहां पर अधिकतर ब्रजभाषा और गुरुमुखी लिपि में साहित्य रचा गया, असंख्य काव्य-ग्रन्थ अनूदित और लिप्यन्तरित हुए। पंजाब-प्रान्तीय गुरुमुखी लिपि में भी उपलब्ध हिन्दी भक्ति-साहित्य के अन्तर्गत रामकाव्य की एक लम्बी परम्परा मिलती है। वास्तव में रामचरित का यशोगान करने का मूल उद्देश्य आदर्श-जीवन के सर्वांग का प्रदर्शन एवं जनता में नीति-विवेक, सही जीवन-मूल्यों तथा स्वस्थ परम्पराओं का प्रचार-प्रसार करने की धारणा रही है। पंजाब से इतर कवियों ने जब-जब भी राम के चरित्र को काव्य-विषय बनाया, उनकी दृष्टि भगवान् की लोकमंगलकारी रक्षक-शक्तियों की ओर ही अधिक रही है, जबकि राम के अवतारी रूप, राम के योद्धा रूप, राम के दुष्ट-संहारक, सन्त उद्धारक रूप का वर्णन एवं चित्रण पंजाब के कवियों की विशिष्टता रही है। पंजाब में रचित रामकाव्य की उपर्युक्त वीररस से परिपूर्ण अभिव्यंजना यहां की परिस्थितियों का परिणाम है। लेकिन ऐसा नहीं है कि मात्र इसी रूप को पंजाब के रामकाव्य में देखा गया हो। पंजाब में रचित रामकाव्य के विविध सुरों और स्वरों के सन्दर्भ में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व सम्बद्ध साहित्य का एक बार पुनः मूल्याँकन कर लेना अपेक्षित भी है और आवश्यक भी है।

पंजाब में रामकाव्य-परम्परा का लेखन गुरबाणी में उपलब्ध होता है, जहाँ 'हुकमै होई दस अवतारा' कहते हुए श्रीराम के अस्तित्त्व को स्वीकारा गया है। श्री राम से सम्बद्ध अनेक प्रसंगों का उल्लेख गुरबाणी में विशेषतः दुष्ट-दलन और लोक-रक्षक के प्रतीक रूप में सुलभ है। पंजाब की इस भूमि पर रचित रामकाव्य-परम्परा को सर्वसुलभ कराने वाले चिन्तकों में श्री मनमोहन

सहगल तथा श्री हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी का नाम अग्रणीय है, जिन्होंने भक्तिकालीन परम्परा में पंजाब के अवदान को सामने लाने का दुर्लभ एवं प्रसंशनीय कार्य किया है। हमारा यह प्रपत्र भी उन्हीं विद्वानों के ही श्रम की छाया, प्रेरणा और पूरक है।

कवि हिरदेराम भल्ला कृत 'हनुमन्नाटक' में भी राम के चरित्र का बखान मिलता है। कवि ने सीता-राम विवाह, वनागम, सीता-हरण, बालि-वध, लंका-दहन, सेतु-बन्ध, अंगद प्रसंग आदि के अतिरिक्त राम-रावण युद्ध सहित रावण-वध का सुन्दर एवं प्रभावी चित्रण किया है। इस प्रकार कवि का उद्देश्य श्रीराम के धर्म हेतु लड़ने वाले वीर योद्धा रूप में वीररस का परिपाक करना रहा है। साथ ही विभिन्न प्रसंगों में करुणा, भयंकर, अद्भुत आदि अनेक रसों का भी सुन्दर समन्वय देखा जा सकता है।

रामकाव्य-परम्परा में सोढी मिहिरबान का नाम भी महत्त्व रखता है, जिन्होंने 'आदिरामायण' नाम से रामकथा की रचना की है। यदि शुद्ध रूप से रामकाव्य रचना की बात करें तो इस रचना को पंजाब में रचित रामकाव्य सम्बन्धी प्रथम कृति होने का श्रेय दिया जाता है।

प्राचीन पंजाब के लाहौर में सौलह सौ दस के आस-पास होने वाले कवि कपूर चन्द त्रिखा द्वारा रचित एक लघु रचना रामायण के रूप में उपलब्ध है, जिसमें दोहे, छप्पय, कवित्त आदि के माध्यम से सम्पूर्ण रामकथा का संक्षिप्त किन्तु मार्मिक वर्णन मिलता है। इस रचना में श्रीराम की श्रद्धायुक्त भक्ति का परिपाक ही अधिकांशत: हुआ है, किन्तु इसके अतिरिक्त लक्ष्मण-मूर्छा में करुणा और भ्रातृ-प्रेम, हनुमान् द्वारा पर्वत उखाड़ लाने में अद्‌भुत, राम-रावण युद्ध में वीर रस का भी व्यंजन दिखाई देता है।

सन्त-सिपाही दशम पिता गुरु गोबिन्द सिंह जी कृत 'रामावतार' रामकाव्य परम्परा की अनुपम कड़ी है। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने पौराणिक अवतारों की कथा को 'चौबीस अवतार' शीर्षक के अन्तर्गत चित्रित किया है। इनमें श्रीराम के चरित्र में उनकी विशेष रुचि दिखाई देती है। गुरु जी की स्वयं धर्म, दया और दुष्ट-दलन प्रतिज्ञा की विचार-दृष्टि के कारण श्रीराम का चरित्र-चित्रण उनकी कलम की विशेष-शोभा बनी है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र की आदर्श जीवनगाथा के बिना चौबीस अवतार रचना तो क्या, सम्पूर्ण भारतीय साहित्य एवं संस्कृति ही पंगु रह जाती है। रामावतार अपने आप में एक अलग प्रबन्ध काव्य है।

इस रचना में गुरु गोबिन्द सिंह जी ने राम के जीवन के प्राय: सभी रंगों को समेटने का प्रयास अत्यन्त हृदयस्पर्शी ढंग से किया है। मातृ-पितृ भक्त श्रवणकुमार की कथा से आरम्भ कर सीता के भूमि-प्रवेश तक के कथानक को अपनी रचना में सफलतापूर्वक गुरु जी ने समेटा है और लगभग सभी रसों का उद्रेक उनकी रचना 'रामावतार' में सुलभ होता है, परन्तु उनकी विशेषतया: दृष्टि श्रवणकथा, राम-जन्म, सीता-स्वयंवर, अवध-

प्रवेश, वनवास, वन-प्रवेश, खरदूषण-वध, सीताहरण, सीता की खोज, बाली-वध, सीता-खोज में हनुमान् की सफलता, प्रहस्त-युद्ध, कुम्भकरण का वध, त्रिमुण्ड-युद्ध, महोदर मन्त्री का युद्ध, इन्द्रजीत-युद्ध, अतिकाव दैत्य-युद्ध, मकाराक्षस का युद्ध, रावण-युद्ध, सीता-मिलन, अयोध्या आगमन, माता-मिलन, सीता-वनवास, लवकुश से युद्ध, पुन: अयोध्या-प्रवेश, सब का अन्त, माहात्म्य आदि के माध्यम से अनेक रस एवं स्वर सफलतापूर्वक बिखेरे हैं, जिनमें वात्सल्य, शृंगार, करुण, भयानक, वीर, वीभत्स, अद्‌भुत, वैराग्य एवं शान्त रसों का पूर्ण परिपाक देखा जा सकता है। यद्यपि गुरु जी ने अपनी इस रचना 'रामावतार' में विभिन्न रसों को लिया है, किन्तु उनकी दृष्टि विशेषतया वीर-रस पर रही है, जो उनके व्यक्तित्त्व से मेल भी खाता है।

बिल्कुल सत्य है कि 'रामावतार' में रीतिकालीन-बोध होते हुए भी समृद्धि और सामन्ती वातावरण की अपेक्षा परिवेशानुसार वीर-भावना और चरित-नायक राम का वीररूप चित्रित हुआ है। वे राम को राजा, उदार, सुशील, भक्तवत्सल आदि दिखाते हुए भी पुरातन धारणा के अनुरूप एक ऐसा अवतार मानते हैं, जो परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम् धरती पर अवतरित होते हैं।

गुरु जी को राम का दुष्ट-संहारक और धर्म-रक्षक रूप ही अधिक आकर्षित करता है-

राम परम पवित्र है रघुवंश के अवतारा।
दुष्ट दैतन के संघारक संत प्रान अधारा।।

कवि के रूप में भी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी को धर्म और उसकी रक्षा के लिए युद्ध ही पसन्द है। श्रीरामचन्द्र द्वारा किया गया युद्ध गुरु जी की कलम द्वारा अत्यन्त भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया है-

स्री रघुनंदा को भुज ते जब घोर सरासन बान उड़ाने।
भूमि आकाश पतार चहूं चक पूर रहे नहीं जात पछाने।

अन्तर्साक्ष्यों एवं बाह्यसाक्ष्यों के आधार पर श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के ही समकालीन कहे जाने वाले कवि कृष्ण लाल द्वारा रचित रामचरित्र नाम से भी एक रामकथा उपलब्ध होती है। महाभारत के वनपर्व में अंकित रामकथा को आधार बनाकर कवि कृष्ण लाल ने राम की कथा का अंकन भाषानुवाद के रूप में किया है। वनपर्व में रामोपाख्यान (पाण्डव पुत्रों को ऋषि मार्कण्डेय द्वारा सुनाई रामकथा) के भाषानुवाद रूप में अलग प्रतिलिपि की गई है।

प्रस्तुत कथा में गुरु गोबिन्द सिंह जी के सम्पर्क से कवि की लेखनी ने वीर-रस का उत्साहपूर्ण चित्रांकन किया है। इसके साथ ही श्रद्धा-भक्ति और करुणा का समावेश भी इस कथा की विशेषता है। १८वीं शताब्दी में बृहत् पंजाब के (लाहौर) के निवासी साधु गुलाब सिंह निर्मला को उन कवियों में स्थान प्राप्त है, जिन्होंने पुराण शास्त्र एवं वेद-वेदांग की पृष्ठभूमि पीठिका पर सुन्दर ब्रजभाषा में अनन्य रचना की और भक्ति, शृंगार, ज्ञान तथा प्रेम की अजस्र धारा बहाई।

इनके द्वारा रची गई रामकथा वेदव्यास कृत 'अध्यात्म-रामायण' का मौलिक उद्भावनाओं से युक्त एक स्वतन्त्र भाषानुवाद माना जाता है। इस रचना में पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र की सामाजिक उज्ज्वलता पर प्रकाश डाला गया है। कवि प्रायः नैतिक दृष्टि से चरित्रांकन करता है।

पटियाला के रहने वाले कवि रामदास जी एक दीवाना साधु थे, जिनका पटियाला दरबार में भी जिक्र होता रहा है। इनकी रचना 'सार-रामायण' में भक्ति के दोनों ही रूप सगुण और निर्गुण देखे जा सकते हैं। सम्पूर्ण कथा को सात काण्डों में बाँटा गया है। तुलसीकृत रामायण के अनुसार ही उनके नामकरण भी किए गये हैं। इस कृति में कवि ने श्रृंगार तथा वीर रसों का सुन्दर परिपाक प्रस्तुत किया है।

अमृतसर से सम्बन्ध रखने वाले कवि संत सिंह की कृति रामाश्वमेध में कवि ने सम्पूर्ण कथा को गति के साथ बढ़ाते हुए प्रमुख रूप से श्रीराम द्वारा किये गये अश्वमेध को केन्द्र में रखा है, जिसके माध्यम से भक्ति और नीति के स्वरों का सन्धान अधिकांशतः किया है।

रामकथा को वाल्मीकि की देन बताने वाले कवि भाई सन्तोख सिंह ने वाल्मीकि कृत रामायण का भाषानुवाद दोहा-चौपाई के रूप में करने का सुन्दर उपक्रम किया है। वाल्मीकि की भान्ति ही कवि सन्तोख सिंह ने करुणा के स्वरों को ही प्रमुखता दी है।

कपूरथला नरेश निहालसिंह के दरबारी कवि हरिनाम ने रीतिकालीन कवि केशव की 'रामचन्द्रिका' का भाषानुवाद प्रस्तुत कर रामकाव्य की परम्परा को आगे बढ़ाया है। इस रचना में कवि ने तत्कालीन भाषा-साहित्य और समाज के स्वरूप-बखान पर अधिक बल दिया है।

कुरुक्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले कवि रामसिंह ने भी इस दिशा में काम करते हुए रामकथा को नये अन्दाज में प्रस्तुत किया है। वर्ष के बारहमहीनों के क्रम से उन्होंने बारहमासा की तर्ज पर 'लघु रामायण' की रचना की है। इस रचना में कवि ने श्रृंगार तथा वीर रस के साथ भक्ति और करुणा को साथ रखने का प्रयास किया है।

रामकाव्य परम्परा में श्री निवास उदासी की 'सुखदायक रामायण' की भी गणना होती है। इस रचना को कवि ने गुरुमुखी अक्षरों में लिपिबद्ध किया है, जिसमें रामचरितमानस का प्रभाव देखा जा सकता है। उदासी सम्प्रदाय से सम्बद्ध होने से कवि का मन शान्त और वैराग्य भाव की ओर कुछ अधिक रहा है, जो स्वाभाविक भी है। इस रचना में कवि की परम्परा बद्धता एवं श्रद्धा भक्ति-अभिभूत मन का अनुमान सहज ही हो जाता है।

इस प्रकार पंजाब में रचित रामकाव्य की इस परम्परा पर दृष्टिपात करने के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि राम के आदर्श रूप को सामने रख कवियों ने लोक-नेतृत्व के लिए एक मॉडल जनता के सामने रखने का उपक्रम किया। अनीति, अत्याचार, अनाचार और सांस्कृतिक

पतन की रोकथाम के लिए श्रीराम एक ऐसा अस्त्र उन्होंने चलाया जिसके प्रभाव से भारतीय जनता अपनी सांस्कृतिक विरासत को संभाले रखने के लिए सजग हुए और विकटतम परिस्थितियों के बीच भी उन्होंने अपनी परम्परा और मूल्यों को बचाए और बनाए रखने में सफलता पाई, जिसमें कहीं न कहीं इन रामकाव्यकारों के कविकर्म का भी योग स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

पांच नदियों की भूमि यानि पंजाब को ऋषियों-मुनियों गुरुओं, पीरों-फकीरों की चरण-रज के स्पर्श का सौभाग्य प्राप्त है। यहां से सम्बन्ध रखने वाले साहित्यकारों ने संवेदना के गहन स्तरों का मन्थन, चिन्तन-मनन किया है और अपनी लेखनी से सम्पूर्ण संसार को असीम ज्ञान-राशि प्रदान की है, जो जन-जन के जीवन के प्रत्येक अंग को संचालित एवं नियन्त्रित करती है। जीवन के अनेक रंगों और स्वरों का सन्धान पंजाबी संवेदना से युक्त रचनाकारों ने लोक-चेतना, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उत्कृष्टता के लिए अनेक सन्दर्भों को विषय बनाया है। रामकथा युगों से एक आदर्श कथा के रूप में जनता-जनार्दन के समक्ष रही है, जिसको सर्वाधिक अनुकरणीय माना गया है। शील, सौन्दर्य और शक्ति का जो स्रोत रामकथा में बहता है, वही किसी न किसी रूप में पंजाब की इस पावन भूमि में भी सदियों से बहता है। यही कारण है कि पंजाब की भूमि रामकथा के प्राचीनतम रूपों के साथ-साथ प्रत्येक अवधि के विभिन्न पडाव अनेक नये ग्रन्थ देती रही है। यद्यपि पंजाब में रचित रामकाव्य में हम भक्ति, वैराग्य, ज्ञान-विज्ञान, व्यक्ति-समाज आदि के अनेक भाव एवं रस के सोते बहते पाते हैं, किन्तु प्राचीन काल से भारत का प्रवेशद्वार होने और प्रत्येक संकट और आक्रमणकारी के लिए ललकार और युद्धक्षेत्र बना रहने से रामकथा के विशिष्ट भाव, राम के युद्धवीर रूप को इन रचनाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। सैंकड़ों आक्रमणकारियों, दर्जनों क्रूर शासकों से प्रताड़ित एवं शोषित पंजाब की इस मिट्टी में दया, ममता और परोपकार से संयुक्त हमेशा से विद्यमान शौर्य, स्वाभिमान के संस्कार को पुनः पुनः जगाने के लिए साहित्यकारों के सामने रामकथा एक आदर्श के रूप में विद्यमान रही है, जिससे प्रेरित होकर प्रत्येक काल के कवियों ने रामकथा को अपनी-अपनी भाषा में विविध शैलियों और लिपियों में कलमबद्ध किया है और समय, स्थान और काल की परिस्थितियों के अनुरूप विविध स्वर देने का सफल उपक्रम किया है।

-कला एवं भाषा संकाय, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)
मोबा: ८८४७६-०२१५५, ९८७६७-५८८३०

दशमगुरु श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी द्वारा रचित रामावतार में भ्रातृप्रेम

–डॉ. सलोनी

संस्कृत-साहित्य के 'आदिकाव्य' के नाम से प्रसिद्ध 'वाल्मीकीयरामायण' को आधार बनाकर अनेक महाकाव्यों, नाटकों, चम्पूकाव्यों आदि की रचना होती आई है। यह रचना केवल संस्कृतभाषा में ही न होकर हिन्दी, बंगाली, कन्नड़, पंजाबी आदि विभिन्न भाषाओं में भी हुई है, जिससे कि इस आदिकाव्य का महत्त्व सिद्ध होता है।

खालसा पन्थ के संस्थापक एवं सिक्खों के दशमगुरु श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी ने भी रामकथा के महत्त्व को अभिव्यक्त करते हुये इसे युगों-युगों से अटल तथा नित्य नियमपूर्वक पठनीय माना है–

राम कथा जुग जुग अटल सभ कोई भाखत नेत।।[1]

इसी बात को ध्यान में रखते हुये उन्होंने पंजाबीभाषा में रामावतार की विस्तृत चर्चा की है। गुरुगोविन्दसिंह जी इस कथा के अन्त में कहते हैं कि नैनादेवी पहाड़ी की तलहटी में प्रवाहित होने वाली सतलुज नदी के किनारे पर श्री भगवद्-कृपा से वे श्री रामकथा के प्रसङ्ग को पूर्ण कर पाये हैं। साधु को असाधु के रूप में न देखते हुये, संवादों को वाद-विवाद का विषय न बनाते हुये तटस्थभाव से यह सारा ग्रन्थ भगवद्-कृपा से सम्पूर्ण किया है–

नेत्र तुंग के चरण तर सतद्रव्य तीर तरंग।।
स्त्री भगवत पूरन कीयो रघुबर कथा प्रसङ्ग।।
साध असाध जानो नही बाद सुबाद बिबादि।।
ग्रंथ सकल पूरण कीयो भगवत क्रिया प्रसादि।।[2]

आचार्य यास्क ने 'भ्राता' शब्द का निर्वचन करते हुये हमें निर्देश दिया है कि भाई को भाई इसलिये बोलते हैं क्योंकि एक तो यह सम्पत्ति में हिस्सेदार होता है तथा दूसरे उसका पालन-पोषण अपेक्षित होने के कारण वह 'भ्राता' कहलाता है–

भ्राता भरतेर्हरति कर्मणः।
हरते भागं भर्त्तव्यो भवतीति वा"[3]

उपर्युक्त 'भ्राता' पद की यास्ककृत वैज्ञानिक व्युत्पत्ति भाई-भाई में वैर-विरोध की समाप्ति हेतु अत्यन्त लाभदायक है। परन्तु वर्तमान समाज में भाई-भाई का कलह सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। पैतृकसम्पत्ति को लेकर भाईयों में झगड़े साधारण-सी बात हो गयी है। भाई-भाई में तो स्नेह की पराकाष्ठा वाल्मीकीयरामायण में दिखाई देती है, उसका आज पूर्णतः लोप हो चुका है। युद्धभूमि में मूर्च्छित लक्ष्मण के लिये विलाप करते हुये श्रीराम कहते हैं कि मर्त्यलोक में ढूंढने पर मुझे सीता समान दूसरी स्त्री तो मिल सकती है, परन्तु लक्ष्मण तुल्य भाई का मिलना असम्भव है।[4]

गुरुगोविन्दसिंह जी द्वारा रचित रामावतार में भाई-भाई का जो सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया है, वह अत्यन्त सराहनीय है। श्रीराम एवं सीता के विवाहोपरान्त पिता दशरथ अपने पुत्र श्रीराम को लेकर अवधपुरी के राजमहल में पहुँच गये। अवध पहुँचकर लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न का विवाह भी आयोजित कर दिया गया–

१. रामावतार, ८५८ २. रामावतार, ८६१-८६२ ३. निरुक्त, ४.४ ४. वाल्मीकिरामायण, ६.४९.६

...आनि मिले सभ हीं अगूआ ।।

सतु कउं पितु लै पुर अउध सिधारे ।।

स्मह़ू मिलि गिल कीयो उछाहा ।।

पूत तिहूं कउ रच्यो बियाहा... ।।[5]

अत: जब बारात पूर्णत: सज-धज कर जाने को तैयार थी, तब सभी राजकुमार विदा होने की आज्ञा लेने के लिये पहले पिता दशरथ के महल की ओर गये तथा वहां से उनका आशीर्वाद लेकर अपने ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्र के महल में पहुँचे। वहां तीनो भाईयों ने श्रीराम के चरणों में अपने शीश को झुकाकर वड़े भाई के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया-

...बिदा मांग जब गए राम घर ।।

सीस रहे धर चरन कमल पर ।।[6]

श्रीराम ने भी बड़े भाई के कर्त्तव्य को निभाते हुये उन सब का सिर चूमा, प्रेमपूर्वक उनकी पीठ पर हाथ रखा, उन्हें पान प्रस्तुत करके अत्यन्त स्नेहपूर्वक उनको विदा किया-

राम बिदा करे सिर चूम्यो पान पीठ धरे।

आनन्द सो भरे लै तंबोर आगे धरे हैं ।।[7]

जब ये तीनों राजकुमार राजा जनक की कन्याओं से विवाह करके वापिस लौटते हुये अवधपुरी के समीप पहुँचे तो सर्वप्रथम भ्राता श्रीराम ने उत्सुक्तापूर्वक उनके अयोध्या पहुँचने से पूर्व ही मार्ग में भ्रातृप्रेमवश उनसे भेंट की-

...अउध पुरी नीअरान जही जब ।।

प्रापत भए रघुनन्द तही तब ।।[8]

भ्राता श्रीराम के वनवास की बात को सुनकर अनुज लक्ष्मण जी अत्यन्त क्रोधित होकर कहते हैं कि "मैं प्रभु श्रीराम के चरणों को नहीं छोड़ सकता, मैं भी वन जाऊँगा। यदि मैं पीछे हटकर घर में बैठ गया तो मेरे इस कुकर्म से रघुवंश को लज्जित होना पड़ेगा। मैं सच कह रहा हूँ कि मैं घर पर नहीं रहूंगा। यदि भगवान् राम के साथ जाने का वह अवसर चूक गया तो फिर वह पुन: हाथ नहीं आयेगा"-

लोग कुटेव लगे उन की,

प्रभ पाव तजे मुहि कियों बन ऐहै ।।

जउ हट बैठ रहो धरि मो,

जस कियों चलिहै रघुबंस लजेहै ।।

काल ही काल उचारत काल,

गयो इह काल सभो छल जैहै ।।

धाम रहो नही साच कहों,

इह घात गई फिर हाथ न ऐहै ।।[9]

गुरु गोविन्दसिंह जी ने बड़े भाई को पिता-तुल्य माना है। इसीलिये उन्होंने सुमित्रा के माध्यम से लक्ष्मण को उपदेश दिया है कि वह श्रीराम तथा सीता के प्रति सेवक की भान्ति विनम्र बना रहे तथा सियापति श्रीराम को पितातुल्य मानते हुये उनकी प्रत्येक बात को सत्य करके जाने तथा भाई की सेवा में लीन रहते हुये घर को जंगल तथा जंगल को घर की भान्ति समझे-

दास को भाव धरे रहीयो सुत,

मात सरूप सीआ पहिचानो ।।

तात की तुल्हि सीआ पति कउँ,

करि कै इह बात सही कर मानो ।।

जेतक कानन के दु:ख है,

सभ सो सुख कै तन पै अनमानो ।।

---

५. रामावतार, १५७-१५८

६. वही, १६८

७. वही, १६९

८. वही, १७९

९. वही, २५३

राम के पाइ गहे रहीयो बन,

कै घर को घर कै बन जानो ।।[10]

जब भरत को वसिष्ठ ऋषि ने सन्देश भेजकर बुलाया तो वे भाई श्रीराम के नाम का स्मरण करते हुये अवधपुरी के लिये चल पड़े, जिससे उनका भ्रातृप्रेम अभिव्यक्त होता है–

कोप जियं जग्यो ।। धरम भरमं भग्यो ।।
कासमीरं तज्यो ।। राम राम भज्यो ।।[11]

अयोध्या में मातृक पिता को देखकर वे कैकेयी को कोसते हुये कहते हैं कि उसने अत्यन्त बुरा काम किया है। अब भरत वहीं रहेगा, जहां उसका ज्येष्ठ भ्राता राम है–

का कर्यो कुकाज ।। क्यो जीऐ निलाज ।।
मोह जबै तही ।। राम है गे जही ।।[12]

शुक्रनीति का कथन है कि– अपने भाई के विद्यमान रहते पिता का सारा अर्जित धन मेरा ही हो, किसी दूसरे भाई के हाथ कुछ न लगे, दूसरा भाई मेरे अधीन रहे, मैं किसी के अधीन न रहूँ, इसे अलग हटाकर सम्पूर्ण धन का मैं अकेले ही उपभोग करूँ–– इस प्रकार जो भाई परस्पर विचार रखते हैं, वे एक–दूसरे के परम–शत्रु कहलाते हैं।[13]

इस धारणा के विपरीत भ्रातृप्रेम को अभिव्यक्त करते हुये भरत का कथन है, मैं वनवासी श्रीराम को जानता हूँ, जो सुख और दु:ख को बराबर समझते हैं तथा दूसरों के सुख–दु:ख को अपना सुख–दु:ख मानते हैं। मैं भी अब पेड़ों की छाल के वस्त्र पहन कर वन में जाऊंगा और रघुपति के साथ वन में फलाहार करूंगा। ऐसा कहते हुये भरत ने घर का त्याग कर दिया और तन के आभूषणों को तोड़कर फैंकते हुये वल्कल वस्त्र धारण कर लिये–

तिन बनबासी रघुबर जानै ।।

दुख सुख समकर दुख दुख मानै ।।

बलकर धर कर अब बन जैहैं ।।

रघपत संग हम बन फल खैहैं ।।

इम कह बचना घर बर छोरे ।।

बलकल धर तन भूखन तोड़े ।।

अवधिस जारे अवधिस छाड्यो ।।

रघपति पग तर कर घर मांड्यो ।।[14]

ऐसा कहते हुये भरत ने घर त्याग दिया तथा वन में श्रीराम के पास पहुंच गये। वहां जब भरत ने अपनी आँखों से योद्धाओं के शिरोमणि श्रीराम को देखा, तब सभी कामनाओं का त्याग करते हुए भरत ने उनके प्रति प्रेम के कारण धरती पर माथा टेककर उन्हें प्रणाम किया–

द्रिग जब निरखे भट मण रामं ।।

सिर धर टेक्यो तज कर कामं ।।

इम गति लखि कर रघुपति जानी ।।

भरथर आए तज रजधानी ।।[15]

राजपाट का मोह छोड़कर भ्रातृप्रेम का परिचय देते हुये भरत ने ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम से हठ को त्याग कर घर चलने का आग्रह किया–

अब घर चलीए रघुबर मेरे ।।

तजि हठि लागे सभ पग तेरे ।।[16]

भाई के बिना अपनी व्यथा को प्रदर्शित करते भरत का कथन है, "हे राम! मैं आपके चरण स्पर्श कर कहां जाऊँ । आपसे अलग होते हुये

१०. रामावतार, २६० ११. वही, २७३ १२. वही, २७६
१३. शुक्रनीति, ४.१.६–७ १४. रामावतार, २७७–२७८ १५. वही, २८२
१६. वही, २८४

मुझे क्या लज्जा नहीं होगी? यह आप ही मुझे बतायें। मैं अत्यन्त दीन, मलिन तथा गतिहीन हूँ। आप राज्य को सम्भालें और अपने अमृत तुल्य चरणों से अयोध्या में शोभायमान हों''–

जाउ कहां पग भेट कहउ तुह ।।
लाज न लागत राम कहो मुह ।।
मै अत दीन मलीन बिना गत ।।
राख लै राज बिखै चरनामत ।।[१७]

ऐसा कहते हुये भरत ज्येष्ठ भ्राता के चरणों में नतमस्तक हो गये। श्रीराम के न मानने पर राम के कथनानुसार भरत ने ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम की बात का सम्मान करते हुये श्रीराम की पादुकायें ले लीं तथा अयोध्या नगर की चिन्ता न करके नगर के बाहर रहने लगे। सिर पर जटाओं का जूड़ा धारण कर सारा राजकार्य भ्राता श्रीराम की पादुकाओं को समर्पित कर दिया। दिन में उन चरण पादुकाओं के आश्रय से भरत राजकार्य सम्भालते और रात्रि में श्रीरामभजन करते। भरत का शरीर राम के वियोग में अस्थि पिंजर बन गया, परन्तु फिर भी उन्होंने मन में सदैव श्री रामचन्द्र को बसाये रखा। श्रीराम के प्रेम में उनकी आंखों से आँसू प्रवाहित होते थे तथा आभूषण रहित कण्ठ से प्रभु पद-रचना सुनायी पड़ती थी–

मात समोध सु पा वर लीनी ।।
अउर बसे पुर अउध च चीनी ।।
सीस जटान को जूट धरे बर ।।
राज समाज दीयो पऊवा पर ।।
राज करे दिनु होत उजिआरै ।।
रैनि भयो रघुराज संभारै ।।
जजर भयो झुर झंझर तिउ तन ।।
राखत स्त्री रघुराज बिखै मन ।।
बैर न केरत बिंद निकंदत ।।
भासन कंठि अभूखन छंदत ।।[१८]

जब रावण सीता का हरण कर लेता है तो चतुर्दिश में सीता को न देखकर राम दु:खपूर्वक धरती पर गिर पड़े, तभी अनुज भ्राता लक्ष्मण ने उन्हें उठाकर अपने वक्षस्थल से लगाया तथा उन्हें धैर्य बंधाते हुये सीतान्वेषण के लिये प्रेरित किया–

...चहूँ ओर सुधार निहार फिरे ।।
छित उपर स्त्री रघुराज गिरे ।।
लघबीर उठाइ सु अंक भरे ।।
मुख पोछ तबै बदना उचरे ।।
कस अधीर परे प्रभ धीर धरो ।।
सीअ जाइ कहा तिह सोध करो ।।[१९]

एक स्थल पर रावण ने युद्धभूमि में लक्ष्मण के हृदय पर प्रहार करके उसे घायल कर भूमि पर गिरा दिया, जिसके परिणामस्वरूप लक्ष्मण मूर्च्छित हो गया। किन्तु श्रीराम ने समझा कि लक्ष्मण वीरगति को प्राप्त हो गया है। भाई की मृत्यु को सहन न करते हुये श्रीराम ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर शत्रु का हनन किया एवं धरती इस प्रकार थरथरा उठी मानों प्रलय आ गया हो–

मागड़दी मूरछा भयो लागड़दी,
लछमण रण जुझ्यो ।।
जागड़दी जाण जुझि गयो,
रागड़दी रघपत इम बुझ्यो ।।
कागड़दी कटक कपि भज्यो,
लागड़दी लछमण जुज्झ्यो जब ।।

१७. रामावतार, २८७
१८. वही, २९०-२९२
१९. वही, २५६-२५७

रागड़दी राम रिस भर्यो सागड़दी,
गहि अस्सत्र सस्सत्र सब ।।
धागड़दी धउल धड़ हड्रयो,
कागड़दी कोड़ंभ कड़क्क्यो ।।
भागड़दी भूमि भड़हड़ी पागड़दी,
जन पलै पलट्टयो ।।[20]

रणक्षेत्र में शत्रुओं को भगाकर राम ने मूर्च्छाग्रस्त अपने प्राणों से भी प्रिय अनुज भाई लक्ष्मण को देखा–

सागड़दंग सूरानुजं आन पेखा ।।
पागड़दंग प्रानान ते प्रान लेखा ।।[21]

हनुमान् द्वारा लाई गई संजीवनी बूटी लक्ष्मण के मुख में रखते ही लक्ष्मण एवं भाई राम को आराम मिला–

बागड़दंग बिसल्लया मागड़दंग मुक्खं ।।
डागड़दंग डारी सागड़दंग सुक्ख ।।[22]

अयोध्या में भ्राता राम के आगमन की बात सुनकर भरत ने दौड़ते हुये श्रीराम के चरणों का अपने शीश से स्पर्श किया–

जटं धूर झारी ।। पगं रामे रारी ।।
करी राज अरचा ।। दिजं बेच चरचा ।।[23]

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गुरु गोविन्दसिंह जी ने रामावतार के अन्तर्गत भ्रातृप्रेम का जो आदर्श प्रस्तुत किया है, वह आधुनिक समाज के लिये अत्यन्त अनुकरणीय है। भाई को पितातुल्य मानना, उसके आगे नतमस्तक होना आदि भ्रातृत्व के सन्देश गुरु गोविन्दसिंह जी के भ्रातृभाव सम्बन्धी भावनाओं के ही परिचायक हैं।

–असिस्टैण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

२०. वही, ५६३–५६४
२१. वही, ५७७
२२. वही, ५८५
२३. वही, ६७७

आढ्यो वापि दरिद्रो वा दुःखितः सुखितोऽपि वा ।
निर्दोषो वा सदोषो वा वयस्यः परमा गतिः ।

रामायण किष्कि० ८८

मित्र चाहे धनिक हो अथवा निर्धन हो उसमें चाहे दोष हों अथवा वह सर्वथा दोषरहित हो। मित्र मित्र ही है। व्यक्ति के लिए वह परम गति अर्थात् अत्यधिक सहारा होता है।

पंजाबरचित राम-साहित्य में श्रीराम का मर्यादित चरित्र व उसका समाज पर प्रभाव

– डॉ. सुनीला शर्मा

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारतीय संस्कार के मेरू हैं। श्रीराम को चरित्र-नायक बनाकर रचे गए साहित्य की एक सुदीर्घ परम्परा भारत की प्राचीनतम भाषा देववाणी संस्कृत से लेकर आधुनिक प्रादेशिक भाषाओं एवं बोलियों का शृंगार बनी रही है। यह आज की वास्तविकता है कि भारतीय जनजीवन में श्रीराम ऐसे लोकनायक का स्थान ग्रहण कर चुके हैं, जो सर्वगुण सम्पन्न, लोकरक्षक, मर्यादा-पुरुषोत्तम और अद्य-अनीति विनाशक हैं।

जहाँ तक हिन्दी रामकाव्य परम्परा में पंजाब के कवियों-लेखकों के योगदान का प्रश्न है तो उत्तर है कि इनका रामकाव्य-लेखन में अपना एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। कुछ विद्वान् तो यह भी मानते हैं कि इसका श्रीगणेश ही पंजाब में हुआ था। वे लोग जिला अमृतसर के प्रसिद्ध रामतीर्थ पर वाल्मीकि रामायण की रचना हुई स्वीकार करते हैं। बाल्मीकि को पंजाब का मानना तथा आदिरामायण की जन्मभूमि होने का गौरव पंजाब को मिलना, यह समृद्ध-रामकाव्य परम्परा के अस्तित्व का परिचायक है।

पंजाब के प्रबुद्ध कवियों ने जिन वर्ण्य-विषयों पर लेखनी उठायी, उनमें विष्णु के चौदह कलासंपूर्ण अवतार लोकरक्षक भगवान् रामचन्द्र की पावन जीवन-गाथा का विशिष्ट स्थान है। वास्तव में रामचरित का यशोगान करने मूलोद्देश्य आदर्शजीवन के सर्वांग का प्रदर्शन एवं जनता में नीति, विवेक, सही जीवन मूल्यों एवं स्वस्थ परम्पराओं का प्रचार-प्रसार करने की धारणा रही है। पंजाब के कवियों ने जब-जब भी श्रीराम के चरित्र को काव्य का विषय बनाकर उसका चित्रण किया है तब-तब उनकी दृष्टि में भगवान् राम की लोक-मंगलकारी रक्षक शक्तियों की ओर ही रहा है। भारतीय समाज के समस्त, आदर्शों को राम चरित्र में ही खोजा एवं ढाला गया है।[1]

नर से नारायण तक के अन्तराल को राम-चरित्र की पावनता से भरा गया और जीवन के सामूहिक उत्थान का एकमात्र आधार राम-कृत्यों को स्वीकार कर लिया गया। पंजाब में रचित रामसाहित्य में रामचरित्र का उल्लेख उन सब स्थितियों को सामने रख कर किया गया जब मुगलई अत्याचारों के विरोध में श्रीराम का वह रूप विकसित किया जो समस्त मानव का त्राता बन सके, कष्टों और अवसाद में डूबी जनता को उबार सके तथा दलित, उपेक्षित जातियों को गले लगा सके। ब्राह्मणवाद के अत्याचारी घेरे में उपेक्षित हिन्दुत्व को जिलाने के लिए वानर-निषाद-रिक्ष आदि जातियों को अंग लगाने वाले लोकरक्षक श्रीराम तथा मुस्लमानों द्वारा दिए गए इस्लाम अथवा मृत्यु के विकल्पों के सम्मुख अत्याचारी का दमन करने वाले रावण-विजेता राम ही एकमात्र ऐसे महापुरुष थे, जिनका चरित्र आदर्श तथा विश्वास का द्योतक था। समाज का नेतृत्व करने वाले तत्कालीन कवियों ने इसीलिए

१. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य ! पंजाब का सन्दर्भ

राम को अपना चरित्र-नायक बनाया।

पंजाब की स्थिति देश के अन्य भागों से अधिक शोचनीय थी। अत्याचारियों के राष्ट्र-प्रवेश का सिंहद्वार होने के नाते पंजाब के जन-मानस के सम्मुख समस्या अधिक विकट थी। इसीलिए यहां के कवि की वाणी बसन्तमल्हार ना होकर शंखनाद फूंकती थी। अत्याचारी के दमन की प्रेरणा राम-चरित्र का मूल थी यही कारण था कि पंजाब का कवि कृष्णचरित्र की अपेक्षा श्री राम-चरित्र से अधिक प्रभावित था और राम के उदात्तजीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का काव्यात्मक प्रचार-प्रसार करने में मग्न था। इसके लिए रामचरित्र अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक था। पंजाब के कवियों ने राम को चरित्रनायक बनाना स्वीकार किया। विभिन्न कोणों से राम का जीवन आदर्श का शिक्षक बना। परिवार, समाज तथा लोक-धर्मों का उदय राम-जीवन के माध्यम से होने लगा। कर्तव्य और कर्मशील जीवन रामकथा के संदर्भों में से उजागर हुआ। मध्यकालीन प्रवासी जाति जो विदेशियों के अत्याचार व अनीति के पाश में बंधी स्वतंत्रता के लिए तड़पती और जुझती रही थी- सूर्यवंशी श्री रामचरित्र के साथ साक्षात्कार करने के पश्चात् निद्रा त्याग कर न केवल उद्‌बुद्ध हुई बल्कि अनुचित का सशक्त विरोध कर सकने में समर्थ हो गई।

उनके पौराणिक नेता राम ने साक्षात् अनीति के प्रतीक रावण को जड-मूल से मिटा दिया था। यही प्रेरणा है, यही वह स्फूर्ति है जो संस्कारबद्ध किसी की जाति को इतिहास, पुराण के सदंर्भों से मिलती है और इसी को पंजाबियों में पुनः पुनः जगाने के लिए दूरदर्शी कवियों ने रामकथा को, रामचरित्र को अपना वर्ण्य-विषय बनाया- इस बात का प्रमाण हमें पंजाब में उपलब्ध राम-काव्य से जुड़े काव्यों में मिलता है उदाहरण के लिए फिर चाहे वह ''प्रबोध-चन्द्रोदय'' हो या ''हनुमान्नाटक'' बाल्मीकि रामायण'' हो या ''अध्यात्म रामायण'' ''पद्‌मपुराण'' हो या गुरु गोबिंदसिंह का ''रामावातार''। सबका स्तर, सबका लक्ष्य और सबकी उमंग एक समान ही है- कवि उदासीन हो, निर्मला सिक्ख या ब्राह्मण- सबका लक्ष्य रामचरित्र से स्फूर्ति पाना और जागरण का आह्वान करना ही है।

पंजाब में रामकाव्य में श्रद्धाभक्ति का स्वर भी उक्त संस्कारों की ही देन है। कवि हरि सिंह की रचना ''आत्म-रामायण'' राम नाम प्रताप प्रकाश इस तथ्य के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। पंजाब का जनमानस श्रीराम से इसीलिए परिचित है कि श्रीराम के चरित्र में सभी देवता शक्तियों सहित विराजते हैं- जो उन्हें संघर्ष करने के लिए शक्ति प्रदान करते हैं। श्री राम सब जगह रमण करते हैं, वह सर्व-व्यापक हैं, इसीलिए राम हैं- पंजाब के लोक-मानस को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए हर काल में, हर समय में हर कदम पर जिस प्रेरणा और जागृति की अपेक्षा है वह राम के चरित्र में ही उपलब्ध है।

अतः हम कह सकते हैं कि श्री राम व्यक्ति, संस्था, संस्कार और धर्म के रूप में आदर्श के प्रतीक हैं व उनका पंजाबी जनमानस पर अपना एक विशिष्ट अद्‌भुत प्रभाव सदैव ही बना रहा था- है व रहेगा।

-हिन्दी विभाग, सरूप रानी सरकारी (स्त्रियां) कॉलेज, अमृतसर।

रामलुभाया आनंद 'दिलशाद' कृत पंजाबी रामायण में राम का चरित्र

–सुश्री अमनप्रीत कौर

भारतीय साहित्य में रामकाव्य की दीर्घपरंपरा रही है। रामकाव्य से संबंधित आदिकाव्य होने का गौरव 'वाल्मीकि रामायण' को प्राप्त है। वाल्मीकि के द्वारा आदिकाव्य रामायण में भिन्न-भिन्न पात्रों का जैसा चरित्र काव्यबद्ध किया गया है, उसमें समय-समय पर आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहे हैं। अलग-अलग धर्म, सम्प्रदाय से संबंध रखने वालों ने राम-कथा के पात्रों को अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार अपनी विचारधारा के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया।

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में भक्ति की जो धारा प्रवाहित हुई, उसे दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लाने का श्रेय रामानंद को जाता है। रामानंद, रामानुजाचार्य की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए विष्णु के अवतार श्रीराम की भक्ति का प्रचार करते रहे। प्राकृत, अपभ्रंश और अन्य भारतीय भाषाओं में रामकाव्य लिखने की परंपरा मिलती है। संस्कृत में लिखी गई 'वाल्मीकि रामायण' के बाद तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' का नाम उल्लेखनीय है, जिसकी रचना अवधी भाषा में हुई। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ ही भारत के निकटवर्ती देशों में भी रामकथा को लेकर काव्य लिखा गया है। पंजाबी भाषा का साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। पंजाबी रामकाव्य की भी एक सुदृढ़ परंपरा देखने को मिलती है। जिनमें 'सुंदर रामायण', 'अमर रामायण' रामगीत आदि प्रमुख रचनाएं हैं। इसी कड़ी में श्री रामलुभाया आनंद 'दिलशाद' कृत 'पंजाबी रामायण' का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। पश्चिमी पंजाबी भाषा में लिखी गई इस रामायण में कवि ने किस्सा-शैली का प्रयोग किया है। मूलत: कवि ने इसे फारसी लिपि में लिखा था। सात काण्डों में विभाजित यह रचना पंजाबी रामकाव्य की अन्यतम उपलब्धि है।

'पंजाबी रामायण' आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण से प्रभावित है। जहां 'वाल्मीकि रामायण' का सम्पूर्ण वातावरण लौकिक है और श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किये गये हैं। वैसे ही रामलुभाया कृत 'पंजाबी रामायण' का सम्पूर्ण वातावरण लौकिक है। डॉ. रवीन्द्र सिंह के शब्दों में –'वाल्मीकि रामायण में जहां समूचा वातावरण लौकिक है रामचन्द्र केवल मर्यादा पुरुषोत्तम, नर-श्रेष्ठ हैं, वहीं तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' की कथा अलौकिकता और भक्ति-भाव से भरपूर है और रामचन्द्र को पूर्ण ब्रह्म और अवतार रूप में चित्रित किया गया है[१]।' राम-कथा का आधार स्तंभ श्रीराम का चरित्र निरूपण रहा है। कवियों ने इस प्राचीन आख्यान के माध्यम से भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्यों से परिचित करवाने के साथ-साथ श्रीराम के उदात्त चरित्र के माध्यम से आदर्श को प्रस्तुत करना चाहा है। रामलुभाया कृत 'पंजाबी रामायण' में भी श्रीराम अवतार न होकर मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किये गये हैं। 'कविवर दिलशाद' ने राम के चरित्र में पूर्णत: मानवीय भावनाओं का आरोप किया है। सीता-स्वयंवर के अवसर पर श्रीराम एक साधारण मानव की तरह इज्ज़त मान-मर्यादा की बात करते हुए अपने डर को विश्वामित्र के समक्ष रखतें हैं:-

१. रवीन्द्र सिंह, राम काव्य, भाषा विभाग प्रकाशन पटियाला, १९७१ पृष्ठ-१४

धनश चुक्कणे दी नहिं हिम्मत
मैं नू इस्से गल्लने दिल डराया।
कितनी आउसी शरम दिलशाद उत्थे,
जा के धनश न जद उठायए।।[2]

कविवर दिलशाद ने राम के चरित्र को कहीं-कहीं आम-व्यक्ति के बहुत निकट ला रखा है। राम को विभिन्न अवसर पर आम-व्यक्ति की तरह सोच-विचार करते प्रतिक्रिया देते दिखाया गया है। सीता-स्वयंवर के अवसर पर जब श्रीराम धनुष उठाने के लिए जाते हैं तो रामचरितमानस के विपरीत वह डंड निकालते हुए अपनी वीरता प्रदर्शन करते हुए आम-व्यक्ति की तरह व्यवहार करते हैं। 'रामचरितमानस' जैसा मर्यादित रूप सीता-स्वयंवर के अवसर पर देखने को नहीं मिलता।

लए सुण जद रिशी दे बोल मितरा,
डंड कढदे कपड़े खोल मितरा।
वजदे खुशियां दे पए ढोल मितरा,
हत्थ जा के धनश नू पा देंदे।।
पकड़ धनश नूं फिर घुमाण लग्गे,
राजे विच्च दिल दे शरमाण लग्गे।
लोक जै-जै कार बोलान लग्गे,
मींह फुल्ला दा उत्ते बरसा देंदे।।[3]

'वाल्मीकि रामायण' में श्रीराम का चरित्र आदर्श पुत्र के रूप में स्थापित किया गया है जो भारतीय पारिवारिक जीवन और संस्कृति का एक उज्ज्वल प्रतीक है, महर्षि वाल्मीकि द्वारा स्थापित श्रीराम-चरित्र को तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में अपनी कवि-प्रतिभा के द्वारा और सजीवता प्रदान की। 'पंजाबी रामायण' में श्रीराम का पारलौकिक स्वरूप बहुत कम देखने को मिलता है। श्रीराम के लौकिक स्वरूप का चित्रण ही अधिकतर 'पंजाबी रामायण' में मिलता है। श्रीराम शूरवीर, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श राजा, धर्म-रक्षक के प्रतीक बन गये हैं। राम आदर्श-पुत्र की मिसाल तब कायम करते हैं। जब कैकेयी द्वारा अपने वचन की पूर्ति हेतु उन्हें चौदह वर्ष के वनवास के लिए राजा दशरथ के कहने पर वे पिता के वचन को पूरा करने को तत्पर दिखाई देते हैं। कैकेयी द्वारा किये जा रहे अन्याय को देखते हुए भी राम अपने माथे पर शिकन तक नहीं लाते।

लई सुण कैकई दी गल जदों,
अग्गों हस के एह सुणाया वे।
कर दे फिकर दिल दे दिलों दूर माताँ,
है मनझूर जो तूँ फरमाया वे।।[4]

वे पिता को चिन्ता न करने को कहते हैं। उनके वचन को झूठा न पड़ने देने के लिए, वे वन जाने के लिए शीघ्र तैयार हो जाते हैं। एक आदर्श-पुत्र की तरह वे पिता के लिए कुछ भी करने को उद्यत हैं-

उठो पिता जी फिकर नूँ दूर करके,
लई सुण सारी हुण गल्ल मैं ताँ।
दे देआ राज एह भरथ ताईं,
बैठा जंगल दा राज हां मल्ल मैं ताँ।।
बोल तुसां दा झूठ न हौण देसां,
लैसा सभ मुसीबतां झल्ल मैं ताँ।
हो के खुश दिलशाद कर देओ रुखसत,
पेआ हाँ वन नूँ हुण चल्ल मैं ताँ।।[5]

कहीं-कहीं 'रामलुभाया' जी ने राम-कथनों में आदर्श का पालन नहीं किया और श्रीराम को कैकेयी के विषय में अपशब्द बोलते हुए चित्रित भी किया है। सीता को वनवास की खबर देते समय राम के मुख से ऐसे शब्द निकलते कवि के

---

२. रामलुभाया आनंद 'दिलशाद', पंजाबी रामायण, विश्वेश्वरानंद वैदिक संस्थान प्रकाशन, प्रथम संस्करण-१९५७, पृष्ठ-३०
३. वही, पृ. - ३८ ४. वही, पृ. - ६२ ५. वही, पृ. - ६२

द्वारा दिखाये गये हैं -

मँगे जो मैथो देसाँ ओही तैनूँ ,
करसाँ कदी न झरा इन्कार रानी ।
अज राजतिलक दी खबर सुन के,
दित्ता उस पाखण्ड खिलार रानी ।।[६]

श्रीराम आदर्श भाई की मिसाल बनकर सामने आते हैं। 'पंजाबी रामायण' में श्रीराम वनवास के बाद लक्ष्मण के साथ जाने की जिद्द करने पर उसे वनवास के कष्टों से अवगत करवाते हुए उसे साथ नहीं ले जाना चाहते। इसमें उनका अपने भाई के प्रति प्रेम स्पष्टतः दिखाई देता है। वहीं युद्धकाण्ड में लक्ष्मण मूर्छा पर उनका विलाप भ्रातृप्रेम को उद्‌घाटित करता है। श्रीराम का भरत के प्रति प्रेम, विश्वास उसके लिए राज्य त्याग उनके आदर्श भाई होने के प्रमाण हैं। चित्रकूट पर्वत पर भरत, राम से जब मिलने आते हैं तब लक्ष्मण सेना को साथ देखकर गलत अंदाजा लगा बैठते हैं, पर राम एक क्षण के लिए भी विचलित नहीं होते।

श्रीराम एक आदर्श राजा के रूप में चित्रित किये गये हैं। वनवास मिलने पर जब प्रजा उनके साथ चली जाती है तो वह उनके प्रति चिंतित होते हुए उन्हें सोते हुए छोड़ चले जाना ही उचित समझते हैं-

देइए किऊँ तकलीफ फिर इन्हां ताई
बदले अंब दे अक्क नचोड़ना नहिं ।
सुता रैहन दिलशाद दे सुतआँ नूँ,
संग नाल असाँ कोई लोड़ नहिं ।।[७]

वह एक आदर्श राजनीतिज्ञ की तरह लंका पर आक्रमण करने से पहले यह पता लगाने के लिए कहते हैं कि सीता वहां है या नहीं। क्योंकि इस तरह आक्रमण करना अर्थहीन है। राजगद्दी पर बैठने के बाद उनके राज्य का जो वर्णन कवि ने किया है, वह एक खुशहाल राज्य है। जिससे उनके कुशल राजा होना प्रमाणित है :-

रामचन्दर माहराज जी तखत उत्ते,
लगे बैठ के राजकमान बेली ।
मुलक अमन अमान दे नाल वसदा,
न सी झुलम दा कोई निशान बेली ।।[८]

'पंजाबी रामायण' में श्रीराम का वीररूप भी उभर कर सामने आया है। कम उम्र में ताड़का, सुबाहु वध, शिव धनुष को उठाना और तोड़ना, खर-दूषण वध, कुंभकरण वध, रावण वध आदि प्रसंगों में उनका शूरवीर-रूप उभरकर सामने आता है। धनुष-विद्या में निपुण श्रीराम वीरता से राक्षसों का वध करते हैं।

संपूर्ण रामायण में बार-बार कवि ने धर्म-पालन पर जोर दिया है। इसी कारण श्रीराम धर्म-रक्षक के रूप में चित्रित किये गये हैं। जो पिता के वचन को निभाने के लिए धर्म का पालन करने के लिए किसी भी प्रकार की विपत्तियों को झेलने के लिए उद्यत दिखाये गए हैं।

'पंजाबी रामायण' में श्रीराम के लौकिक चरित्र को ही कवि ने उभारा है। वह मर्यादा- पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किये गये हैं। उनका पारलौकिक चरित्र कुछ ही प्रसंगों में आया है। पर चूंकि संपूर्ण 'पंजाबी रामायण' का वातावरण लौकिक है। इस कारण पारलौकिक प्रसंगों की ओर इतना ध्यान नहीं जाता। इस प्रकार श्रीराम का चरित्र लौकिक, स्वाभाविक, प्रभावशाली और सफल बन पड़ा है।

-प्राध्यापिका, जी. टी. बी. खालसा कॉलेज फार वूमैन, दसूहा (होशियारपुर)

६ रामलुभाया आनंद 'दिलशाद', पंजाबी रामायण, विश्वेश्वरानंद वैदिक संस्थान प्रकाशन, प्रथम संस्करण-१९५७, पृष्ठ-६७

७. वही, पृ -८४ ८. वही, पृ. -३२९

पंजाब में रचित रामकाव्य

– सुश्री आभा प्रभाकर

राम त्रेतायुग में हुए हैं। उनका जन्म डा. देवसहाय त्रिवेद कृत (*Indian Chronology*) के अनुसार ४३४२ ईसवी पूर्व चैत्र शुक्ल नवमी, अर्थात् (आज से २०१८) ६३६० वर्ष अयोध्या में हुआ। रामायण के रचयिता संस्कृत के आदिकवि ऋषि वाल्मीकि भी इसी काल में हुये। उस समय भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा आज के हिन्दुकश पर्वत से भी आगे तक विस्तृत थी। बहुचर्चित महाराज दशरथ की पत्नी कैकेयी (वितस्ता, झेलहम, चन्द्रभागा और चिनाव) के मध्यवर्ती प्रदेश (कैकय जनपद) के राजा अश्वपति की पुत्री थी। ये उल्लेखनीय है कि महाराजा अश्वपति, जिन्होंने अश्वमेव यज्ञ किया था, पक्षियों की भाषा के ज्ञाता थे। जो अपने आप में एक विशिष्ट उदाहरण हैं। अतएव आज जिसे हम पंजाब के नाम से जानते हैं। वह पांच नदियों की भूमि नहीं रही। उर्दू के सुप्रसिद्ध शायर प्रो. जगन्नाथ आज़ाद ने इस सम्बन्ध में ठीक ही कहा है–

इस मिट्‌टी में पहली सी तबो–ताब नहीं है।
'दो आब' है 'सैआब' है पंजाब नहीं है।

अर्थात् – पंजाब कहे जाने वाले आधुनिक पंजाब की मिट्‌टी में पहले जैसे चमक–दमक नहीं है। क्योंकि अब ये मात्र दो नदियों- (सतलुज और व्यास) तथा तीन नदियों रावी, चिनाब, और झेलम की भूमि रह गयी है।

वर्तमान पंजाब भारत और पाकि[illegible] अन्तर्गत विभाजित पंजाब है। उदाहरण के तौर पर भरत का ननिहाल (केकेय जनपद) लव और कुश के नाम पर बसे दो नगर लवपुर (लाहौर) कुशपुर (कसूर) आज पाकिस्तान (विभाजित पंजाब) में है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि प्राचीन काल में किसी राजा ने अयोध्या के नाम पर रावी के किनारे एक नगर बसाया था। जो आज अजोधन के नाम से जाना जाता है। कुछ दशक पूर्व यह चर्चा का विषय रहा। अमृतसर के समीप रामतीर्थ को भी श्रीराम से जोड़ा जाता है लेकिन तमस नदी के न होने के कारण विवादस्पद है।

पंजाब भारत का उत्तर पश्चिम सिंहद्वार कहा जाता रहा है। जबकि इस देश के मर्मस्थल पंजाब पर स्थल मार्ग से विदेशी शत्रुओं के कई प्रहार हुये उनके आघात का आवेग पंजाब ही ने सदैव अपना सीना तान कर सम्भाला। पंजाब की भूमि वीर–प्रसूता और गुरुओं की भूमि है। इसी भूमि पर ऋग्वेद की ऋचाओं का गम्भीर स्वर उद्घोषित हुआ। इसी भूमि ने संसार को पाणिनि, चरक, कौटिल्य, असंग, वसुबन्धु और ब्रह्मगुप्त जैसे रत्न दिए। इसी भूमि पर सिक्ख धर्म का उदय हुआ जिसके प्रवर्तन का श्रेय श्री गुरु नानक देव से श्री गुरु गोविन्दसिंह तक एक के बाद एक दस महान्

गुरुओं को जाता है, जो भगवान् राम के वंशज थे।

क्या भारतवर्ष को आज रामायण और श्रीरामचन्द्र का परिचय देने की आवश्यकता है? चाहे वेद, पुराण, महाभारत का नाम बहुत से लोगों को ज्ञात न हो। परन्तु रामायण तो पुण्य-सलिला गंगा की तरह पढ़े-लिखे और अनपढ़ सभी का तीर्थ है। कविवर रविन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा है कि भारत ने रामायण में जो चाहा वही पाया है। रामायण में वर्णित रामचरित ही रामकाव्य है। पंजाब में रामकाव्य की परम्परा का प्रारम्भ पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दी से माना जाता है जिसका श्रेय सिक्ख-गुरुओं को जाता है। सिक्ख-गुरुओं द्वारा रचे गये पद जिन्हें गुरुवाणी के नाम से जाना जाता है, में राम-नाम की महिमा को निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में व्यक्त किया गया है-

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट-घट में लेटा,
एक राम का सकल पसारा, एक राम सबसे न्यारा।।

यह उल्लेखनीय है कि गुरुवाणी का संकलन जिस ग्रन्थ में किया गया उसे 'गुरु ग्रन्थ साहिब' कहते हैं। गुरु ग्रन्थ साहिब में प्रथम गुरु नानक देव से लेकर दशम गुरु गोविन्दसिंह तक की वाणियों के अतिरिक्त कबीर, फरीद, आदि आदि निर्गुण सन्तों की वाणियां भी संकलित हैं।

श्री गुरु गोविन्दसिंह ने स्वयं को रघुवंशी बताया और ब्रज भाषा में 'रामावतार शीर्षक' रामकाव्य कृति की रचना की। राम के वंशज गुरुनानक देव, श्री गुरु तेगबहादुर और श्री गुरु गोविन्दसिंह के सिक्ख-साहित्य अध्ययन से पता चलता है कि इन तीनों गुरुओं ने अपने समय में श्री राम जन्म-भूमि की यात्रा भी की थी भाई मनी सिंह कृत पोथी जन्म साखी (१७८४ विक्रमी)। १८वीं शताब्दी के मध्य अयोध्या पहुँचने पर गुरु नानक देव ने मर्दाना से कहा- **मरदानिया! एह अजुधिया नगरी श्री रामचन्द्र जी की है सो चल इसको दरसन करीयए।** इसकी पुष्टि भाई बाला वाली तथा सुखबासी राम वेदी कृत **गुरुनानक वंश प्रकाश** द्वारा होती है।

इसी प्रकार गुरु-तीर्थ-संग्रह में नवम गुरु श्री तेग बहादुर के अयोध्या की यात्रा करने का वर्णन भी मिलता है। दशम गुरु गोविन्दसिंह ने तो अपनी आत्मकथा (विचित्र नाटक में) रामावतार का वर्णन करते हुए लिखा है-

यह हमारे बड़े है युगा-युगा अवतार
तिन के बंस बिखै रघ भयो।
रघबंशहि जिह जगहिचल्यो।
ता ते पुत्र होत भयो अब बर।
महारथी अरू महाधनुरधर।।
जब तिन भेस जोग को लयो।
राजपाट दशरथ को दयो।

२०वीं शताब्दी के प्रथम दशक में आर्यसमाज के कर्णाधार महात्मा हंसराज के ज्येष्ठ भ्राता लाला मुल्कराज भल्ला ने **'राम दर्शन'** शीर्षक से कविता लिखी जो बहुत ही लोकप्रिय हुई इस कविता में कवि ने राम के माध्यम से भारतवासियों के अतीत के गौरव को जागृत करने की और श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेने का सराहनीय प्रयास किया। यह कविता एक

पुस्तिका के रूप में लाहौर से प्रकाशित हुई और इसकी हजारों प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित की गईं। इसी मध्य स्वामी रामतीर्थ के परम मित्र उर्दू के दार्शनिक कवि अल्लामा इकबाल ने श्रीराम के अलौकिक व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक कविता लिखी। जिसका शीर्षक 'राम' है। इस कविता में अल्लामा इकबाल ने राम को इमामे-हिन्द कहा है-

है राम के वजूद पर, हिन्दोस्तां को नाज़,
अहले नज़र समझते हैं, उसको इमामे हिन्द।

जिसके फलस्वरूप उनके विरुद्ध कुफ्र का फतवा जारी किया गया था।

इसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के मध्य से कुछ वर्ष पूर्व अखण्ड भारत के अविभाजित पंजाब के सुप्रसिद्ध नगर भेरा में जन्में श्री राम लुभाया आनन्द 'दिलशाद' ने पंजाबी रामायण की लाहौर में रचना की। उर्दू लिपि में लिखी गयी यह रामायण वास्तव में वाल्मीकि रामायण का रूपान्तर है। जिसे १९५७ में विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर में प्रकाशित किया गया। यह उल्लेखनीय है कि विश्वविख्यात विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के संस्थापक स्वनामधन्य स्व. विश्वबन्धु जी के पूज्य पिताश्री स्वर्गीय श्री 'दिलशाद' उर्दू, फारसी के विद्वान् होने के साथ-साथ पंजाबी के भी सुप्रसिद्ध कवि थे। जिन्हें राम-काव्य की परम्परा को पंजाब में जीवित रखने का श्रेय प्राप्त है।

इससे सिद्ध होता है कि गुरु गोविन्दसिंह के बाद पंजाब में रामकाव्य लिखने का प्रवाह निरन्तर चलता रहा। इसी शृंखला में कवि हृदयराम भल्ला की रचना हनुमान्-नाटक बहुत प्रसिद्ध हुआ। कवि संतोख सिंह की रामकाव्य परम्परा में भी भूमिका सराहनीय रही, इन्होंने वाल्मीकि रामायण की करुणा-प्रधान रचना की।

कवि कपूर चन्द की लघु रचना रामायण, कवि कृष्ण लाल कृत, 'रामचरित', साधु गुलाब सिंह निर्मला कृत अध्यात्म रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त कवि हरिनाम ने महाकवि केशव की सुप्रसिद्ध कृति रामचन्द्रिका को पंजाबी काव्य में लिखा। इस दिशा में पंजाब में होने वाले अन्य कवियों जैसे सूरदास, साहिबराम, वीरसिंह बल, हरिसिंह, सन्त सिंह, नेपाल सिंह भाटिया (आरिफ) आदि ने भी पंजाब में रामकाव्य के प्रवाह को गतिशील रखने में अपना सराहनीय योगदान दिया है।

अन्त में राम बादशाह के नाम से प्रसिद्ध (*Multilingual Poet*) स्वामी रामतीर्थ के (राम) जिनकी पंजाबी रचनाओं का संग्रह वहदतनामा (२०१३) रामतीर्थ केन्द्र, सहारनपुर द्वारा प्रकाशित किया गया। अब निम्न पंक्तियों से लेखनी को विराम देती हूँ-

''राम से ग़र प्यार है, तो राम सा बनना भी सीख,
राम को दिल में बैठा कर, राम के औसाब सीख,
राम बनाना कुल जहां को, राम के जीवन से सीख,
ज़िन्दगी देगी मज़ा, लेकिन मज़ा लेना भी सीख।''

-रामतीर्थ केन्द्र, अम्बाला रोड़, सहारनपुर (उ० प्र०) मोबा.: ९८९७७-८०५४४

नागरी तथा गुरुमुखी लिपियों में पंजाब में रचित रामकाव्य

– डॉ. बलराज शर्मा

महर्षि वाल्मीकि की अलौकिक प्रतिभा ने रामकथा को ऐसा हृदयावर्जक एवं मर्मस्पर्शी स्वरूप प्रदान किया कि यह समग्र भारतीय जनता का कण्ठहार बन गई। भगवान् ब्रह्मा द्वारा महर्षि वाल्मीकि के प्रति प्रदत्त वरदानस्वरूप भविष्यवाणी कि जब तक इस भू पर पहाड़ स्थित रहेंगे तथा नदिएं प्रवाहित होती रहेंगी तब तक राम--कथा का प्रचार लोकों में होता रहेग–

यावत्स्थास्यन्ति गिरियः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

–वाल्मीकि रामायण ७/२/३६-३७

को सार्थक सिद्ध करते हुए संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश में रामकथा से अनुस्यूत महाकाव्यों, खण्डकाव्यों, श्लेष-काव्यों, चित्रकाव्यों, दूतकाव्यों, नाटकों, चम्पुओं के रूपों में सहस्रों कृतियों की रचना हुई। इसी परम्परा को अक्षुण्ण बनाते हुए ग्यारहवीं शती से लेकर अद्यावधि भारत के प्रत्येक प्रान्त में तथा उसकी विभिन्न भाषाओं तथा उपभाषाओं में भी प्रभूत मात्रा में रामकथा को आधार बना कर अनेकानेक रचनाओं का प्रणयन हुआ एवं हो रहा है।

भला पंजाब इस परम्परा से कैसे असम्पृक्त रह सकता था विशेषतया जब कि पंजाब (सप्त-सिन्धु) ऐसा प्रदेश है जिसको आर्यों की सभ्यता का उद्गम-स्थल[1] माना जाता है और भगवान राम जिसके पावनतम एवं उज्ज्वलतम आदर्श माने जा चुके हैं। राजनीतिक स्थिरता एवं अव्यवस्था तथा धार्मिक असहिष्णुता, उत्पीड़न और अत्याचार के कारण चन्दबरदायी के लगभग चार सौ वर्षों के पश्चात् का राम-कथा विषयक साहित्य लुप्त हो चुका है। संवत् १६०२ के पश्चात् राम-काव्य-प्रणयन परम्परा पुनः वेग से प्रवहमान हुई। चन्दबरदायी के पश्चात् अद्यावधि ज्ञात ११ कवियों ने १८५० ई० तक स्वरचित रामकाव्यों द्वारा हिन्दीभाषा को समृद्ध किया। इन कवियों की कृतियों का संक्षिप्त परिचय इनके हिन्दी के प्रति योगदान की महनीयता को प्रदर्शित करने में सहायक सिद्ध होगा।

चन्दबरदाई कृत रामावतार

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखते हैं, 'इनके पूर्वजों की भूमि पंजाब थी जहां लाहौर में इनका जन्म हुआ था।'[2] चन्दबरदाई ने अपने महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' के द्वितीय समय में दशावतार कथा के अन्तर्गत रामकथा विषयक लगभग १०० छन्द लिखे हैं। इन्हें हम अद्यावधि ज्ञात सामग्री के आधार पर

१. 'दी वैदिक एज' १ म भाग, आर.सी. मजूमदार, अपैन्डिक्स, पृष्ठ २१५-१७

२. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ. ३७, ११वां संस्करण संवत २०१४

पंजाब में रचित सर्वप्रथम रामकाव्य कह सकते हैं। कवि ने बाल, अयोध्या तथा अरण्य काण्डों की कथा अतीव संक्षिप्त रूप में केवल एक कवित्त (छन्द संख्या २६७) में वर्णित की है। इसी प्रकार सुन्दरकाण्ड तक की कथा भी एक ही छन्द (२६८) में समेट दी गई है। लंका तथा उत्तर काण्डों की कथा अधिक विस्तृत है क्योंकि इनमें कवि का प्रिय विषय-युद्ध वर्णन-विद्यमान है। सारी कथा दोहा, कवित्त, विराज, त्रिभंगी तथा भुजंग नामक छन्दों में निबद्ध है।

हृदयराम भल्ला कृत हनुमन्नाटक

हृदयराम भल्ला ने संवत १६८० में हनुमन्नाटक की रचना समाप्त की जैसा कि ग्रन्थ के अन्त में उन्होंने स्वयं लिखा है। संवत् विक्रम नृपति सहस षट संत असीह पर-

चैत्र चान्दनी इज छत्र जहांगीर सुभट पर।।
शुभ लच्छन दच्छन कवि राम विचच्छन।
कृष्ण दास तनु कुल प्रकाश जस दीपक रच्छन।।
रघुपति चरित्र तिन यथामति प्रगट करयो शुभ लगन गण।
दे भक्तिदान निरभय करहु जय रघुपति रघुवंश मण।।१४३।।

इसका वास्तविक नाम 'रामगीत' है जैसा कि श्री नन्दकिशोर देव ने स्वसम्पादित इस कृति की भूमिका में लिखा है, 'इस का नाम हनुमन्नाटक क्यों है, क्योंकि इसमें नाटकत्व की एक भी बात नहीं है। हां! सर्गों व काण्डों की जगह प्रथमोंक: द्वितीयोंक: आदि १४ अंक जरूर लिखे हैं, सो भी नाटकशैली के विरुद्ध हैं। पर, इसमें कवि का दोष क्यों नहीं समझा जाता है कि वह अपने ग्रन्थ की 'इतिश्री' में 'रामगीते' लिखते हैं अतएव इस ग्रन्थ का नाम यथार्थ में 'रामगीत' ही है।[3] कवि ने स्वयं भी १४वें अंक के ४२ वें कवित्त में इसका नाम 'रामचन्द्र गीत' लिखा है- 'रामचन्द्र रीति किये चौदही जु अंक तेऊ चौदही भुवन को कलंक दूर कर हैं।।४२।।

यह अभिमत अतिरञ्जनायुक्त नहीं कहा जा सकता। यदि हम कहें कि केवल इस अमूल्य ग्रंथ के आधार पर ही पंजाब हिन्दी संसार के सम्मुख अयन सिर गौरव से ऊंचा कर सकता है। कुछ उदाहरण हमारे मत की पुष्टि में तथा इसके काव्य सौष्ठव के उन्मीलन के हेतु प्रस्तुत हैं:-

कवित्त- दूबरी तो ऐसी देखी सुनो रघुराम जाके
आगे दूज शशि की कला तो अतिपीन है।
पीरी इह भांत जाते हद दी कुसुभ रंग आंसु न के
आगे मेघ सावन के हीन है।।
विरहा के श्वासन के आगे आग ऐसे जैसे महाहिम
बोल मुख श्वासन अधीन है।
जनक सुता को एक पतिव्रत शीश सुन और देख मैं
तो वारे पुर तीन है।। (षष्टांक १०८)

कवित्त- चंद्रमा चकोर जैसे गुड़ी बड़ा डोर
घनघोरन सों मोर देवता पियूष पान सों।
जैसे ऊख पूरव पान फूल जल रूख भूख देस कवि
जस सुनो वामन को दान सों।।
जैसे वेद ज्ञान निरमेख सम्मान जैसे कानन को तान
ज्यों सरोज भौंर मान सों।
जैसे वीर वीर सों ज्यों वारिध को तीर सों ज्यों ऐसी

३. नंद किशोर देव हनुमन्नाटक भाषा, प्रस्तावना, पृष्ठ १, ११ मार्च १८८१ ई. संवत १९५९

प्रीति लागी रघुवीर हनुमान सों।। (सप्तांक/१)

कपूरचन्द त्रिखा कृत रामायण

कपूरचन्द ने निम्नलिखित छप्पय में अपनी रामायण का रचना काल इस प्रकार दिया है:-

संवत सत्रा सै तीन नृपि बिक्रम की गणीऐ।
एक हजार पंचाहि चार सन तुरकी मनीऐ।
फरवर दी वैसाख चड़न रजानै गिआत।
सहिजहि बादसाह अदल आदल बिखिआत।

कवि ने अतीव संक्षेप में राम-कथा वर्णित की है। बालकाण्ड की सारी विस्तृत कथा केवल ८ दोहों तथा ७ कवित्तों में तथा अयोध्याकांड की कथा ३ कवित्तों तथा २ दोहों में समेट ली गई है। दो दोहों में राजजन्म तथा रामावतार के हेतुओं का वर्णन करके कवि सीधा विश्वामित्र प्रसंग की चर्चा करता है।

पुर अजुधिया भूप दसरथ रघवंसी राम चन्द
तारू ग्रह अवतार लीओ।
जनक सुअंबर संगरिख धनख तोरि सु विवाह कीओ।
परस राम सिउ जुध करि बन वस बांधिओ सेतु
चन्द अहलिया तारणो रावण मारणि हेतु।।६।।

पहले होते राज रिख पाछै भए ब्रह्म रिख नाम
जाको विस्वामित्र जानततिह सभहि।
उन आन कहिओ इक राकसी विगारे जगु बिना
तरे पूत राजा काहू सोन दबही।।

कपूरचन्द त्रिखा की भाषा में ब्रज तथा खड़ी बोली का मिश्रण है। फारसी तथा अरबी शब्दों को प्रचुर मात्रा में प्रयोग संक्षिप्त होता है। प्रमुख रूप से दोहे तथा कवित्त को ही कवि ने अपनाया है।

गुरुगोविन्द सिंह जी कृत दशमग्रंथान्तर्गत 'रामावतार'

वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण पर आधृत इस रचना में ८६४ छन्द हैं। इस का विषय-विभाजन अन्य रामकाव्यों के अनुसार काण्डों में न होकर प्रकरणों के अनुसार किया गया है जैसे (१) रामावतार (२) सीता स्वयंवर (३) अवध प्रवेश (४) वनवास (५) वन प्रवेश (६) खर दूषण युद्ध (७) सीताहरण आदि। कथानक में कुछ मौलिक उद्भावनाओं का समावेश हुआ है जैसे-

(१) लव को आश्रम में न देख कर ऋषि वाल्मीकि का हाथ में कुश लेकर लव जैसे बालक की सृष्टि करना (२) सखियों के आग्रह पर सीता द्वारा रावण का चित्र बनाने पर राम का सीता के प्रति क्रुद्ध होना तथा अपमानित सीता का पृथ्वी में समाना।

यद्यपि गुरुजी ने मुख्य रूप से ब्रजभाषा को ही अपनाया है तथापि उन्होंने फारसी, अरबी, संस्कृत, अपभ्रंश, डिंगल तथा पंजाबी के प्रचलित एवं अप्रचलित शब्दों का प्रयोग करने में संकोच नहीं किया। कहीं-कहीं उन्होंने पूरे का पूरा छन्द ही पंजाबी में लिख डाला है।

केशव को छोड़कर कदाचित् ही कोई अन्य कवि होगा जिसने इतने अधिक छन्दों का प्रयोग अपनी एक ही कृति में किया हो। गुरु जी ने ६० छन्दों को अपनाया है जिनमें कुछ नवीन हैं जैसे संगीत छप्पय।

गुरु जी ने भी भगवान् राम को विष्णु का अवतार माना है। जिन्होंने संतों के उद्धार के लिए अपना प्रकाटय किया-

मास त्रयोदशमी चढ़यो तब सन्तन हेतु उधार।
रावण रिपु प्रगट भए जग आन राम अवतार।।
।। छं.सं. ५२।।

ब्रह्मा जी के वरदान को दुहराते हुए गुरु जी रामकथा को शाश्वत मानते हैं-

राम कथा जुग जुग अटल सब कोई मानत नेत।[४]

उन्होंने रामवतार का रचनाकाल स्वयं वर्णन किया है-

संवत सत्रह सहस पचावन।
हाड़वदी प्रथमा सुखदावन
तब प्रसाद करि ग्रन्थ सुधारा।
मूल परी लहु लेहू सुधारा।

काव्य सौन्दर्य के परिचायक कुछ छन्द द्रष्टव्य हैं-

वजै छन्द-

चन्द को अंश चकोरन कै करि मोरन विद्युल्लता अनुमानी।
मत्र गयेदन इन्द्र वधू भिनुसार छटा रवि की जिय जानी।।
देवं न दोष न की हरता अरि देव न काल क्रिया कर मानी।
देशन सिंधु, दिनेशन विंध्य, जोगेशन गंग के रंग बखानी।।[५]

भुजंगप्रयात छन्द

किधौ देव कन्या किधौ वासवीं हैं।
किधौ दक्षिणी किन्नरी नागिनी है।
किधौ गंधूरी देत जा देवतासी।
किधौ सुरजा शुद्ध सोंधी सुधा सी।
किधैं स्वर्ण कै चित्र की पुत्रिका है।
किधौ काम की कामिनी की प्रभा है।
किधौं चित्त की पुत्रिका सीवनी है।
किधौ शंखिनी चित्रिणी, पद्मिनी है।
छके प्रेम दोनों लगे नैन ऐसे।
मनो फांद फांदै मृगीराज जैसे।।

संगीत भुजंगप्रयात छन्द

आगड़दंग एकं दागड़दंग दानी।
चागड़दंग चीरा दागडद दुरानी।
दागड़दंग देखी यागड़ दंग बूटी।
आगड़ दंग है एक ते एक जूटी।

पाघड़ी छन्द

चमकंत चक्र सरचन सेल।
जुज्झे जटान जनु गंगसेल।
संघर सूर अध्याय धाय।
वरमंत बाण चड़ चोय चाय।।[६]

रामसिंह कृत सार रामायण- संवत १८०७

ग्रन्थ का आरम्भ कवि ने गणेश तथा गुरुओं की स्तुतियों से किया है। '१ओंकार सतिगुर प्रसादि। ओंकार स्वस्ति श्री गणेशाय नमः। अथ सार रामायण लिख्यते।'

सार रामायण कवि भाजन कवि ने परम्परानुसार कांडों में किया है। प्रत्येक कांड में छन्दों की संख्या इस प्रकार है-

(१)	बालकांड :	१६४
(२)	अयोध्याकांड :	८७०
(३)	अरण्यकांड :	४५९
(४)	किष्किन्धाकांड:	२८१
(५)	सुन्दरकांड :	१८६
(६)	लंकाकांड :	११७८
(७)	उत्तरकांड:	७५५

४. गोविन्द रामायण, पृ. २४०। ५. वही, पृ. ६७। ६. वही, पृ. १३५

तुलसी के समान राम सिंह ने 'सार रामायण' का आधार निगमागमों को माना है- 'निगमागम अनुसार कहे!'। प्रत्येक कांड के अन्त में पौराणिक शैली का अनुसरण करते हुए कवि लिखता है 'इति श्रीमत सार रामायणे उमा महेश्वर संवादे बालकाण्ड समापतोयं सुभं भवतु।'

रचनाकाल के विषय में निम्नलिखित छन्द प्रकाश डालता है-

संवत ठारह सत पहर स्री दिन पति सुभ बार
भ्रादव बदि सु असटमी यदुपति दिन अवतार।।
तादिन ग्रंथ सपूरण स्री गुरु क्रिया उदार।
रामदास गुरु पद कमल बार बार बलिहार।।

धना सिंह ने इसकी प्रतिलिपि १९०४ संवत् में लवपुर में की थी।

कथा में कश्यप- अर्पित प्रसंग, शिवपार्वती का काकभुशुण्डी गरुड़ तथा महादेव-हनुमान संवादों की योजना की गई है।

काकभुशुण्डी तथा गरुड़ संवाद बखस तुलसी रामायण का स्मरण कराता है:

सुति खगपति के बचन सुहाए।
काग भुसुंड हृदय अतिभाए।
पुलक गात द्रिग प्रेम सुयानी।
बोला गदगद गिरा भवानी।
सकल भांति हम अनुग तुमारे हरि वाहन सवं खग सिरदारे।

कवि ने अलंकारों का भी समुचित ढंग से स्थान-स्थान पर समावेश किया है।

कवि ने प्रमुख रूप से सवैया, दोहरा, चौपाई, छंद सोरठा आदि वृत्तों का प्रयोग किया है।

पंडित गुलाब सिंह निरमलेकृत 'अधिआतम रामायण' संवत् १८९४

पंडित गुलाब सिंह ने अध्यात्म रामायण का अनुवाद करते हुए स्थान-स्थान पर मौलिकता का परिचय दिया है। इसके रचना काल के विषय में हस्तलिखित ग्रन्थ में लिखा है 'संवत् १८९४ विच वणिआ, संवत् १९०४ विच लिखिआ।'

दोहरा - विधि आनन पुन सुन ग्रह आतम
संवत जाना जेठ सुकलतिथ त्रोदसी
पुसतक लिख्यो सुमान।।
ग्रह अगनी वरू चन्द पुन संवत आनंद धारा
दसमी कार्तिक सुदि सुभ सुराधी सगुरवारा।।

पंडित गुलाब सिंह ने इस ग्रन्थ की रचना सं. १८३९ में की। सं. १८९४ तथा सं. १९०४ प्रतिलिपि करने वालों द्वारा वर्णित किया गया प्रतीत होता है।

ग्रन्थ का रचना स्थान 'प्राचीन' नाम का तीर्थ है जो कुरुक्षेत्र के पश्चिम में है तथा जिसके निकट सरस्वती बहती है-

पुर सेखव कुरुखेत वास सुभ संत मनाये।
प्राची कूल सुतरिथ नीर सुरसुति छाये
तहां बैठे भाखा करी तिन कथा रामायण पाप हरा

ग्रन्थ का आरम्भ कवि ने सिख तथा सनातनी परम्परा के अनुसार किया है १ओंकार सतिगुरु प्रसादि। १ ओंकार श्री गणेशायमनमः।।

दोहरा

देवी माता सारदा सरदिन्दु समहासा।
वन्दो पद पंकज सदा करो सुमति परकासा।।

ग्रन्थ का अन्त कवि ने गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु गोबिन्द सिंह तथा गुरु मान सिंह की स्तुतियों

से किया है।

कवि ने निम्नलिखित छन्दों का प्रमुख रूप से प्रयोग किया है–

(१) कवित्त (२) तोटक (३) तोमर (४) मालती (५) छंदु (६) दोहरा (७) सोरठा (८) सवैया (९) निराज (नाराच) (१०) मदिरा (११) संकर (१२) चौपई।

भगवान् राम का बालरूप चित्रण अतीव मनोहारी बन पड़ा है –

मात पिता सुन तोतल बै न सुपेख मुखांबुर्ज को विगसाये।
माल बिखे मुकतामणि हेम सु पीतलपात अनूप सुहाये।।
कंठ विखे मणि व्रात धरे वृक को नख ताहि सु बीच जराये।
कंचन कुंडल कान लसै रतनागण सुन्दर पूर लगाये।।४४।।
प. २२।

निहाल कवि कृत रामचन्द्रोदय एवं रामायण

निहाल कवि का जन्म पटियाला में हुआ था। महाराज कर्म सिंह की आज्ञा से आपने संवत् १८६९ में 'साहित्य शिरोमणि' नामक ग्रंथ लिखा। रामकथा को आधार बनाकर आपने दो काव्य (१) रामचन्द्रोदय एवं (२) रामायण प्रणीत किए। महाकवि केशवदास कृत रामचन्द्रिका से प्रेरणा प्राप्त करके आपने 'रामचन्द्रोदय' की रचना की। 'रामायण' आपकी स्वतन्त्र रचना है। इन दोनों की भाषा ब्रज है एवं लिपि गुरुमुखी भाषा पर खडी बोली की छाप स्थान स्थान पर दृष्टिगत होती है।

भाई संतोख सिंह कृत वालमीक रामायनी– संवत १८९१–

भाई संतोख सिंह ने ग्रन्थ के आरम्भ में ही वर्णित किया है कि वे 'वालमीक रामायण' का अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं– '२ ओंकार सति गुरु प्रसादि। अथ वालमीक रामायनि लिख्यते' कवि ने इस विशालकाय ग्रन्थ का विभाजन वाल्मीकि रामायण के समान कांडों में किया है, किन्तु कांडों का विभाजन सर्गों के स्थान पर अध्यायों में सम्पन्न हुआ है। वाल्मीकि रामायण की तीन शाखाओं में से पश्चिमोत्तरीय तथा बंगीय शाखा का अनुसरण न करते हुए कवि ने दाक्षिणात्मक शाखा को ग्रहण किया है। परन्तु अध्यायों का नामकरण कवि ने पश्चिमोत्तरीय शाखा के अनुसार किया है।

कवि ने प्रथम दोहे में सरस्वती की वंदना की है तत्पश्चात् सब सिक्ख-गुरुओं की स्तुति की है। रामनाम की उपादेयता तथा शक्ति का गायन भी द्रष्टव्य है–

शाति देत मन को सुकांति देत तन को
देख परे भोर को असेख हरे पीर को।
विसेख करे धीर को सहाई आठ जाम को।

यह वाल्मीकि रामायण का अक्षरश अनुवाद नहीं है। इसे हम रूपान्तरण या स्वतंत्र अनुवाद कह सकते हैं। उदाहरण के लिए क्रौंचवध प्रसंग को वाल्मीकि ने ८ अनुष्टुप् में छन्दों में उपनिबद्ध किया है। वाल्मीकि रामायण १/२/९––१५,१८ जबकि संतोख सिंह ने इसी प्रसंग को एक सवैये तथा दोहे में गुम्फित किया है–

रामवन गमन के समय कवि ने कौशल्या की निस्सहायावस्था एवं करुणदशा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

दोहा तथा चौपाई के अतिरिक्त कवि ने कवित्त, सवैया अडिल्ल एवं सोरठा का भी प्रयोग किया है। निम्नलिखित पंक्तियों से प्रतीत होता है कि ग्रन्थ का रचनाकाल सं. १८९१ है-

संवत् विक्रमजीत आष्टदस सहमणिजे।
तीस त्रिगुण करिय भंयो पूरन लख लिजै।
पुनि इकनवां चढयो संधि दोउन कौ मानहु।
रुत वसंत अत समत चैत्र मास पहचानहु।

कवि हरनाम राय कृत बालकांड-संवत् १८९४

हरनाम राय ने बालकांड की रचना कपूरथला नरेश निहाल सिंह की आज्ञा को शिरोधार्य करके की-

विदित कपूरथलो धरन रजधानी सुखधाम
तहां कीन प्रारम्भ कवि सुमर राम घनश्याम।

दोहरा-

तिन इक दिन हरि रसमगन कह्यो वचन सुख खान।
राए राम सुख सुक व सुत कव हरिनाम समान।।८४
सीस कुसम अवतंस सम डर मैं हार समान।
कीनो सी महाराज को या विध हुकम प्रमान।।८७

कवि हर नाम राय के पिता का नाम सुख रामराय था जैसा कि छन्द संख्या ८४ से विदित होता है। अन्तःसाक्ष्य के आधार पर इस काव्य का रचनाकाल संवत् १८९४ सिद्ध होता है-

संवत् युग निध वसु सभी सुक्रवार वार मधु मास
राम जनम तिथ धाम सुख राम चरित्र प्रकास।।९३

यद्यपि कवि ने बालकांड की रचना के लिए वाल्मीकि रामायण को आधार माना है परन्तु स्थान-स्थान पर कवि ने अपनी प्रखर प्रतिभा प्रसूत काव्य-मौलिकता का परिचय भी दिया है जिसके फलस्वरूप यह एक स्वतन्त्र रचना कही जा सकती है। कवि ने रचना का प्रारम्भ इस प्रकार किया है-

एक ओंकार स्रसति श्री गणेशायनमः। श्री सीता रामचन्द्र चरण-कम लेभ्यः नमः।

दोहरा

कनक चड़त नग मंच प्रभु ललत जनकजा साथ।
चन्द्रभान मंडल मनो कमला कमलानाथ।।१।।
जनम न गगन प्रभा करन हरन मोहतम वृन्द।
शिव सारद नारद सुखद जुगल चरण नख चन्द।।
वानी अरथ विसरग जिस तुंग तरंगन पाथ।
कथन मेद किल भेद नहिं सीता सीतानाथ।।

हरनाम राय ने अपने बालकांड में १६ सर्ग सम्मिलित किए हैं। प्रतीत होता है कि कवि ने वाल्मीकि रामायण की पश्चिमोत्तरीय न वंगीय एवं न दाक्षिणात्य शारन का अनुसरण किया है। प्रथम सर्ग का नाम नारद वाक्य है- 'इत्यर्थं रामायण बालमीकीय आदिक वंस्य श्री सीतारमण-असरण सरण चरणारविंद मनोमिलिंद नरेन्द्र निहाल सिंह कृत भाषा निबन्धे नारदवाक्ये प्रिथम सर्ग।

कवि की भाषा ब्रज है जिसमें तत्सम शब्दों की भरमार है। फलस्वरूप कविता में अनुप्रास जनित संगीतमयी झंकार का समावेश सहृदय को बरबस आकृष्ट करता है। देखिए-

सूरदास सूरजबंसी इधिआकवंसी कृत 'स्री रामचरित्र'- संवत १८९७

यह सूरदास सूरसागर के रचयिता प्रख्यात सूरदास से विभिन्न प्रतीत होता है क्योंकि ये सूर के बहुत परवर्ती हैं। इस रामचरित्र को आरम्भिक पंक्तियां सूरसागर में निबद्ध रामचरित्र से मिलती हैं परन्तु शेष सम्पूर्ण काव्य कवि की अपनी कृति है-

हरि हरि हरि हरि सिमरन करो।
हरि चरनारविंद उर धरो।
सुखदेव हरिचरनन सिर न्याये।
राजा सूवोल्यो या कांयै।
कटूं श्री रामचन्द औ तारा।
राजा सुनो ताहिचित्त धारा।

आरम्भ में कवि ने कश्यप ऋषि से लेकर श्रीराम तक रघुवंश का वर्णन किया है। सारी कृति अत्यन्त संक्षिप्त है तथा राग-रागिनियों में निबद्ध है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

मति आंवन अंगदा।। राम मारू।।
बाल के नंद न आइ के सीस नामो
अंध दसकंध को कील सूझत न प्रभु मैं बहुत विध जनायो।।
इन्द्रजीत चढ्यो सैन सम साज कै स्वरे सै न हू साज कीजै।
सूरप्रभ मारदसकंध सभबध जानकी छोर जस जगति लीजै।।

हस्तलिखित ग्रंथ में कृति का रचनाकाल सं. १८९७ वर्णित किया गया है।

श्री कृष्णलाल कृत रामचरित्र- संवत् १९२०

महाभारत का अनुवाद करते हुए कवि कृष्णलाल ने वनपर्व के अन्तर्गत उपनिबद्ध रामकथा को भी अनुदित किया है। इस का नाम उन्होंने 'रामचरित्र' रखा। आरम्भ में कवि ने इस ओर इंगित किया है- एक ओंकार श्री रामायनमः। अथः रामचरित्र' वरनन मारकंडे मुखति। मारकंडे उवाचा।

दोहा-

अवधपुर चरलोक सम रघुकुल को तहां राज।
वसै नगरुसभ तिआग दुख सुख सो रहति विराज।।१।।

काव्य की अन्तिम पंक्तियां इस प्रकार हैं-

'स्वपन समान अपद निजु जानी। पुनि भोगे वड़ि सुख पहिचानी सुनि सुत पंडे हरखे वड़ि भागे। (सहित) सहति द्रोपदी रिख पग लाग ।७४।। क्रिसनि लाल निज बुधि सुहाये। श्रीराम चरित्र काहियो प्रगटाये।।७५।। इति श्री महाभारते पुराणे वनपर्वणे रामचरित्र क्रिसन लाल क्रित भाखाय समापत स्री रामायण समपूरणंयगस्त समास्य।।

विशेष 'पौड़ी' नामक छंद को भी प्रचुर मात्रा में अपनाया है जिसका आश्रय उसने कभी चार दोहों के पश्चात एवं कभी एक ही के पश्चात् किया है। पौड़ी छन्द का उदाहरण द्रष्टव्य है-

लंकेसु ते आदि लै नृप सकल उठावै।
उठै न काहू के वलै बल भार लगावै।।
करि करि बलि रहे थकति होइ अचरज रहावै, इहु धनुखा सिव हाथ का मुख ते प्रगटावै
मानुष कहा उठा सकै फिर हाथ न लीवै। तब रिख आगिआ राम लै आ सहज सुभावै।
लीओ उठाइ करि वाम सो न ही भार जनावै।
क्रिसन लाल पूरन पुरख अस रचनि दिख हवै।।

(६९)

कृष्ण लाल अमृतसर निवासी थे। इस सम्बन्ध में श्री चन्द्रकांत बाली लिखते हैं– '....... अन्त:साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है आप संभवत: अमृतसर निवासी हैं। आपका रचनाकाल १८८० विक्रमी संवत् से लेकर १९२० विक्रमी संवत् तक ठहराने में कोई अड़चन नहीं।'[७]

चूना लाल कृत बारा मास चन्द्रका- संवत् १९०४

कवि चूना लाल ने अपना परिचय स्वयं अपने ग्रन्थ में इस प्रकार दिया है:

षतरी हूं जात का चूना हमारा नाम है।
तात निक्का मल हमारे भाई नानक राम है।।५।।

कवि क्षत्रिय है, उसके पिता का नाम निक्का मल है तथा भाई का नाम नानक राम है।

ग्रंथ का प्रणयन काल संवत् १९०४ का फाल्गुन मास है–

संवत उनीस सै चार फागुन मास में पूरन भई।
तिथ्य दशमी शुभ घरी पष प्रथम मै भक्तन कई।।१

कवि ने कृति में सर्वप्रथम गणेशवन्दना की है–

श्री गणेशाय नम:। अथ बारा मासा लिष्यते। दोहा।। गुरु गनेश को ध्याय लो। जय मन होत हुलास। रामचन्द्र औतार का वरनूं वारामास।।१।।
चैत जन्म रघुवर लिया भूष हुए षुशहाल।। नारदमुल हिष यूं कहे।। करो नाथ प्रतपाल।।२।।

हिन्दी रामकाव्य में इस रामायण की अद्वितीय विशेषता इसकी कथावस्तु के विभाजन में है। प्राय: रामायण की कथावस्तु का विभाजन काण्डों में किया जाता है परन्तु चूना लाल ने अपनी रामायण की कथा का विभाजन 'मासों' के नाम पर किया है। चैत मास की कथा वन में राम-भरत मिलनप्रसंग तक चलती है। वैशाख मास में अरण्य काण्ड की कथा है। ज्येष्ठ मास में कथा बालि की भर्त्सना तक वर्णित है। आषाढ़ मास में कथा बालि वध से लेकर अक्षयकुमार वध तक प्रवाहित होती है। कथा का अन्त माघ फाल्गुन के अन्तर्गत होता है जिसमें राम का अयोध्या पहुंचना, राजसिंहासन पर बैठना आदि प्रसंग संजोए गए हैं।

इस कृति में सुमित्रा एवं कौशल्या का वीर क्षत्राणी रूप अत्यन्त सटीक रूप से चित्रित हुआ है:

तौ लौं तहां आई सुमित्रा वात उसने यह कही।
धन भाग लछमन के भये रघुनाथ कार न देह दई।४
मेरी ओर से रघुनाथ को कहियो न दुख लछमन करे।
लछमन के भाग सुफल भये जलदी अवध पर मन धरे।५
कौशिल्या समझाय रामचन्द्र को यूं कहो बिन लछमन मत आय।।

यह हाल सुन रावन कहै मैं जानिया जो बात है।
वो राम पूरन ब्रह्मा है अरु जानकी जगमात है।
जद होश कुछ उसको भया माथे को मारे हाथ से।
मुझ को षवर ऐसी न भी फरयाद शंकर नाथ से।

ग्रन्थ की समाप्ति में कवि भक्ति का दान मांगता है तथा वाल्मीकि रामायण को अपना उप-जीव्य ग्रन्थ स्वीकार करता है–

७. चन्द्रकांत बाली, पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३७५, संस्करण १९६२

भक्त दान मुझे मिले कर पांच पाप से दूर रहे
बीनती सुन लीजिये गर आपको मंजूर है।।
सुर नर मुनी नारद गनी अस्तुत करती भगवान की।
राम चरचा सब लिखी बाल्मीक समान की।।

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त कवि हनुमन्नाटक, प्रसन्नरोव आदि नाटकों में वर्णित चमत्कारिक प्रसंगों को चयन करने का लोभ संवरण नहीं कर सका। अत: हम इस रामायण में सुलोचनाप्रसंग, लक्ष्मणमूर्छा का समाचार सुन कर सुमित्रा–कौशल्या का वीर क्षत्राणियों की गरिमा के अनुकूल संवाद तथा उनका हनुमान् द्वारा राम के प्रति संदेश भेजना, हनुमान् द्वारा संजीवनी लेने जाना, माया जानकीवध, मयरावण द्वारा राम–लक्ष्मण हरण तथा हनुमान् द्वारा मयरावण वध आदि वृत्तांत पाते हैं।

उपरिलिखित विवरण से स्पष्ट है कि पंजाब में हिन्दी साहित्य को संवत् १६८० से संवत् १९०४ तक ११ रामकाव्य दिए। यह संख्या अब तक के ज्ञात कवियों के आधार पर है। यदि दत्तचित्त होकर अनुसंधानकर्त्ता अधिक प्रयत्न करें तो संभव है यह संख्या द्विगुणित हो जाए। इसी समय में हिन्दी–भाषा भाषी–प्रदेशों में २१ रामकाव्य रचे गए। परन्तु जबकि पंजाब में रामकाव्य परम्परा अपने विशुद्ध एवं सात्विक रूप में वाल्मीकि को आधार मान कर प्रवाहित होती रही, हिन्दी–भाषा भाषी–प्रदेशों में चरम शृंगारिकता तथा विलासिता की पंकलता में लिप्त हो कर यह अपना नैसर्गिक शुद्ध एवं आदर्श मर्यादित रूप खो बैठी। ससुखीशाखा एवं तत्सुखी शाखा इसके प्रमाण हैं; निश्चय ही पंजाब को इस रामकाव्य–क्षेत्र में हिन्दी–साहित्य के प्रति अपने योगदान का गर्व है।

–म. नं. ३२०१, सैक्टर–२१, चण्डीगढ़।

दशम गुरु गोविन्द सिंह रचित-रामावतार काव्य

– प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल

पंजाब में रचित रामसाहित्य विषय पर लिखने से पूर्व यह विचार कर लेना आवश्यक है कि पंजाब से तात्पर्य किस पंजाब से है, वह इसलिए कि भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर वैदिक-काल में पंजाब का क्षेत्र पश्चिम में सिन्धु नदी से प्रारम्भ होकर पूर्व में सरस्वती नदी तक फैला हुआ था। इन दोनों नदियों के बीच यद्यपि छोटी- छोटी कई नदियां होगीं, किन्तु मुख्यरूप में जिन पांच नदियों का वर्णन स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है वे नामान्तर से आज भी विद्यमान हैं। जो इस प्रकार हैं- (१) झेलम (प्राचीन नाम वितस्ता) (२)चिनाव (प्राचीन असिक्नी बाद में चन्द्रभागा भी इसी का नाम था) (३) रावी (प्राचीन परुष्णी जो आगे चलकर इरावती नाम से जानी गई।) (४) व्यास (प्राचीन विपाश् जो बाद में विपाशा नाम से भी जानी गई)। (५) सतलुज (प्राचीन शुतुद्री जो बाद में शतद्रू नाम से जानी जाती थी)। यही पांच प्रमुख नदियां थीं। इनके साथ सिन्धु तथा सरस्वती सहित सात नदियों के कारण पंजाब सप्तसिन्धु कहा जाता था।

महाभारत में सप्तसिन्धु का वर्णन नहीं मिलता। पञ्चनद नाम है और उसके विषय में लिखा है कि- दिग्विजय के समय नकुल ने सम्पूर्ण पञ्चनद के साथ-साथ अन्य नगरों को भी जीतकर अपने अधीन कर लिया था।[1] किन्तु उस समय का पञ्चनद जिसमें (१) व्यास (२)सतलुज (३) रावी (४) चिनाव तथा (५) झेलम ये नदियाँ विद्यमान थीं। वह सम्पूर्ण भू भाग समझना चाहिए जो विभाजन के समय पाकिस्तान में चला गया अर्थात् १९४७ से पहले का अविभाज्य पंजाब। १९४७ में पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान विभाजन के बाद भी हरियाणा तथा हिमाचल पंजाब में ही था। वर्तमान पंजाब को ही मानकर आजकल सभी कार्य किए जाते हैं। अतः अब हरियाणा, हिमाचल तथा जम्मू-कश्मीर छोड़कर सीमित भू भाग ही पंजाब कहलाता है। पंजाब की उस भौगोलिक स्थिति को समक्ष रखकर विद्वान् लेखकों ने लेख भेजे हैं। कतिपय लेख हरियाणा आदि प्रान्तों के सम्बन्धित काव्यों से भी प्राप्त हुए हैं। वे भी प्रकाशित होगें किन्तु विशेषाङ्क के अग्रिम अंक में ही वे प्रकाशित किए जा सकेगें। अस्तु।

इस दृष्टि से जब राम- साहित्य पर विचार किया जाता है तो देखा गया कि न केवल प्राचीन कालिदास जैसे महाकावियों एवम् संत तुलसी जैसे हिन्दी के महाकवियों ने ही राम साहित्य नहीं लिखा। अपितु मध्यकाल में दीन-हीन, धर्म-विमुख होती हुई जनता के रक्षक, हिन्दू-धर्म के संरक्षक एवम् अधर्मियों के

१. कृत्स्नं पञ्चनंद चैव तथैवामरपवर्तम्।
अमरज्योतिषं तथा दिव्यकटं पुरम्:।
द्वारपालं च तरसा वशे चक्रे महाद्युतिः।। महाभारत, सभापर्व ३२:११ १/२

विनाशक, भगवद्-अवतार-स्वरूप दशम गुरु गोविन्द सिंह जी ने भी मार्यादापुरुषोत्तम राम के जीवन को मुख्यरूप से अपनाते हुए 'रामावतार' महाकाव्य की रचना की। इसका कारण था कि दशम गुरु को यह स्पष्ट रूप से ज्ञात था कि परमपिता परमात्मा ने उन्हें विशेष शक्ति प्रदान कर किसी विशेष कार्य के लिए ही मनुष्य योनि में भेजा है और वह कार्य था धर्म की रक्षा तथा अधर्म एवम् अधर्मियों का नाश। उन्होंने स्वयं इस ओर इंगित करते हुए विचित्रनाटक में लिखा भी है कि-

मैं अपना सुत तोहि निवाजा
पंथ प्रचुर करने को साजा।
जाहि तहां से धर्म चलाई
कुबुधि करन ते लोक हवाइ
इह कारण प्रभु माहि पठायो।।

यही कारण था कि उन्होंने तत्कालीन जनता के समक्ष भगवान् राम का चरित्र रखकर एक आदर्श समाज को स्थापित करने की धारणा बनाई और उस पर ही कार्य किया।

दशम गुरु गोविन्द सिंह की लगभग १६ रचनाएं प्राप्त हैं। उनमें चउवीस नामक रचना है, जिसमें चौवीस अवतारों का वर्णन है। उन अवतारों में से उन्होंने मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम का चरित्र ही विशेष रूप से जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए 'रामावतार' नामक महाकाव्य की रचना की। गुरु गोविन्द सिंह जी ने स्वयं लिखा है कि-

अव मै गनो विसन अवतारा
जैसक धर्मो सरूप मुरारा
विआकुल होत धरन जब भारा
काल पुरख पहि करत पुकारा (विसनअवतार)

रामावतार के विषय में लिखते हैं-

अव मै कंहो राम अवतारा
जैस जगत मो करा पसारा।
बहुत काल बीतत भयो जवै
असुरन वंस प्रगट भयो तवै।। रामावतार-१

रामावतार काव्य का स्रोत-

इसके नायक मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम हैं, जो धीरोदात्त वीर योद्धा के रूप में वर्णित हुए हैं। रामावतार की कथावस्तु काल्पनिक नहीं अपितु उसका आधार श्री गुरु गोविन्द सिंह जी कालीन तथा उनसे भी प्राचीन रामपरक साहित्य को माना जा सकता है। गुरु जी ने यद्यपि मुख्य रूप से महर्षि वाल्मीकी जी द्वारा रचित रामायण को ही रामावतार काव्य के कथानक का मूल माना है, पर देखा जाय तो महर्षि वाल्मीकी ने भी रामायण के प्रारम्भ में रामायण में राम की कथा को अपने से भी प्राचीन मानते हुए लिखा कि- मैंने भी रामायण में वर्णित इस रामकथा को जन सामान्य से सुना हैं।[२] इससे स्पष्ट है कि महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित रामायण से पूर्व राम कथा लोक में जनसामान्य में मौखिक रूप से प्रचलित थी। भगवान् राम उससे भी पूर्व जनता जनार्दन के आराध्य रहे होगें।

श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी ने उन चौबीस अवतारों में से विशेष रूप से राम अवतार को ही क्यों अपनाया इसके पीछे एक विशेष कारण था। वे जिस कार्य के लिए अवतरित हुए थे, उसको पूरा करने के लिए राम जैसे राजा एवं जननायक की आवश्यकता थी; क्योंकि जिस समय तथा जिस परिस्थिति में गुरु गोविन्द सिंह गुरुगद्दी पर आसीन हुए उस समय जनता हतोत्साहित, मृतप्राय: सी हो गई थी। श्री गुरुगोविन्द सिंह जी जनता की ऐसी

२. रामो नाम जनैः श्रुतः - वाल्मीकी रामायण, १.१.

स्थिति से दु:खी थे, वे सशक्त समाज तथा प्रजा को देखना चाहते थे; जिससे वे मुगल राजाओं से जनता तथा हिन्दुओं पर किए जा रहे अत्याचारों का बदला ले सकें। उनके सामने युद्ध में डटकर मुकाबला कर सके। जो हिन्दुधर्म के पतन का कारण एवम् उसके के विनाशक थे; एवम् जिन्होंने भारत को पराधीन कर लिया था। उनको एक सशस्त तथा बलिदानी समाज एवं संगठन की आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति के लिए ही उन्होंने तलवार एवम् लेखनी उठाई थी। तलवार के बल से मैदान में तथा लेखनी के माध्यम से जन-जन के हृदय में देशभक्ति की भावना भरते हुए धर्म की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने की शक्ति भरनी प्रारम्भ की। यही उनका मुख्य उद्देश्य था। उनका प्रयास सोई हुई जनता को जगाना तथा उनमें विद्यमान शक्ति, धीरता, वीरता को जागृत करना था। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि-

चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ
गऊओं को मैं सिंह बनाऊँ।
सवा लाख से एक लड़ाऊँ
तभी गोविन्द सिंह नाम कहाऊँ।।

इससे स्पष्ट है कि तत्कालीन जनता चिड़िया के समान निर्बल तथा गौ जैसी शान्त स्वभाव वाली हो गयी थी। दूसरी बात यह है कि उन्होंने रामावतार की रचना का उद्देश्य धर्म परक रखते हुए भी लिखा है कि-

जो इह कथा सुनै अरु गावै।
दुख पाप तिह निकट न आवै।।
विसन भगत कीए फल होई।
आधिव्याधि छ्वै सकै न कोई।।

रा.अ. ८५९

दशम गुरु गोविन्द सिंह जी का रामावतार लिखने का एक अन्य प्रयोजन भी था और वह था धर्म की रक्षा और अधर्म का विनाश। इस विषय में उन्होंने संकेत करते हुए कहा है कि-

हम इस काज जगत में आए
धर्म हेतु गुरु देव पठाए
जहाँ तहाँ तुम धर्म विचारो
दुष्ट देखियत पकरि पछारो।(विचित्रनाटक)

वस्तुत: उन्हें परमपिता परमात्मा ने धर्म की रक्षा के लिए ही जगत में भेजा था। यह वह भली भांति जानते थे। इसलिए लिखते हैं-

यही काज धरा हम जनमं
समझलेहु साधु सब सनमं
धरम चलावन सन्त उबारन
दुसट समन को मूल उपारन।

(वि.नाटक. ६.४२-४५)

तत्कालीन भयभीत तथा सहमी हुई जनता के विषय में वे दु:खी थे, वह दीन-हीन, अनुत्साहित जनता को शूरवीर बनाना चाहते थे। उनमें शूरता, वीरता का संचार करना चाहते थे। उनका मन्तव्य था कि- 'भेड़ों को मैं शेर बनाऊँ' यहां भेड़ शब्द इसलिए लिया कि भेड़ सबसे डरपोक पशु है। उसकी अपनी बुद्धि कम होती है, इसलिए लोक में 'भेड़ चाल' प्रसिद्ध है। इन सभी कार्यों के लिए उन्हें राम जैसे शूरवीर, पराक्रमी तथा धर्म की रक्षा करने वाले चाहिए थे। इस दिशा में राम का चरित्र स्पष्ट था।

वे धर्म के प्रति बदली हुई जनता की धारणा को दूर करने एवं जन-जन के मन में धर्म के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए आए थे। दशमगुरु गोविन्द सिंह का यह भी एक मार्ग था। उनके समय में जनता या तो धर्म से विमुख हो रही थी या उनको धर्म से विमुख किया जा रहा था। भगवान् राम भी धर्म की रक्षा एवं अधर्म का विनाश करने के लिए अवतरित हुए थे। अत: श्री राम का धार्मिक रूप

से वर्णन करना कवि का प्रयोजन रहा। रामावतार में कई एक स्थानों पर भगवान् राम को धर्म रक्षक के रूप में प्रदर्शित करते हुए लिखा मिलता है। जैसे-

त्रसै दैत्य भाजे रणं राम गाजै
भुअं भार उतार्‌यो रिखीसं उबार्‌यो।।

रामावतार, ६३

रामराज्य के विषय में गुरु जी अपना विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं कि-

इतै राम राजं करै देवकाजं
धरे बान पानं हरे जगत शोकं (रा.अ.)

महर्षि अगस्त्य के आश्रम में श्रीराम के जाने का वर्णन करते हुए श्री गुरुगोविन्दसिंह भगवान् राम को धर्मपरायण मानते हुए भी उन्हें धर्म के रक्षक के रूप में देखते हैं-

रिख अगसत धाम गए राजा राम।
धुज धरम धाम सीआ सहित वाम।।

रामाव. ३२४

वे भगवान् राम को धर्म का ध्वज मानते हुए जनमानस में तदनुरूप आचरण की कामना करते हैं। इतिहास से स्पष्ट है कि गुरु गोविन्द सिंह का जीवन अधिकतर विरोधियों के साथ युद्ध में ही व्यतीत हुआ। वे प्रतिपल युद्ध के लिए तैय्यार रहते थे। इतनी व्यस्तता के बाद भी उन्होंने अनेकों ग्रन्थ लिखे हैं। समय मिलने पर जिस साहित्य का उन्होंने सृजन किया अथवा अनुवाद किया उसको देखने और पढ़ने से स्पष्ट है कि गुरु गोविन्द सिंह एक विलक्षण व्यक्तित्व तथा अलौकिक शक्ति- सम्पन्न महापुरुष थे या यों कहिए कि प्रभु के अंशों से सम्पन्न कोई दिव्यशक्तिशाली युग-पुरुष थे। वे केवल स्वयं ही कविता नहीं करते थे; अपितु उनके दरबार में अनेक दरबारी कवि थे। इन सभी का एकमात्र उद्देश्य था तत्कालीन साधारण जनता को भी राष्ट्र के प्रति जागरूक कराकर सभी को राष्ट्ररक्षा, देशभक्ति की एक सुदृढ़ प्रभुखधारा से जोड़ना। उसके लिए गुरुजी ने न केवल सोपज्ञ शास्त्रों का निर्माण ही नहीं किया अपितु अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता धर्म और कर्म के परिचायक, वेद, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, रामायण, प्राचीन कथासाहित्य, नीति साहित्य, धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र परक ग्रन्थों को अपनाकर तत्-तद् ग्रन्थों में वर्णित पात्रों के चरित्र के प्रति जागरूकता पैदा की। रामावतार को पढने से पाठक स्वत: ही निश्चय कर लेता है कि यह काव्य किसी विशेष दृष्टिकोण को लेकर रचा गया है और वह था तत्कालीन शासक के क्रूर कर्म द्वारा भयभीत जनता को निर्भीक बनाना। उन्होंने जनता को दु:खी देखा। शत्रु द्वारा पिता की जघन्य हत्या का दिल दिहलाने वाला दृश्य देखा। इन्हीं सब विरुद्ध परिस्थितियों के कारण गुरुजी ने खालसा-पंथ की सृजना की, जो अपने में एक अद्वितीय घटना थी। इसी सृजना से बाद में एक आदर्श तथा त्यागी समाज की स्थापना हुई और वही उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आज अपने पूर्ण रूप में विद्यमान है तथा जो जय घोष उन्होंने दिया था कि 'वाहे गुरु जी का खालसा वाहे गुरु जी की फतह' वह भी शूरवीरों के मन में संचार करता आ रहा है। अन्त में राम कथा का महत्व बताते हुए गुरु जी जिखते है कि-

जो इह कथा सुनै अरु गावै ।
दूखपाप सिह निकट न आवै।
विसन भगत कीए फलहोई।
आधि व्याधि छ्वै सके न कोई।।

(रामावतार ८५९)

-(संचालक-सम्पादक)

संस्थान-समाचार

दान –

श्री सुखदेव १,००,०००/-
१२० ऐसकौन मेगा सिटी,
भावनगर, गुजरात।

सर्वश्री चरणदास मल्लन २१,०००/-
चेरिटेवल ट्रस्ट
द्वारा श्री पवन प्रकाश मल्लन
३१-आर, माडल टाऊन,
होशियारपुर।

श्रीमती सरोज बाला (रिटा. प्रिंसीपल) ११,०००/-
अमर निवास,
१२ प्रोफेसर कालोनी, कपूरथला।

सुश्री एस. पंडित ४०००/-
५१५३/१, मनीमाजरा,
चण्डीगढ़।

डॉ. हरिवंश चंचल शर्मा ५०००/-
चेरिटेवल ट्रस्ट रजि., १९२७,
सैक्टर २२-वी, चण्डीगढ़।

श्री पी.सी.पी. राधाकृष्णन् २०००/-
प्रोजेक्ट ट्रांस्पोर्ट, पांडीचेरी।

श्री जे.के. सामा ५०००/-
१७९, सैक्टर १६-ए, चण्डीगढ़।

श्री धर्मपाल कतना २५०/-
प्रह्लाद नगर, होशियारपुर।

श्री ओम प्रकाश बजाज १०००/-
पो. व. ५९५, जी.पी.ओ,
इन्दौर।

श्रीमती दुर्गा देवी मैमोरियल ट्रस्ट १०००/-
आर.एन. मुकर्जी रोड़,
कोलकत्ता।

श्री प्रेम कृष्ण बैहल ५००/-
ई-९२, ग्रेटर कैलाश,
नई दिल्ली।

श्री चन्द्र मोहन अरोड़ा २१००/-
मकान ३, एल-माडल टाऊन,
होशियारपुर।

योग साधन आश्रम ५१००/-
संरक्षक समिति,
होशियारपुर।

श्री बी.डी. गुप्ता ब्रह्मभिक्षु १५००/-.
आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर, हरिद्वार।

श्री अरविन्द महाजन ११००/-
३६५, फेज-२,
इन्डस्ट्रीयल स्टेट, पंचकूला

श्री वी. एल. जैरथ १०००/-
द्वारा श्री एम. एल. खोसला,
५३५०/३, मार्डन हाऊसिंग
कम्पलैक्स, मनीमाजरा, चण्डीगढ़।

श्रीमती सरिता वैश ५०००/-
पत्नी स्व. के. सुधीर कुमार
अमरनाथ टावर, जे.पी.रोड़,
वारसोवा, मुम्बई।

डॉ. श्रीमती वसुन्धरा रिहानी ५०००/-
१६१७, सैक्टर ४४-वी,
चण्डीगढ़।

सुश्री सुरेखा सभ्रवाल ५०००/-
वी-५, पमपोश इनक्लेव,
ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली।

श्री अशीश भाटिया ६०००/-
राजेन्द्र पार्क, नई दिल्ली।

विंग कमांडर एस. आर. लक्ष्मीनारायण २०००/-
अचीपती, पोलाची, तामिलनाडू।

श्रीमती मनोरंजना अग्रवाल ३०००/-
ए/१, १५०, सफदरजंग इनक्लेव,
नई दिल्ली।

कौशल्यावती चेरिटेवल ट्रस्ट ३०००/-
६८, आर.पी.एस. शेख सराए,
नई दिल्ली।

डॉ. शुकदेव शर्मा ३१००/-
वी.वी. आर. आई.,
साधु आश्रम, होशियारपुर।

डॉ. श्रीमती कृष्णा सैनी ५०००/-
प्रोफेसर, वी.वी.बी.आई.एस. (पं.यू.),
साधु आश्रम, होशियारपुर।

डॉ. राम गोपाल ५००/-
बैंगलौर।

डॉ. एस. एल. चावला २०००/-
चावला चिल्ड्रन हस्पताल,
शहीद ऊधम सिंह नगर, जालन्धर।

श्रीमती अंजू भण्डारी १०००/-
सैक्टर-४, पंचकूला।

श्री संजीव सूद २१००/-
विद्या निकेतन, सिविल लाईन,
होशियारपुर।

स्वामी राम स्वरूप शर्मा २००/-
यौल कैन्ट, कांगड़ा।

डॉ. रेणु १०००/-
प्रोफेसर, पब्लिक प्रशासन विभाग,
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।

प्रो. नरेन्द्र कुमार पाठक २५००/-
वी-३१, नया गुरु तेगबहादुर
नगर, जालन्धर।

डॉ. गिरिराज जगियास ११००/-
विक्रम कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़।

श्री देव नारायण भारद्वाज ११००/-
एम.आई.जी. ४५, अवन्तिका,
ए.डी.ऐ., अलीगढ़।

वार्षिक सदस्यता शुल्क :

श्री इन्द्रमोहनजीत सिंह सिद्धू २५००/-
वी २०, एम. सी. एच. ५७०,
सामने सैशन हाऊस,
डी.सी. रोड़, होशियारपुर।
(२०/४/१८ से २०/३/२३ तक)

हवन-यज्ञ–

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के सत्संग-भवन में प्रत्येक सप्ताह के प्रथम दिन सभी कर्मिष्ठों की उपस्थिति में हवन-यज्ञ किया जाता है। तदनन्तर कार्य प्रारम्भ होता है।

संस्थान के सत्संग भवन में ही परमपूज्य स्वामी सत्यानन्द महाराज जी की चलाई परम्परानुसार प्रत्येक मास के दूसरे शनिवार को नगर से उपस्थित भक्तों और अनुयायियों द्वारा अमृतवाणी का श्रद्धा और प्रेम से पाठ किया जाता है।

बधाई-

संस्थान के कर्मिष्ठ श्री सूर्य बहादुर को पौत्र जन्म पर संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से बहुत-बहुत वधाई। शिशु स्वस्थ तथा दीर्घायु हो, यही सभी की प्रभु से प्रार्थना है।

पंजाब विश्वविद्यालय पटल (साधु आश्रम, होशियारपुर) के संस्कृत विभाग के डॉ. सुधांशु कुमार षडङ्गी की एसोसिएट प्रोफैसर पद पर हुई पदोन्नति पर संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से बहुत-बहुत वधाई।।

पंजाब विश्वविद्यालय पटल (साधु आश्रम, होशियारपुर) के संस्कृत विभाग के प्रोफैसर डॉ. प्रभात सिंह जी को उनके सुपुत्र आयुष्मान् गौरव ठाकुर के शुभविवाह पर संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से बहुत-बहुत बधाई। नवविवाहित युगल जीवन में सुखी, सम्पन्न और प्रसन्नता प्राप्त करे, यही सबकी प्रभु से प्रार्थना है।

विविध-समाचार

वेद-वेदांग कार्यशाला-

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि-विश्वामित्र वेद-वेदांग-कार्यशाला और राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन १५-३-१८ से १८-३-१८ तक पंजाब विश्वविद्यालीय पटल द्वारा किया गया।

इस कार्यशाला के उद्घाटन के मुख्य-अतिथि, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति, प्रो. पीयूष कान्त दीक्षित थे। इस समारोह की अध्यक्षता, प्रो. राजेश्वरमिश्र, डीन, भाषासंकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने की। इस अवसर पर सर्वप्रथम अभ्यागतों का माल्यार्पण से स्वागत के पश्चात् प्रो. रघुवीर सिंह ने इस कार्यशाला के आयोजन पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् मुख्य-अतिथि ने संस्कृत में भाषण करते हुए वैदिक ज्ञान एवं संस्कृत की महत्ता पर बल दिया। इसके पश्चात् अध्यक्ष प्रो. राजेश्वरमिश्र जी ने भी वेदार्थ ज्ञान में आरण्यकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

दिनाक १५-३-१८ से १८-३-१८ तक पंजाब, दिल्ली, हरियाणा आदि स्थानों से आए हुए विभिन्न विद्वान् वक्ताओं ने वेदार्थ में आरण्यकों की महत्ता पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर विभिन्न पाठशालाओं और विश्वविद्यालयों से आये छात्रों को सस्वर वेदपाठ का प्रशिक्षण भी दिया गया, जिसे छात्रों ने कार्यशाला के समापन समारोह में प्रस्तुत भी किया।

वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता-

विश्वेश्वरानन्द-विश्वबन्धु-संस्कृत-भारतभारती-अनुशीलन-संस्थान (पंजाब विश्वविद्यालय पटल) की छात्रपरिषद् द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी १९-३-१८ को वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता, संस्कृत-भाषण प्रतियोगिता, श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता और संस्कृतदर्शनप्रश्नोत्तरी-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

जिसमें विभिन्न विद्यालयों और विश्वविद्यालयों से छात्रों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. घनश्याम उनियाल थे और मुख्य-अतिथि डॉ. कन्हैया लाल पाराशर थे। कार्यक्रम के अन्त में विजेताओं को चलविजयोपहार दिये गये तथा इसी अवसर पर विभिन्न परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने वालों छात्रों को सम्मानित भी किया गया।

राष्ट्रीय विद्वत्गोष्ठी-

शनिवार, वि.सं. २०७४ (३-३-२०१८) को हरियाणा संस्कृत अकादमी, पंचकूला के सहयोग से पाणिनिमहाविद्यालय, रेवली में राष्ट्रीय-विद्वत्-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. सोमेश्वरदत्त (निदेशक, हरियाणा संस्कृत अकादमी) मुख्य अतिथि थे। इस गोष्ठी में विभिन्न विद्वानों ने **वैदिक ऋषि** विषय पर अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

वार्षिकोत्सव-

४-३-२०१८ को रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा संचालित संस्था, पाणिनि महाविद्यालय, रेवली (सोनीपत, हरियाणा) का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस उत्सव पर मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। इसी अवसर पर आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री (बम्बई) तथा आचार्य डॉ. सुद्युम्न जी (सतना म.प्र.) को सम्मानित भी किया गया। इस आयोजन में बड़ी संख्या में विद्वत्-समाज ने भाग लिया।

संयोजकः- डॉ. कृष्णदेव पाणिनि महाविद्यालय, रेवली (सोनीपत) हरियाणा।

स्मारक-पुण्य-पृष्ठ खण्ड

विश्वज्योति

पंजाब में रचित राम-साहित्य विशेषांक

के

प्रथम भाग

में

वेदादि धार्मिक ग्रन्थों से स्वाध्याय, मनन तथा जीवन में अपनाने योग्य सद्‌वचनों को संगृहीत किया गया है।

इस प्रकार के वचनों को निरन्तर पढ़ने, मनन करने एवं तदनुरूप जीवन को ढालने से पाठक अपने जीवन में शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

दानी-सज्जनों की नाम-सूची

	पृष्ठ
डॉ. रेणु , पटियाला ।	७६
Sh. Sahil Goyal, Hoshiarpur	७७
सर्वश्री बैजनाथ भण्डारी सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास, नई दिल्ली।	७८
M/s Charan Dass Malhan Charitable Trust, HOSHIARPUR	७९
Sh. Jatinder Koushik, Delhi	८०
श्री संजीव सूद, होशियारपुर।	८१
Shreyans Ind. Ltd., Ahamadgarh Sangrur	८२
डॉ. ए. के. दत्त, दिल्ली।	८३
डॉ. वसुन्धरा रिहानी, चण्डीगढ़।	८४
श्रीमती उषा भल्ला, नई दिल्ली।	८५
SMT. SNEH LATA JAIN HOSHIARPUR	८६
प्रो. वेद प्रकाश शर्मा, यू.एस.ए.।	८७
श्रीमती सन्तोष शर्मा, यू.एस.ए.।	८८
दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर।	८९

	पृष्ठ
Hans Raj Mahila Maha Vidyalaya, Jalandhar	९०
अरविन्द कुमार मेहता (आर्य) आगरा।	९१
डॉ. भागेन्द्र सिंह ठाकुर, जोगेन्द्रनगर।	९२
डॉ. बी. के. कपिला , होशियारपुर।	९३
कुलदीप राए गुप्ता, होशियारपुर।	९४
श्री जगत राम शर्मा, ज्वालामुखी (कांगड़ा)।	९५
श्री एम. पी. बीर, दिल्ली।	९६
श्री देवेन्द्र लाल कुमार, मुरादाबाद।	९७
श्री बी. एल. जेरथ, चण्डीगढ़।	९८
सर्वश्री दुर्गादेवी मेमोरियल न्यास, कोलकाता।	९९
Shri Ram Bhaj Datt, Panipat	१००
अध्यक्ष, आर्यसमाज, धर्मशाला।	१०१
श्री बी. आर. अग्निहोत्री, दिल्ली।	१०२
Shivalik Vedic Anglo Residential Gurukul, Ambala	१०३

	पृष्ठ
Sh. Narender Dev Joshi HOSHIARPUR	१०४
श्रीमती राजरानी, लुधियाना।	१०५
Shri Surrinder Mohan Soni, HOSHIARPUR	१०६
BBK DAV COLLEGE FOR WOMEN, AMRITSAR	१०७
प्रो. सुखदेव, गुजरात।	१०८
श्री विजय कुमार शर्मा, यू. के.।	१०९
श्रीमती सरोज बाला, कपूरथला।	११०
कुमारी एस. पंडित, चण्डीगढ़।	१११
श्री चन्द्रमोहन अरोड़ा, होशियारपुर।	११२
श्रीमती कृष्णा सूद, होशियारपुर।	११३
R.N. Om parkash anand Ravi parkash anand & Co. Guwahati	११४

	पृष्ठ
श्री विश्वामित्र भल्ला, चण्डीगढ़।	११५
SH. DHARM PAL KATNA HOSHIARPUR	११६
श्रीमती चञ्चल कुमारी, चण्डीगढ़।	११७
डॉ. अशोक सूद, होशियारपुर।	११८
Sh. P. C. P. Radhakrishnan PONDICHERRY	११९
श्री अरविन्द गुप्ता, धर्मशाला।	१२०
श्री राम भज मदान, नई दिल्ली।	१२१
SHILA HARI CHARITABLE TRUST, FARIDABAD	१२२
श्री ए. के. धवन, नई दिल्ली।	१२३
श्रीमती बिन्दू सूद, होशियारपुर।	१२४

स्वर्गो धनं वा धान्यं वा विद्या पुत्रः सुखानि च।
गुरुवृत्त्यानुरोधेन न किञ्चिदपि दुर्लभम्।।

वा. रामा. अयो. ३०.३६

जो व्यक्ति अपने जीवन में धन, धान्य, विद्या, पुत्र, पौत्र तथा अन्य जो कुछ भी सुखदायी वस्तु चाहता है, उसे चाहिए कि वह अपने गुरु अर्थात् अपने से बड़े माता, पिता, गुरु तथा घर में वृद्धों की सेवा करें, सच्चे हृदय से पूज्य-पुरुषों की सेवा करने से कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं।

परमादरणीय

स्व. पं. श्री नत्थूराम शास्त्री

[दयानन्द नगर हो.पुर]

एवं

स्व. पं. श्री विश्वेश्वरनाथ शर्मा वात्स्य

[बाजार वकीलां]

होशियारपुर

द्वारा समय-समय पर प्रदशित उत्तम मार्गदर्शन, आशीर्वचन तथा सद्भाव को स्मरण करते हुए इनकी पुण्यस्मृति में

प्रदत्त श्रद्धाञ्जलिः

प्रयोजिका :

डॉ. रेणु

प्रोफेसर, लोक प्रशासन विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय,
पटियाला (पंजाब)

अत्येति रजनी या तु सा न प्रतिनिवर्तते।
यात्येव यमुना पूर्णसमुद्रमुदकार्णवे।।

वा. रामा. अयो. १.५.१५

(प्रकृति का नियम है कि) जो समय निकल जाता है वह पुन: लौट कर नहीं आता। देखा गया है कि जो रात्रि व्यतीत हो गई वही रात्रि पुन: लौटकर नहीं आती। जैसे यमुना नदी का जो जल समुद्र की ओर वह जाता है वह पुन: लौटकर अपने स्थान पर नहीं आता। तात्पर्य है कि व्यक्ति को जीवन में जब भी समय मिले उसका सदुपयोग करते हुए अच्छे कार्य करने चाहिएं, गया हुआ समय पुन: लौटकर आयेगा या नहीं यह निश्चित नहीं।

With best compliments from:

Sh. Sahil Goyal

S/o. Ashok Kumar Goyal,

Pb. & Sind Bank, Rly Road,

Hoshiarpur

त्यजन्ति मित्राणि धनैर्विहीनं दाराश्च भृत्याश्च सुहृज्जनाश्च।
तं चार्थवन्तं पुनराश्रयन्ते अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः।।

चाणक्यनीति १५,५

मित्र, स्त्री, बन्धु-बान्धव, नौकर, धन से रहित मनुष्य का त्याग कर देते हैं। यदि पुनः मनुष्य के पास धनसम्पत्ति आ जाये तो वे फिर से उस के पास आ जाते हैं। इसलिए संसार में धन ही मनुष्य का बन्धु-बान्धव है

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

सर्वश्री बैजनाथ भण्डारी सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास

इ - 22, डिफैन्स कालोनी,
नई दिल्ली - 110 024

सत्यञ्चात्र प्रवादोऽयं लौकिकः प्रतिभाति मे।
पितॄन् समनुजायन्ते नरा मातरसङ्गता।।

वा. रा. अयोध्या कां. ३५.२८

लोक प्रचलित यह कथन ठीक ही प्रतीत होता है कि पुत्रों का आचरण पिता के समान तथा पुत्रियों का माता के समान हुआ करता है। तात्पर्य है कि लोक में प्रायः पुत्र पिता का तथा पुत्री माता का अनुकरण करती दिखाई देती है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

M/s Charan Dass Malhan Charitable Trust
31-R, Modal Town,
Hoshiarpur

य: समुत्पतितं क्रोधं क्षमयैव निरस्यति।
यथोरग: त्वचं जीर्णं स वै पुरुष उच्यते।।

वा. रा. सुन्दरका. ५५.६

(क्रोध महापुरुषों को भी अपने अधीन कर लेता है) जो व्यक्ति अपने हृदय में किसी के प्रति उत्पन्न होने वाले क्रोध को सहनशीलता से शान्त कर देता है, सचमुच वह महापुरुष के समान है। क्योंकि वह एक प्रकार से अपने शत्रु को वश में कर लेता है क्योंकि क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु होता है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

Sh. Jatinder Koushik

S/o. Sh. Satya Parkash

48, Gali No. 2, Sanjay Colony,

Noida, Delhi

मातपित्रोः वचनकृद् हितः पथ्यश्च यः सुतः।
स पुत्रः पुत्रवद् यश्च वर्तते पितृमातृषु।।

महा. आदिपर्व, ८५.२५

शास्त्रों के आधार पर ही नहीं, अपितु जनश्रुति एवं प्रत्यक्षरूप से यह स्पष्ट है कि संसार में कोई भी व्यक्ति अपने माता और पिता के द्वारा लालन-पालन के कष्टों का मूल्य नहीं चुका सकता। अतः जो पुत्र उनके जीवनकाल में ही अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करता है, उनकी सर्वप्रकारेण सेवा करता है, उनके कहे अनुसार चलता है तथा उनकी इच्छा के अनुरूप कार्य करता है, वास्तव में वही पुत्र कहलाने का अधिकारी होता है और वही सच्चा पुत्र होता है।

अपने पूज्य पिताश्री तथा माताश्री

स्व. श्री मनोहर लाल सूद
(25-12-1926 - 23-3-2014)

स्व. श्रीमती श्यामा सूद
(निधन 27-10-2017)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक

श्री संजीव सूद (पुत्र), श्री अनुज सूद (पुत्र)
विद्या निकेतन, जोधामल रोड, होशियारपुर।

सुव्याहृतानि धीराणां फलतः परिचिन्त्य यः।
अध्यवस्यति कार्येषु चिरं यशसि तिष्ठति।।

महा.आदि पर्व. ३९.३३

जो (समझदार व्यक्ति) धैर्यशाली पुरुषों के कहे हुए वचनों पर विचार करके कार्य करता है, वह अपने जीवन में काफी समय तक यशस्वी बना रहता है अर्थात् महापुरुषों के वचनों के परिणाम को ध्यान में रखकर किए गए कार्य कल्याणकारी होते हैं।

With Best Compliments From:

Shreyans Group

Shreyans Industries Limited

Leading Manufacturer of Writing & Printing Papers

WORKS :-

SHREYANS PAPERS
AHMEDGARH-148021DISTT. SANGRUR (Pb.)
Tel.: 01675-661300/240347-48-49 Fax : 01675-240512
E-Mail : spm@shreyansgroup.com

SHREE RISHABH PAPERS
BANAH-144522, DISTT. S.B.S. NAGAR
Tel.: 01881-661400/273627-28-29, Fax : 01881-273645
E-Mail : srp@shreyansgroup.com

MARKETING OFFICE:

5TH FLOOR, FLAT NO. 5A TO 5D, GOPALA TOWERS,
25, RAJINDRA PALACE, NEW DELHI-110 008
Tel. : 011-25732104/25721042, Fax : 011-25752271
E-Mail. : sil.delhi@shreyansgroup.com

कर्मणा मनसा वाचा यदभीक्ष्णं निषेवते।
तदेवापहरत्येनं तस्मात् कल्याणमाचरेत्।।

महा.आदि पर्व. ३९.५५

जो व्यक्ति अपने जीवन में मन, वाणी और कर्म से जिस वस्तु का निरन्तर ध्यान करता है, वह वस्तु उसको (निश्चित) अपनी ओर खींच लेती है, यह शास्त्र कहता है। अत: अपना कल्याण चाहने वालों को सर्वदा आत्म-कल्याण-प्रद बात ही सोचनी चाहिए अर्थात् अच्छी ही बात सोचनी चाहिए, बुरी नहीं।

❋

हार्दिक शुभ कामनाओं के सहित:

डॉ. ए. के. दत्त

85, दयानन्द विहार, विकास मार्ग एक्सटेन्शन,
दिल्ली–110 092

दु:खैर्न तप्येन्न सुखैः प्रहृष्येत्
समेन वर्तेत सदैव धीरः।
दिष्टं बलीय इति मन्यमानो,
न संज्वरेन्नापि हृष्येत् कथंचित्

महा.आदि पर्व.८९.९

संसार में दु:खों के आने पर दु:खी तथा सुख के आने पर सुखी नहींहोना चाहिए। अपितु धीर व्यक्ति को सुख और दु:ख को– यह भाग्य के अधीन है या दैवाधीन है परमात्मा की देन है– यह सोचकर समानभाव से ग्रहण करना चाहिए।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

प्रयोजिका :

डॉ. (श्रीमती) वसुन्धरा रिहानी

कोठी नं. 1617, सैक्टर - 44 बी,
चण्डीगढ़

न सत्यं दानमानौ वा यज्ञो वाप्याप्तदक्षिणा।
तथा बलकराः सीते यथा सेवा पितुः मता।।

वा. रा. अयो. ३०.३५

भगवान् राम सीता से कहते हैं कि- संसार में कल्याण की प्राप्ति का जितना बलशाली उपाय पिता की सेवा है उतना न सत्य है न दान है न मान है और न अत्यधिक दक्षिणा ही है जो यज्ञ में दी जाती है। अर्थात् पिता- माता की सेवा संसार में कल्याण-प्राप्ति का सर्वोपरि साधन है।

अपने पूज्य पिता

स्व. श्री प्रकाश चन्द जी

जो संस्थान के हितैषी थे

(जिनका ९४ वर्ष की आयु में १२-८-९८ को देहावसान हुआ)

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजिका

श्रीमती उषा भल्ला (पुत्री)
३३ हिमगिरि अपार्टमेण्टस विकासपुरी,
नई दिल्ली - ११००१८

दैवं पुरुषकारेण यः समर्थः प्रबाधितुम्।
न दैवेन विपन्नार्थः पुरुषः सोऽवसीदति।।

वा. रा.कि.का. २३.१७

जो व्यक्ति अपने परिश्रम से अपने बुरे समय पर विजय प्राप्त कर लेता है, जीवन में चाहे वह भाग्य के कारण विपत्ति को प्राप्त भी करले किन्तु वह कदापि उस अवस्था में भी दु:खी नहीं होता। अच्छे व्यक्ति सम्पत्ति तथा विपत्ति में समान ही रहते हैं।

स्व. श्री अरविन्द जैन जी

(निधन 10-4-2013)

की पुण्यस्मृति में

SMT. SNEH LATA JAIN

Ms. Maeru Jain (MAERU)
Sun Shine, Components Pvt. Ltd.,
17-D, Focal Point, Phagwara Road, HOSHIARPUR

देव-गन्धर्व-गो-लोकान् ब्रह्मलोकांस्तथापरान्।
प्राप्नुवन्ति महात्मानो मातृ-पितृपरायणाः।

वा. रा. अयो. ३०.३१

(तन मन धन से) माता-पिता की सेवा करने वाला पुत्र लोक में प्रशंसनीय माना जाता है (और तो और यहां तक कि) देव, गन्धर्व, स्वर्ग तथा ब्रह्मलोक तक को प्राप्त कर लेता हैं।

स्व. श्री भीष्मदेव जी महाशय

(निधन २६-१२-१९८९) को

गांव पालकवाह (ऊना) में हुआ

तथा

उनकी धर्मपत्नी

स्व. श्रीमती प्रीतम देवी

जो बहुत ही धर्म-परायणा तथा देवीस्वरूपा थीं

की

पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

प्रो. वेद प्रकाश शर्मा (पुत्र)

तथा

श्रीमती सन्तोष शर्मा (पुत्रवधु)

यू. एस. ए.।

स्वर्गो धनं वा धान्यं वा विद्या पुत्रः सुखानि च।
गुरुवृत्यनुरोधेन न किञ्चिदपि दुर्लभम्।।

वा. रामा. अयो. ३०.३६

व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने गुरुजनों की सच्चे दिल से सेवा करे क्योंकि गुरुसेवा से जीवन में उसको सुख, धन, धान्य, विद्या, पुत्र यहां तक कि स्वर्ग की प्राप्ति बड़ी सरलता से हो सकती है। गुरु से तात्पर्य माता-पिता, गुरु तथा अपने से बड़े भाई इत्यादि से है।

स्व. पं. रुलिया राम जी ठेकेदार

जो कर्म को ही ईश्वर की आराधना मानने वाले, ठेकेदारी के काम में भी ईमानदारी को न त्यागने वाले तथा सदा विपत्तिग्रस्त लोगों की सहायता करने वाले थे। उनका 80 वर्ष की आयु में 19.4.1986 को निरन्तर अपने कार्य में व्यस्त रहते हुए ही निधन हो गया तथा उनकी धर्मपत्नी धर्मस्वरूपा, पतिपरायणा एवं सद्गृहिणी

स्वर्गीया श्रीमती कौशल्या देवी जी

जिनका दुःखद निधन 5. 1. 1991 को एवं उनके सुपुत्रों

सुरिन्द्र कुमार शर्मा, रवीन्द्र कुमार शर्मा तथा किरण कुमार शर्मा
एवं उनके छोटे दामाद श्री शशी भारद्वाज

जिनका दुःखद निधन 14. 3. 1992, 30. 9. 2005, 14. 2. 2009
एवं 1. 7. 2011 को क्रमशः हुआ

की पुण्य स्मृति में

प्रयोजक वर्गः

श्रीमती सन्तोष शर्मा एवं प्रो. वेदप्रकाश शर्मा (यू. एस. ए.)
अरुण, भरत, डॉ. संजय, श्रीमती प्रेम, ईशान व अनुज, होश्यारपुर।

कृते च प्रतिकर्तव्यम् एष धर्मः सनातनः

रामायण

जो महान् पुरुष हैं, वे यह धारणा बनाकर चलते हैं कि यदि कोई उनकी किसी भी प्रकार से सहायता या उपकार करता है, उसके बदले में वे सर्वदा उसका प्रत्युपकार करने की धारणा हृदय में रखते हैं और समय आने पर उपकार करने वाले का प्रतिउपकार करके ऋण चुका देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

प्रिंसिपल

दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा महाविद्यालय

अबोहर - 152 116

(डी.ए.वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के अधीन)

(राष्ट्रीय परिषद् अध्यापक शिक्षण द्वारा स्थाई मान्यता प्राप्त)

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से सम्बद्ध

Empowering Women Since 1927

THE PREMIER MOST WOMEN INSTITUTION OF NORTH INDIA

HANS RAJ MAHILA MAHA VIDYALAYA, JALANDHAR

FIRST COLLEGE IN NORTH INDIA WITH THE STATUS OF COLLEGE OF EXCELLENCE BY UGC
RE-ACCREDITED A GRADE WITH 3.83 SCORE (HIGHEST SCORE IN INDIA BY NAAC IN 2013)
STAR SCHEME COLLEGE FLAGSHIP COLLEGE

COURSES OFFERED

POST - GRADUATE DIPLOMA COURSES: M.A.- English, Hindi, Punjabi, Pol. Science, Music Vocal, Music Instl. M. Com., M.Sc. (Mathematics), M.Sc. (Fashion Designing), M.Sc. (Botany), M.Sc. (Bioinformatics), M.Sc. (IT), M.Sc. (Comp. Sc.)

UNDERGRADUATE COURSES: B. M. M. (Multimedia), B. F. A. (Fine Arts), B. D. (Bachelor of Design), B. Sc. (Fashion Designing), B. Sc. (Biotechnology), B. Sc. (Med/ Non-Med with Bio-Informatics), B. Sc. (Med/ Non-Med with Biotech), B. Sc. (Med/Non-Med), B. Sc. (Economics), B. Sc. (Computer Science), B. Sc. (I.T.), B.C.A., B.Com. (with Hons.) B.B.A., B.A. (with Hons.), B.A.

PG DIPLOMAS: Cosmetology, Garment Construction & Fashion Dsg., Computer Application, Business Management, Cyber Law and Information Security, Counselling

VOCATIONAL SUBJECTS B.A./B.Sc.: Computer Application, Journalism & Mass Communication, Fashion Designing & Garment Construction, Cosmetology, Mass Communication & Video Production, Bioinformatics, Biotechnology

UG COURSES WITH HONS. ENGLISH, HINDI, ECONOMICS, POL. SCIENCE, PSYCHOLOGY, COMMERCE

CERTIFICATE COURSES: Bioinformatics, French Language, Communication Skills, Fashion Designing, Cosmetology, Reporting, Anchoring and News Reading, Catering, Hospitality and Event Management, Interior Decoration, Photography, Baking and Chinese (Cooking), Dancing, Descriptive Statistics using MS-Excel, Human Rights, Personality Development, Yoga and Health.

HIGHLIGHTS

- Top University Positions
- Top Positions in Sports
- Top Positions in Youth Festivals
- Placement Assistance
- Incentives to Top Players
- State of Art Infrastructure
- Smart Class Rooms
- Hi-Tech Library
- Inflibnet Facility
- Well Equipped Labs
- Sports Grounds & Latest Sports Facilities
- MOU with International Bodies
- Finishing School

LIBERAL FEE CONCESSIONS AND SCHOLARSHIPS FOR MERITORIOUS AND DESERVING STUDENTS

VIDEO CONFERENCING FACILITY

Hi-Tech Seminar Halls & Auditorium

HOSTELS WITH MODERN AMENITIES

INTERNATIONAL STANDARD SWIMMING POOL

A FLEET OF BUSES

HMV CAMPUS TV

HMV MOBILE APP

HMV RADIO

E-LEARNING APP

HERITAGE VILLAGE

WI-FI CAMPUS

B. VOCATIONAL (UGC APPROVED)
- WEB TECHNOLOGY & MULTIMEDIA
- BANKING & FINANCIAL SERVICES

COMMUNITY COLLEGE (UGC APPROVED)
- Advance Diploma in Fashion Designing
- Diploma in Journalism and Print Media

H M V
- BADMINTON ACCADEMY
- SWIMMING ACCADEMY
- DRONACHARYA ARCHERY ACCADEMY
- WRESTLING ACCADEMY

Ph. 0181-2253710, 2204198 Fax : 0181-2252436 E-mail: hmv_jal@yahoo.co.in Web: www.hrmmv.org
Download 'HMV News' Mobile app from Playstore

Justice (Retd.) Sh. N.K. Sud
Chairman, Local Committee

Prof. Dr. (Mrs.) Ajay Sareen
Principal

॥ ऋग्वेद ॥ ओ३म् ॥ यजुर्वेद ॥

"जीवन में संस्कारों का महत्त्व"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'संस्कार विधि' में दिए सोलह-संस्कारों का यहां सूक्ष्म विवरण दिया जा रहा है। इन्हीं संस्कारों के आधार से मनुष्य को मानव बनाया जा सकता है। हमारे जीवन में इन संस्कारों का बहुत महत्त्व है।

१.	गर्भाधान संस्कार -	गृहाश्रमी होने पर संतानप्राप्ति के लिए वीर्य-निषेचन द्वारा गर्भ-स्थापना करना।
२.	पुंसवन संस्कार-	गर्भ स्थिति-ज्ञान हुए समय से दूसरे वा तीसरे महीने में।
३.	सीमन्तोन्नयन संस्कार -	गर्भ-मास से चौथे, छठे व आठवें महीने में शुक्ल पक्ष में।
४.	जातकर्म संस्कार -	शिशु के जन्म समय में।
५.	नामकरण संस्कार -	जन्म से ११वें, १०१ वें दिन व दूसरे वर्ष में जिस दिन जन्म हुआ हो।
६.	निष्क्रमण संस्कार -	जन्म से तीसरे महीने के शुक्ल पक्ष या चौथे महीने में जन्म तिथि को।
७.	अन्नप्राशन संस्कार -	छठे महीने में।
८.	चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार-	प्रथम व तीसरे वर्ष में।
९.	कर्णवेध संस्कार -	तीसरे व पाँचवें वर्ष में।
१०.	उपनयन (जनेऊ) संस्कार-	पाँचवें वर्ष से आगे सुविधानुसार।
११.	वेदारम्भ संस्कार -	उपनयन वाले दिन, दूसरे दिन या एक वर्ष में सुविधानुसार।
१२.	समावर्तन संस्कार -	वेदादि, उत्तम आवश्यक शिक्षा पूर्ण करके गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़ते समय।
१३.	विवाह संस्कार -	पुरुष की आयु २५ वर्ष तथा स्त्री की आयु १८ वर्ष कम से कम होनी चाहिए।
१४.	वानप्रस्थ संस्कार -	संतानों के स्वावलम्बी एवं संतानों के संतान होने पर।
१५.	संन्यास संस्कार -	पूर्ण वैराग्य होने पर।
१६.	अन्त्येष्टि संस्कार -	प्राणों के निकल जाने पर शरीर का दाह कर्म होना।

सौजन्य से :- **अरविन्द कुमार मेहता (आर्य)**
आर्य भवन ट्रस्ट,
60/4, विभवनगर, आगरा-282001 (उ. प्र.), फोन : 9837362000

॥ सामवेद ॥ ॥ अथर्ववेद ॥

धन्याः खलु महात्मानो मुनयः सत्यसम्मताः।
जितात्मनो महाभागाः येषां न स्वः प्रियाप्रिये।

वा.रा.सुन्दरकाण्ड २६.४७

अपने जीवन में सत्यमार्ग पर चलने वाले, सभी को समान समझने वाले जितेन्द्रिय महामुनि संसार में धन्य हैं अर्थात् अपने-पराये का भाव छोड़कर सबसे प्रेम करने वाले तपस्वी जितेन्द्रिय महात्मा संसार में पूज्य तथा धन्य हैं।

❋

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

डॉ. भागेन्द्र सिंह ठाकुर

निकट आई. टी. आई.,
जोगेन्द्र नगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)-१७६ १२०

सत्यमेव जयते नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामाः,
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्।।

मुण्डकोपनिषद्, ३,१,६

संसार में सत्य की विजय होती है न कि असत्य की। मुक्ति का मार्ग सत्यमय ही है। परम-ब्रह्म की प्राप्ति की कामना वाले ऋषि तथा मुनिजन उसी सत्य के मार्ग पर चलते हुए, सत्य के अधिष्ठानस्वरूप उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त करते हैं।

स्व. श्री रघुवरदयाल जी कपिला

तथा

स्व. श्री रामशरणदास जी

[निधनः 22-12-1988]

अपनी पूज्या माता

स्व. श्रीमती रामप्यारी जी

[निधनः 23-5-2010]

की

पावनस्मृति

में

उनके बच्चों की ओर से

प्रयोजक :

डॉ. बी. के. कपिला [पुत्र] एवं **श्रीमती राकेश कपिला** [पुत्रवधू]

सुतैहरी रोड़, होश्यारपुर [पंजाब]

अङ्गप्रत्यङ्गजः पुत्रो हृदयाच्चाभिजायते।
तस्मात् प्रियतरो मातुः प्रिया एव तु बान्धवाः।

वा. रामा. अयो. ७४.१४

माता के शरीर के प्रत्येक अंग तथा हृदय में विद्यमान तत्त्वों से उत्पन्न होने से अन्य व्यक्तियों तथा सम्बन्धियों से पुत्र अधिक प्रिय हुआ करता है। पुत्र से तात्पर्य सन्तत्तिमात्र से है।

❋

स्व. श्रीमती शीला देवी

[निधन ७-६-२०१६]

जो धार्मिक प्रकृति की थीं तथा सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थीं।

की

पुण्यस्मृति

में

समर्पित

प्रयोजकवर्ग :

कुलदीप राए गुप्ता (पति)

श्रीमती मीनाक्षी मैनन (पुत्री), श्रीमती इन्दु गुप्ता (पुत्री)

३६८/८ प्रहलाद नगर, होशियारपुर।

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्

वा.रा.अयो. २१.१

संसार में यद्यपि सभी वस्तुएं मनुष्य-जीवन के उपयोगी हैं किन्तु धर्म उन सभी में सर्वश्रेष्ठ है। सब कुछ धर्म में ही प्रतिष्ठित है। अतः सर्वप्रकारेण सुख-शान्ति तथा कल्याण चाहने वाला जीवन में धर्म के कार्य करता रहे।

❋

स्वः गुरुवर पद्मभूषण आचार्य डॉ. विश्वबन्धु जी

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

श्री जगत राम शर्मा

व्यवस्थापक, गीता भवन पब्लिक ट्रस्ट,

ज्वालामुखी,

जिला कांगड़ा (हि. प्र.)

सहैव मृत्युर्व्रजति सह मृत्युर्निषीदति।
गत्वा सुदीर्घमध्वानं सह मृत्युर्निवर्तते।।

वा. रा. अयोध्या. १०५.२२

मृत्यु के विषय में यह परम सत्य है कि वह सर्वदा प्राणी के साथ रहती है साथ ही उठती-बैठती है। जीवनभर उसके साथ रहकर उसके साथ ही वापिस भी चली जाती है। अत: व्यक्ति यही सोचकर अच्छे कार्य करता रहे जिससे अग्रिम जीवन अच्छा प्राप्त हो।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री गंगाराम जी बीर

(जिनका निधन 20-10-1977 को हुआ)

तथा

पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती सुशीला देवी जी बीर

(जिनका निधन 14-5-1989 को हुआ)

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

श्री एम. पी. बीर (पुत्र)

18-सी, विजय नगर, दिल्ली-110 009

प्रियान्न संभवेद् दुःखमप्रियादधिकं भवेत्।
ताभ्यां हि ते वियुज्यन्ते नमस्तेषां महात्मनाम्।।

रामा. सुन्दरकाण्ड २६.४८

जिन सज्जनों, महापुरुषों को अपने प्रियजनों के विछुड़ जाने पर और अप्रिय वस्तु के प्राप्त होने पर भी कोई दुःख नहीं होता, ऐसे प्रिय और अप्रिय के प्रति उदासीन महात्मा लोग हमेशा पूजनीय होते हैं।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री हरवंस लाल कुमार जी

की
पुण्यस्मृति
में
सादर समर्पित

प्रयोजक:

श्री देवेन्द्र लाल कुमार
अतर दीवान ट्रस्ट, कुमार निवास,
कम्पनी बाग,
मुरादाबाद-२४४००१

तस्मात् सान्त्वं सदा वाच्यं न वाच्यं परुषं क्वचित्।
पूज्यान् सम्पूजयेत् दद्यात् न च याचेत् कदाचन।

महा.भा. आदि पर्व. ८७.१३

संसार में दया, मैत्री, दान और मधुर व्यवहार जैसा वशीकरण अन्य नहीं है। अतः मनुष्य अपने जीवन में चाहे शत्रु हो या मित्र उसके साथ कठोर भाषा का प्रयोग न करे। हमेशा दूसरों के प्रति सान्त्वनामय वचन ही बोले, पूज्य पुरुषों की पूजा करे तथा जीवन में अपने हाथों से भरसक दान दे पर किसी से स्वयं कुछ न मांगे। इस प्रकार का व्यक्ति इहलोक तथा परलोक में सुखी रहता है।

❁

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

श्री बी. एल. जेरथ

द्वारा श्री एम. एल. खोसला एवं श्रीमती सरला खोसला

5350/3 मॉडर्न हाऊसिंग कम्पलैक्स,
मनीमाजरा, चण्डीगढ़।

नाना भावा बहवो जीवलोके
दैवाधीना नष्टचेष्टाधिकाराः।
तत् तत् प्राप्य विहन्येत धीरः
दिष्टं बलीय इति मत्वाऽऽत्मबुद्ध्या।।

महा.आदि पर्व.८९,७

संसार में जो ज्ञानी एवं धीर पुरुष हैं उनको यह समझ आ जाना चाहिए कि जीवन में जो भी सुख-दुःख, हानि लाभ, यश अपयश आदि नाना प्रकार के भाव आते हैं उनको मन में यह सोचते हुए सहन करता चले कि भाग्य प्रबल है और ये मेरे भाग्य के कारण ही आए हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

सर्वश्री दुर्गादेवी मेमोरियल न्यास

9/1, आर. एन. मुखर्जी रोड,

कोलकाता

नहीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।
दया, मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक्।
महा.आदि पर्व. ८७.१२

तीनों लोकों में किसी पर दया करना, प्राणियों के साथ मित्रता का बर्ताव करना, दु:खियों को दान देना तथा सभी के साथ बड़ी मधुरता से वार्तालाप करना इसके समान कोई वशीकरण नहीं। अर्थात् जो इस प्रकार का व्यवहार प्राणियों के साथ करता है, मनुष्य, पशु-पक्षी सभी उसके वश में हो जाते हैं।

With best compliments from:

Shri Ram Bhaj Datt

Vogue Fabrics, Post Box 23,

G. T. Road, Panipat

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते।

महा.आदि पर्व. ८०.३०

जिसके हाथ-पैर आदि कर्मेन्द्रियां अपने वश में हों तथा जो तपस्वी तथा विद्वान् और यशस्वी हो उसको तीर्थ-दर्शनों का स्वत: ही फल प्राप्त हो जाता है।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

अध्यक्ष, आर्यसमाज

सिविल लाईन्ज़,

धर्मशाला - 176 215

येन खट्वां समारूढः परितप्येत कर्मणा।
आदावेव न तत् कुर्यात् अध्रुवे जीविते सति।

महा.आदि पर्व. ३९.२९

(मृत्यु अवश्यंभावी है यह सोचकर) मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन में ऐसा कोई बुरा काम न करे जिसको करने से बुढापे में उसको असमर्थ होने के पश्चात् खाट पर पड़े-पड़े सोचना पड़े कि मैंने यह बुरा काम किया था। अत: अच्छे व्यक्ति ऐसा कोई कार्य नहीं करते जिसके विषय में बाद में उनको पश्चात्ताप हो, वे सदा अच्छे ही कार्य करते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

श्री बी. आर. अग्निहोत्री

६६, ईस्ट एण्ड एन्क्लेव,
दिल्ली-११००९२।

ओ३म्
Your child's future with indian culture....

Shivalik Vedic Anglo Residential GURUKUL

— C.B.S.E. Pattern Only for Boys —

Admission Open
from Class V to IX

"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन होगा।

आदरणीय बन्धु!

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। बिना यथार्थ ज्ञान के किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति केवल कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुंमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास सम्भव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थान पर सम्पूर्ण विकास करने का विचार यदि अपने मन में रखते हैं तो यह मात्र गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही हो सकती है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुनियोजित कर छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक वैदिक एंग्लो आवासीय गुरुकुल (Shivalik Vedic Anglo Residential Gurukul) "S.V.A.R.G". का संचालन प्रारम्भ किया है। जिसमें :(क). शिक्षा (आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ-साथ वैदिक धर्म के आलोक में नैतिक शिक्षा द्वारा जीवन-निर्माण।) (ख). सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक) (ग) संस्कार (शरीर व आत्मा को श्रेष्ठ गुण, कर्म एवं स्वभाव से सुशोभित करना।) (घ). सेवा (गुरुकुल में प्राप्त उत्तम गुणों के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति के लिए अपना सात्विक योगदान सेवा के रूप में करना।)

माता-पिता परिवार में जिस प्रकार अपने शिशु का लालन-पालन एवं पोषण करते हैं वैसे ही लालित्यपूर्ण वातावरण में आपके बालक के जीवन का निर्माण विद्यालय में अपने विषय के श्रेष्ठतम आचार्यों एवं छात्रावास (आश्रम) में मातृ एवं पितृ भाव के साथ संरक्षकों द्वारा किया जायेगा। वर्तमान व्यस्ततम जीवन में माता-पिता एवं अभिभावकों के पास समय की अनुपलब्धता होने से परिवारों में बालकों के सम्पूर्ण शैक्षिक एवं चारित्रिक जीवन निर्माण कहीं पीछे छूट गया है। हम आपके उन स्वप्नों को साकार करने में आपका सहयोग करने के लिए आपके साथ कदम से कदम मिलाकर कार्य करने के लिए उत्सुक हैं। यह सुनहरा अवसर आपके लिए नवप्रभात लेकर आया है। इसका लाभ उठाएं।

Features

- Digital Smart Classes • Sms Alert Service
- Lush Green Playground • Eco Friendly Environment
- Activity Cum Learning Room • Experienced & Dedicated Staff
- Special Focus on Moral Values • Special Focus on interaction in English
- Horse Riding & Gun Shooting • Digital & Well equipped Library
- Hi-Tech Computer Labs • Music Room
- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Pure Vegetarian & Authentic Mess with Spotless utensils

Co-curricular Acitvities

- Debate • Quiz • Art & Craft
- Painting • Educational Trips
- Meditation, Yoga & Hawan
- Festival Celebrations • Language Lab Activities
- Book Reading Sessions • House Competitions
- Creative Writing • Music & Dance
- Collage Making • MUN Clubs

Vill Aliyaspur, P.O. Sarawan -133206, Dosarka-Sadhaura Road, Ambala (Haryana),
E-mail: shivalikgurukul.ambala@gmail.com, Website : www.shivalikgurukul.com
Admission Helpline : 8901054781, 9671228002, 8813061212

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्। अधनस्य कुतो मित्रममित्रस्य कुतः सुखम्।

सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

रामायण

संसार में किसी के मन को अच्छी लगने वाली बातों को कहने वाले तथा किसी के द्वारा कही हुई अच्छी बातों को सुनने वाले व्यक्ति बहुत मिल सकते हैं; पर किसी के द्वारा हितकर होते हुए भी कटु सत्य बात को कहने तथा सुनने वाले बहुत ही कम मिलते हैं। अर्थात् सभी अपने विषय में अच्छी बात ही सुनना चाहते हैं। कभी भी अपनी आलोचना सुनना पसंद नहीं करते।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

Sh. Narender Dev Joshi
B/4, 239, Tahli Mohalla,
HOSHIARPUR

आर्तो वा यदि वा दृप्तः परेषां शरणं गतः।
अरिः प्राणान् परित्यज्य रक्षितव्यः कृतात्मना।।

वा. रा. युद्ध कां. १८.२८

यदि कोई शत्रु भी हो और वह दुःखी हो अथवा घमण्डी भी हो किन्तु विपत्ति के कारण उसका आश्रय अर्थात् सहायता चाहता हो तो, अच्छे व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने प्राणों पर संकट आने पर भी उसकी सहायता करे, यही वास्तविक धर्म है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

श्रीमती राजरानी

मकान नं. ६४२९, गली नं. ७,
हरगोबिन्द नगर (नज़दीक नीला झंडा),
लुधियाना।

न वै श्रुतिमविज्ञाय वृद्धाननुपसेव्य वा।
धर्मार्थौ वेदितुं शक्यौ बृहस्पतिसमैरपि।।

महा.आदि पर्व. ३९.३९

जीवन में कल्याण चाहने वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे शास्त्र का अध्ययन तथा वृद्धजनों की सेवा जीवनभर करते रहें, जो ऐसा नहीं करते वे न तो धर्म के फल को प्राप्त कर सकते हैं और न ही अर्थ को प्राप्त कर सकते हैं।

With best compliments from :

Shri Surrinder Mohan Soni

Soni Cottage, St. No. 8, Near Saint Farid School,
P. O. Sadhu Ashram,
Hoshiarpur

BBK DAV COLLEGE FOR WOMEN
AMRITSAR
A Multi-Faculty Postgraduate College | Re-accredited with 'A' Grade by NAAC
STAR COLLEGE status conferred by Dept. of Bio Technology, Govt. of India
College with Potential for Excellence- Status conferred by UGC, New Delhi
We give the foundation to your dreams
LIBERAL FREESHIPS & SCHOLARSHIPS TO TOPPERS & DESERVING STUDENTS IN THE FIELDS OF ACADEMICS, CULTURAL ACTIVITIES & SPORTS
•BEST MERIT POSITIONS IN GNDU RESULTS (2015-16).
•SHAHEED-E-AZAM BHAGAT SINGH CHAMPIONSHIP TROPHY [MEN & WOMEN].
•GENERAL SPORTS CHAMPIONSHIP TROPHY IN WOMEN SECTION.
•REPLICA OF MAKA TROPHY BY GNDU FOR BEING THE MOST CONTRIBUTING COLLEGE IN UNIVERSITY.
•OVERALL CHAMPIONSHIP IN ZONAL YOUTH FESTIVAL
UNDER GRADUATE COURSES
•BA •B.Sc Economics •B.Sc Medical •B.Sc Non-Medical •B.Sc Biotechnology •BBA •BCA •B. Com. (Pass & Hons.) •B.Sc IT •B.Sc Computer Science •BA. Journalism & Mass Communication •BA. in English •Bachelors of Design(Multimedia, Textile, Interior and Fashion) •Bachelors of Fine Arts •Diploma in Cosmetology
COURSES OFFERED
NEW UGC SPONSORED COURSES
•B.Voc in Theatre and StageCraft •B.Voc in Entertainment Technology •B.Voc in Fashion Technology.
POSTGRADUATE & DIPLOMA COURSES
•MA Journalism & Mass Communication •MA English •M.Design in Multimedia •M.Sc Computer Science •M.Com •M.Sc Fashion Designing & Merchandising •MA Fine Arts •Masters in Tourism & Travel Management •MA Punjabi •M. Sc in Internet Studies •PGDCA •PG. Diploma in Garment Construction & Fashion Designing •PG. Diploma in Financial Services (Banking & Insurance) & Number of Add on Courses
EXCELLENT INFRASTRUCTURE & A.C. HOSTEL FACILITY AVAILABLE
Principal Dr. Pushpinder Walia
Telephones: 0183-2221757, 5095263, 9779779720 Fax 0183-2229937
Email: bbkdavcw@gmail.com, info@bbkdav.org Website: www.bbkdav.org

नहि धर्माभिरक्तानां लोके किञ्च दुर्लभम्। रामा
साधु धर्मे व्यवस्थानं क्रियतां यदि शक्यते।। रामा.

इस संसार में धर्मपूर्वक अपना कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। अत: नीति कहती है कि यदि संभव हो तो धर्म के मार्ग पर ही चलते हुए व्यक्ति को अपनी दिनचर्या करनी चाहिए।

❋

पूज्य पिता जी

स्व. श्री हरिचन्द जी लाला

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती मायावन्ती जी

तथा पूज्य

स्व. स्वामी कृष्णनन्दा जी

की

पुण्यस्मृति में

सादर समर्पित

प्रो. सुखदेव व परिवार

120, ISCON Mega City
Bhavanagar (Gujrat)

की ओर से

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह।।

अथर्ववेद. ३.२४.५

पुरातन भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन कराता हुआ ऋषि मानव को निर्देश देता है कि हे मनुष्य! तू सौ हाथ वाला होकर धन का संग्रह कर। फिर उस धन को हजारों हाथों से जरुरतमन्दों को बांट दो। इस प्रकार तू सत्कर्म करता हुआ आगे किये जाने वाले कार्यों का इसी प्रकार विस्तार करते रहो।

स्वर्गीय श्री केवल कृष्ण शर्मा (इंग्लैण्ड)

(4-11-1930 - 6-12-2016)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक वर्ग:

श्री विजय कुमार शर्मा (दामाद) श्रीमती इन्दुशर्मा (पुत्री)
श्री अश्विन शर्मा (पुत्र) श्री राजेश शर्मा (पुत्र) डॉ० अजय शर्मा (पुत्र)

29, PAXTON AVENUE, SLOUGH BERKS, SLI 25X U.K.

आपदः सम्पदः काले दैवादेवेति निश्चयी।
तृप्तः स्वस्थेन्द्रियः नित्यं न वाञ्छति न शोचति।।

संसार में रहते हुए सम्पत्ति, विपत्ति, उन्नति, अवनति यह सब कुछ दैवयोग से प्राप्त होता है तथा उसी प्रकार नष्ट भी हो जाता है। अतः जितेन्द्रिय, नाना प्रकार की इच्छाओं से रहित, आत्मचिन्तन करने वाला व्यक्ति इन बातों की न इच्छा ही करता है और न कभी उनके विषय में सोचता है।

❊

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती कौशल्या वर्मा

(निधन 9-12-1999)

एवं

अनुज भ्राता

स्व. श्री सुधीर कुमार

(निधन 15-7-2004)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजिका

श्रीमती सरोज बाला

(सेवानिवृत्त प्रिंसिपल)

अमर आवास 12, प्रोफेसर कालोनी, कपूरथला।

मनसा कर्मणा वाचा चक्षुषा च समाचरेत्।
श्रेयो लोकस्य चरतो न द्वेष्टि न च लिप्यते।।

वा.रा.उ.का. २.२४

संसार में रहते हुए भद्रपुरुषों को चाहिए कि वे मन, कर्म, वाणी तथा दृष्टि से जितना भी हो सके जीव- मात्र की भलाई करने का प्रयत्न करे तथा न किसी से द्वेष करे और न ही किसी के प्रति मोह करे। ऐसा करने पर व्यक्ति सर्वदा सुखी रहता हुआ अन्त में अच्छी गति को प्राप्त होता है।

प्रिय सखी

स्व. कुमारी प्रोमिला लाम्बा

(निधन 24-6-2010)

की

मधुर स्मृति

में

सप्रेम समर्पित

प्रयोजिका :

कुमारी एस. पंडित

5153/1, माडर्न हाऊसिंग कम्पलैक्स,

मनी माजरा, चण्डीगढ़।

भूमिः कीर्तिः यशो लक्ष्मीः पुरुषं प्रार्थयन्ति हि।
सत्यं समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत् ततः।।

वा.रा. अयो.१०९.२२

संसार में रहते हुए भद्रपुरुष का कर्तव्य है कि वह सत्यमार्ग पर चलने का ही प्रयत्न करे क्योंकि मनुष्य के जीवन में उपयोगी जमीन, धन, मान-सम्मान एवम् अन्य जो भी मनुष्य के हितकर वस्तुएं हैं, वे सभी सत्यमार्ग पर चलने से प्राप्त होती हैं।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री सुन्दरश्याम जी

(चण्डीगढ़ निवासी)

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक

श्री चन्द्रमोहन अरोड़ा

3-एल, माडल टाऊन, होशियारपुर।

दक्षिणावतामिदिमानि चित्रा, दक्षिणावतां दिवि सूर्यासः।
दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते, दक्षिणावन्तः प्रतिरन्त आयुः।।

ऋग्वेद. १.१२५.६

दान की प्रंशसा करते हुए ऋषि कहता है कि जो दान देता है उसे और अधिक ऐश्वर्य प्राप्त होता है। दान देने से मृत्यु के बाद सूर्यलोक प्राप्त होता है। दान देने वाला अमरत्व प्राप्त कर लेता है अर्थात् मरकर भी वह लोगों के मन में जीवित रहता है। दान देने से मनुष्य दीर्घायु होता है।

संस्कृतज्ञ और संस्कृति के परमोपासक

स्व. ला. विपिनचन्द्र पाल सूद

(जन्म 23-5-1910, निधन 12-4-1977)

पत्नी

स्व. श्रीमती रत्नदेवी सूद

(निधन : 12-8-1998)

सुपुत्र

स्व. श्री कैलाशचन्द सूद

(निधन : 26-2-1993)

सुपुत्र

स्व. श्री राजेन्द्रप्रसाद सूद

(निधन : 10-9-2012)

सुपुत्र

स्व. श्री पवन कुमार सूद

(निधन : 2-7-2017)

तथा (पौत्र)

स्व. श्री सञ्जीव सूद

(श्री कैलाशचन्द सूद के सुपुत्र)

(जिनका दु:खद निधन दि. 20-1-1987 को फिलपाईन में हुआ)

की पुण्यस्मृति में

प्रयोजकवर्ग :

श्रीमती कृष्णा सूद, वीरेन्द्र कुमार सूद, एवं मयंक सूद

खानपुरी गेट, होश्यारपुर, दूरभाष (दुकान) 222610, (घर) 221365, 221404

न देवा यष्टिमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संयोजयन्ति तम्।।

महाभारत

मनुष्य पर देवताओं की प्रसन्नता प्राप्ति की ओर संकेत करते हुए महाभारत में कहा गया है कि देवता लोग हाथ में लाठी लेकर मनुष्य की रक्षा नहीं करते, अपितु देवता लोग जिस मनुष्य पर प्रसन्न होते हैं और उसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे वे सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। जिससे वह श्रेष्ठ कार्य करे और परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करे।

"AMBITION WITHOUT KNOWLEDGE IS
LIKE A BOAT ON A DRY LAND"

R.N. OM PARKASH ANAND
RAVI PARKASH ANAND & CO.

'Anand Bhawan' G.S. Road, Paltan Bazar, Guwahati-781 008
Tel.: 0361-2541945/46 Fax : 0361-2739696
E-mail : rpahawkins@gmail.com

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति।।

गीता. २.७१

संसार में रहता हुआ भी जो मनुष्य सब कामनाओं, इच्छाओं से रहित, किसी तरह के अभिमान से रहित, किसी वस्तु की अभिलाषा न करता हुआ, जीवन व्यतीत करता है। वह मनुष्य सांसारिक होता हुआ भी शान्ति को प्राप्त करता है। अर्थात् सुखी रहता है।

पूज्य पिताश्री

स्व. श्री देवीदयाल जी भल्ला

पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती रामप्यारी जी भल्ला

तथा

प्रिय पत्नी **स्व. श्रीमती राज कुमारी जी भल्ला**

की **पुण्यस्मृति में**

श्री विश्वामित्र भल्ला, मोबाईल : 98721-90179

सरिता, शोभना, रेनू, मोनिका और ऋतु

चण्डीगढ़ की ओर से

न कस्य पुरुषो बन्धुः किमाप्यं कस्य केनचित्।
एको हि जायते जन्तुः एक एव विनश्यति।।
वा.रा. अयो. १०८.३

संसार में किसी का न कोई बन्धु है, और न किसी के साथ किसी का विशेष सम्बन्ध है (सम्बन्ध तो एकमात्र व्यवहार मात्र है)। वास्तव में देखा तो यही जाता है कि संसार में प्राणी अकेला ही आता है और अकेला ही चला जाता है। वास्तविकता तो यह है कि जीव-आत्मा जिस शरीर को लेकर संसार में आता है, जाते समय उसको भी छोड़ देता है।

IN SWEET MEMORY OF

LATE SMT. KAILASH DEVI KATNA

[Who died on 18th March, 1999]

on her **19TH DEATH ANNIVERSARY**

[Which falls on 18 March, 2017]

Inserted by/ Homage Paid by

SH. DHARM PAL KATNA [HUSBAND]

[Retd. Secretary, Red Cross, Hoshiarpur]

And

CHILDREN : ASHOK, NEELAM; SAGAR-PINKI & SURINDER-KIRAN

498/1, PRAHLAD NAGAR, HOSHIARPUR- 146 001

योो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।
गीता. १२.१७

अपने जीवन में जो मनुष्य प्रिय वस्तु को प्राप्त कर खुश नहीं होता, किसी से द्वेष नहीं करता न किसी के लिए शोक करता है, न किसी वस्तु की कामना करता है तथा शुभ और अशुभ कर्मों के फल का त्याग करता है। ऐसा परमात्मा की भक्तियुक्त व्यक्ति ही परमात्मा को प्रिय होता है।

अपने पूज्य पति

स्व. डा. हरिवंश शर्मा जी

के जन्मदिन पर

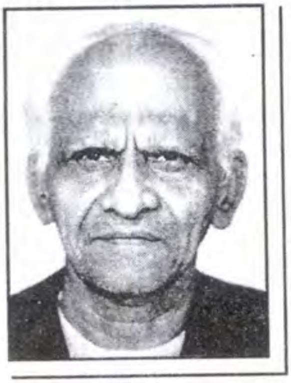

सादर समर्पित

प्रयोजिका :

श्रीमती चञ्चल कुमारी

डॉ. हरिवंश चञ्चल शर्मा धर्मार्थन्यास

1927, सैक्टर 22-बी, चण्डीगढ़

दैवः पुरुषकारेण यः समर्थः प्रतिबाधितुम्।
न दैवेन विपन्-अर्थः पुरुषः सोऽवसीदति।।

वा.रा. अयो. २३.१०

यह ठीक है कि व्यक्ति का भाग्य ही उसके जीवन के साथ चलता है किन्तु जो व्यक्ति पुरुषार्थ करता है वह अपने पुरुषार्थ से भाग्य के द्वारा आने वाली बाधाओं को दूर करता हुआ आगे बढता है, मार्ग में आने वाली बाधाओं से वह दु:खी नहीं होता, और सफलता प्राप्त कर लेता है।

विश्वेश्वरानन्द संस्थान के परम भक्त व सहायक

स्व. डा. पृथ्वीनाथ जी सूद

(जन्म 28-10-1914; निधन 02-02-1976)

एवं

स्व. श्रीमती योजनबाला सूद

(जन्म 25. 10. 1927, निधन 7. 6. 2005)

की

पुण्यस्मृति

में

उनके परिवार

की

ओर से

प्रयोजकवर्ग :

डॉ. अशोक सूद, श्रीमती रजनी सूद, अक्षय (पुत्र)

होशियारपुर।

धर्मे रताः सत्यपुरुषैः समेताः
तेजस्विनः दानगुणप्रधानाः।
अहिंसका वीतमलाश्च लोके
भवन्ति पूज्या मुनयः प्रधानाः।।

वा.रा.अयो.. १०९.३६

संसार में रहते हुए भी जो अपने धर्म पर स्थिर रहते हैं अथवा धार्मिक कार्य करते हैं, सज्जन पुरुषों के संगति करते हैं यथाशक्ति सत्पात्रों को दान देते हैं। मन वाणी तथा आचरण से भी जो किसी प्रकार की हिंसा नहीं करते एवम् जिनका चरित्र सर्वदा शुद्ध है। ऐसे महापुरुषों-सन्तों तथा मुनियों का सर्वदा सभी द्वारा आदर किया जाता है।

भगवान् रमन तिरुवन्नमलाई

तमिलनाडू

की

पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक -

Sh. P. C. P. Radhakrishnan

Prop., Progress Transport, 120, Rue Lal Bahadur,
Pondicherry – 605 001

धर्माद् अर्थः प्रभवति धर्मात् प्रभवते सुखम्।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत्।।

वा.रा. अरण्य. ९.३०

मनुष्यमात्र को यह अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि संसार में धर्ममय कार्य करते हुए ही वह स्थिरधन की प्राप्ति तथा उससे प्राप्त होनेवाले सुखं एवम् अन्य सभी कल्याणप्रद वस्तुओं की प्राप्ति कर सकता है और धर्मपूर्वक अर्जित सम्पत्ति से ही वह सुखी रह सकता है। क्योंकि संसार का वास्तविक स्वरूप धर्ममय ही है। अतः धार्मिक वृत्तिवाला व्यक्ति ही सुखी एवम् शान्त रहता है।

❋

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती हरकुमारी जी

तथा

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री जी. डी. गुप्ता

की

पुण्यस्मृति में समर्पित

प्रयोजक :

श्री अरविन्द गुप्ता

263, सिविल लाईन्ज़,

धर्मशाला [हि. प्र.] - 176 215

सत्यं च धर्मं च पराक्रमञ्च भूतानुकम्पां प्रियवादितां च।
द्विजाति-देवातिथि-पूजनं च पन्थानमाहुः त्रिदिवस्य सन्तः।।

वा.रा. अयो. १०९, २१

ऋषि-मुनियों ने मनुष्यमात्र के लिए, सत्य का पालन, धर्म का आचरण करना एवं जीवन में यथाशक्ति अच्छे कार्य करना, प्राणीमात्र पर दया करना, ब्राह्मण देवता तथा घर में आए हुए किसी भी अतिथि का सत्कार करना, यह सब स्वर्ग गमन की सीढ़ियां कहीं हैं। अर्थात् परलोक सुधारने के लिए प्रत्येक गृहस्थी को ये कार्य अवश्य करने चाहिएं।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री जिवन्दाराम मदान

तथा

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती सतवन्ती मदान

की

पावनस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकवर्ग :

श्री राम भज मदान

तथा परिवार

126, राजा गार्डन, नई दिल्ली।

चतुर्विधा भजन्ते मांजनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।।

गीता, ७.१६

पूजा करते हैं मेरी चार ही तरह के आदमी।
तालिबे हक, वाकफ़े हक, गमज़दा और लालची।।

HARI RAM KAKAR

SUBHASH CHANDRA KAKAR

SURESH CHANDRA KAKAR

ASHIMA KAKAR

With best compliments from :

SHILA HARI CHARITABLE TRUST

TRUSTEES : Hari Ram Kakar, Subhash Chandra Kakar
Suresh Chandra Kakar, Ashima Kakar

House No. 490,

Sector 14,

Faridabad–121 007 (Haryana)

दत्तम् इष्टम् हुतं चैव तप्तानि च तपांसि च।
वेदाः सत्य-प्रतिष्ठानाः तस्मात् सत्यपरो भव।।

वा.रा. अयो. १०९.१४

व्यक्ति जीवन में जो कुछ भी किसी को देता है, जो यज्ञ करता है, जो तप करता है, यहां तक कि ब्रह्मा जी के मुख से निसृत वेद सभी कुछ सत्य पर आधारित हैं। अतः मानव को अपना जीवन सफल बनाने के लिए सत्य का पालन करना चाहिए।

विश्वेश्वरानन्द संस्थान के पुराने सदस्य तथा परम हितैषी

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री भेरीराम जी धवन

तथा

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती चानण देवी जी धवन

की

पावन स्मृति में

श्री ए. के. धवन

55 ए जोरबाग, नई दिल्ली

तथा

विनीत बच्चों एवं हितचिन्तकों

की ओर से

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यः
त्यागाच्च नान्योऽस्ति सखाऽत्र लोके।
आभूषणं शीलसमं न चान्यत्
सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नाऽन्यत्।।

हितोपरेश

संसार में अनेक प्रकार की निधियां हैं पर दान के समान सम्पत्ति और कोई नहीं है। संसार में अनेक मित्र मिल सकते हैं किन्तु त्याग के समान दूसरा कोई मित्र नहीं हो सकता। मनुष्य शरीर को सजाने के लिए अनेक आभूषणों के होने पर भी शील के समान दूसरा कोई आभूषण नहीं तथा सन्तोष के समान संसार में दूसरा धन नहीं।

❋

अपने पूज्य पिता जी

श्री मनमोहन सूद

एवं

पूज्या माता जी

श्रीमती कृष्णा सूद

की

पुण्यस्मृति

में

समर्पित

प्रयोजिका :

श्रीमती बिन्दू सूद (पुत्री)

मकान नं. १०३४, बहादुरपुर गेट, होशियारपुर।

(संस्थान) सत्संग मन्दिर

वी. वी. आर. आई. सोसाईटी, होश्यारपुर (पंजाब) की ओर से प्रकाशक व मुद्रक प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल द्वारा वी. वी. आर. इन्स्टीच्यूट प्रैस, पो. आ. साधु-आश्रम, होश्यारपुर से छपवा कर, वी. वी. आर. इन्स्टीच्यूट, पो. आ. साधु-आश्रम, होश्यारपुर-१४६ ०२१ (पंजाब) से २८-०४-२०१८ को प्रकाशित।